कृष्ण काव्य पीयूष

प्रधान सम्पादक: ओमप्रकाश गुप्ता

श्री राम चरित भवन
Shri Ram Charit Bhavan

कृष्ण काव्य पीयूष

नंदनँदन मुख की सुंदरता कहि न सकत स्रुति सेष उमाबर।
तुलसिदास त्रैलोक्यबिमोहन रूप कपट नर त्रिबिध सूल हर॥
(श्रीकृष्ण गीतावली – गोस्वामी तुलसीदास)

सम्पादक मण्डल

अलका प्रमोद (भारत)
आरती 'लोकेश' (यू.ए.ई.)
विनीता मिश्रा (भारत)
शार्दुला नोगजा (सिंगापुर)
शैल अग्रवाल (यू.के.)
शैलजा सक्सेना (कनाडा)
हरिहर झा (ऑस्ट्रेलिया)

प्रबंध सम्पादक

शिवप्रकाश अग्रवाल (भारत)

प्रधान सम्पादक

ओमप्रकाश गुप्ता (यू.एस.ए.)

प्रकाशक
श्री राम चरित भवन
ह्यूस्टन, यू.एस.ए.
Publisher
Shri Ram Charit Bhavan
12436 FM 1960 W., Pmb #140
Houston, USA 77065

प्रथम संस्करण 2021
First Edition 2021

ISBN: 978-1-7362088-3-0

पुस्तक में निहित विषयवस्तु, तथ्य, विचार अथवा विश्लेषण के लिए उसके लेखक पूर्ण रूप से उत्तरदायी हैं। इसके समस्त अधिकार भी लेखकों के पास सुरक्षित हैं। प्रकाशक अथवा संपादक मंडल की विषयवस्तु के प्रति सहमति और उत्तरदायित्व नहीं है। पुस्तक या उसके किसी भी अंश का पुनर्प्रस्तुतिकरण किसी भी माध्यम से स्वीकार्य नहीं होगा। चाहे यांत्रिक माध्यम हो या इलैक्ट्रॉनिक; जानकारी का संचयन लिखित आज्ञा लिए बिना नहीं किया जाना चाहिए। केवल एक समीक्षक को समीक्षा में आंशिक उदधृत करने की छूट रहेगी।

The contents, facts, views, and analysis in this work are entirely the responsibility of the authors and they reserve all rights. Neither the editorial board nor the publisher is responsible of contents by the authors. No part of this book may be reproduced in any form on by an electronic or mechanical means, including information storage and retrieval systems, without permission in writing, except by a reviewer who may quote brief passages in a review.

आवरण चित्र: शशि गुप्ता, अहमदाबाद

प्रकाशन सहयोगी

राम-सरस्वती मल्लिक	माया बंसल
लक्ष्मी नारायण-उषा मेहरा	अर्चना प्रकाश

∫∫जय श्री कृष्ण ∫∫

यदा यदा हि धर्मस्य ग्लानिर्भवति भारत। अभ्युत्थानमधर्मस्य तदात्मानं सृजाम्यहम्।।

परित्राणाय साधूनां विनाशाय च दुष्कृताम्। धर्मसंस्थापनार्थाय सम्भवामि युगे युगे।।

जब-जब धर्म की हानि होती है और अधर्म बढ़ता है, तब-तब मैं अवतार लेता हूँ। सज्जनों की रक्षा के लिये, दुष्टों के विनाश के लिये और धर्म की स्थापना के लिये मैं हर युग में प्रकट होता हूँ। (श्रीमद् भगवद् गीता, अध्याय 4, श्लोक 7 व 8)

धरती पर ईश्वर के आठवें अवतार श्री कृष्ण, मानव मन और प्रकृति के सबसे समीप भी हैं और सबसे दुरूह भी। उनके विभिन्न रूप एक ओर सहज, सरल और ग्राह्य प्रतीत होते हैं तो वहीं दूसरी और उनके गूढ़ संदेश, ज्ञान, अध्यात्म और जीवन दर्शन के रहस्यों का वह सागर हैं जिसमें आजीवन गोता लगा कर यदि कुछ मोती भी चुन पायें तो जीवन सार्थक हो जाये।

श्री कृष्ण का सम्पूर्ण जीवन ही एक दर्शन है परन्तु महाभारत के युद्ध में उनके और अर्जुन के मध्य के संवाद तो मानव इतिहास की सबसे महान दार्शनिक तथा धार्मिक वार्ताओं में से एक है जो श्रीमद् भगवद् गीता में श्लोकों के रूप में संकलित है। श्रीमद् भगवद् गीता में मानव जीवन की हर समस्या का हल है। गीता के अठ्ठारह अध्यायों के सात सौ श्लोकों में कर्म, धर्म, कर्मफल, जन्म, मृत्यु, सत्य, असत्य आदि जीवन से जुड़े सभी प्रश्नों का समाधान उपलब्ध है।

ऐसे विविध वर्णी प्रभु कृष्ण की विविध लीलाओं से प्रेरित होकर अनगिनत लेखकों और कवियों ने अपनी-अपनी मति के अनुसार विविध भाषाओं में उनकी कथा का वर्णन किया है। सूरदास और मीरा जैसे अनेक कृष्ण-भक्तों से प्रेरणा लेकर वर्तमान युग में भी कविगण अपनी-अपनी मति के अनुसार श्री कृष्ण और उनके जीवन काल से संबंधित रचनाएँ करते रहते हैं। यह काव्य संग्रह 'कृष्ण काव्य पीयूष' ऐसी ही कुछ कविताओं का संकलन है, जो आप के करकमलों में प्रस्तुत है।

कृष्ण काव्य पीयूष में 151 कविताएँ हैं, जिनका चयन सम्पादक मण्डल ने बड़ी सावधानी और विवेक के साथ किया है। ये कविताएँ 16 देशों (ऑस्ट्रेलिया, कनाडा, भारत, मलेशिया, नीदरलैंड्स, नॉर्वे, ओमान, कतर, सिंगापुर, श्री लंका, तंज़ानिया, त्रिनिदाद एण्ड टोबागो, यूनाइटेड किंगडम, यू.ए.ई., युक्रैन और यू.एस.ए.) में बसे 101 कवियों द्वारा लिखी गई

हैं। 151 कविताओं में से 59 भारत से बाहर विदेशों मे बसे कृष्ण प्रेमियों द्वारा लिखी गई हैं, जो संकलन का करीब 40% है। इससे यह बात तो सिद्ध होती है कि कृष्ण-कथा मात्र भारत की ही नहीं अपितु विश्वव्यापी है। यह विशेष हर्ष की बात है जहाँ आज विश्व में धर्म को लेकर अनर्थक वाद-विवाद हो रहा है, वहाँ अन्य धर्म के कवियों ने भी इस संग्रह में अपनी-अपनी कविताएँ भेजीं, हम उनके विशेष आभारी हैं। निस्संदेह, कृष्ण किसी एक धर्म विशेष के नहीं अपितु सबके प्रिय हैं।

अनेक दिव्य आत्माओं के प्रोत्साहन और समर्थन के बिना 'कृष्ण काव्य पीयूष' का संकलन संभव नहीं था, इस प्रक्रिया में उन सबका मैं बड़ा ऋणी हुआ। उन सब कवियों के प्रति हार्दिक आभार व्यक्त करता हूँ जिन्होंने इस संग्रह के लिए अपनी-अपनी रचनाएँ भेजीं, और उन से क्षमाप्रार्थी हूँ जिनकी रचनाएँ हम शामिल करने में असमर्थ रहे। सब से अधिक ऋणी तो अपने संपादक मित्रों का हूँ जिन के कारण यह संकलन संभव हुआ। आदरणीय अलका प्रमोद जी (भारत), आरती 'लोकेश' जी (यू.ए.ई.), विनीता मिश्रा जी (भारत), शार्दुला नोगजा जी (सिंगापुर), शिवप्रकाश अग्रवाल जी (भारत), शैल अग्रवाल जी (यू.के.), शैलजा सक्सेना जी (कनाडा) और हरिहर झा जी (ऑस्ट्रेलिया), आप सब के घोर व अथक परिश्रम के परिणाम से ही यह संकलन संभव हुआ है। आप के योगदान को सराहने के लिए मेरे पास शब्द नहीं हैं। भगवान श्री कृष्ण आप सब पर सदैव अनुकंपा बनाएँ रखें, यही मेरी हार्दिक प्रार्थना है।

अंत में, अपने साकेतवासी माता-पिता और सभी गुरुओं के चरण कमलों को सादर प्रणाम करता हूँ जिनके आशीर्वाद के बिना मेरे जीवन में कुछ भी संभव नहीं। यद्यपि पूरा प्रयास रहा है कि पुस्तक में त्रुटियाँ न रहें, तथापि जो भी त्रुटियाँ रह गईं हों उनके लिए मैं अकेला दोषी हूँ, अत: क्षमाप्रार्थी हूँ। 'कृष्ण काव्य पीयूष' के विषय में आपके विचारों की प्रतीक्षा रहेगी। जय श्री कृष्ण!

सादर,
ओमप्रकाश गुप्ता
प्रधान सम्पादक
ह्यूस्टन, यू.एस.ए.
जन्माष्टमी 2021

अनुक्रमणिका

अवतार क्यों?

क्यों जन्मे थे कृष्ण!	ओमप्रकाश गुप्ता	2
धर्म स्थापन	वेद व्यथित	4
क्षण-क्षण जीवन	हरिहर झा	6
कृष्ण ज़रा मुझको बतलाना	राकेश खंडेलवाल	7
कर्मयोगी	चित्र भूषण श्रीवास्तव "विदग्ध"	8
कृष्ण	प्रतिभा पुरोहित	9
कृष्ण क्या हो तुम	रेणु चन्द्रा माथुर	10
कृष्ण! तुम कैसे कृष्ण बने	सतीश चतुर्वेदी 'शाकुन्तल'	11
मुझे आना ही था	राकेश कुमार चौबे	12
वहीं श्रीकृष्ण आते हैं	विजयानन्द	14
लीला पुरुषोत्तम भगवान	रुचि श्रीवास्तव	16
भेद अपना बताया नहीं	वीणा अग्रवाल	17
तुम ही कृष्णा हो	अनिता कपूर	18
कृष्ण संदेश	नूपुर अशोक	19
विराट रूप	शालिनी गर्ग	20

कृष्ण आश्रय

तुम हो मीत मेरे	अर्चना प्रकाश	22
कान्हा के हाथों में	संगीता अग्रवाल	23
श्याम नाम अनमोल	पुष्प लता शर्मा	24
कृष्णाश्रय	आशीष कुमार यादव	25
हे कृष्ण कन्हैया	चित्र भूषण श्रीवास्तव "विदग्ध"	26
कृष्णमय हो जाता है निधिवन	महेश चंद्र द्विवेदी	27
मेरा कृष्णा	मधु खन्ना	28
कृष्ण कृष्ण बोलि	पुष्पारानी गर्ग	29
कुण्डलियाँ	सन्तोष कुमार प्रजापति 'माधव'	30
जय श्री कृष्ण	कलणि विहंगा पनागॉड	31
तुम्हारा नाम	बशीर अहमद मयूख	32
कान्हा नाम	दिगम्बर नासवा	33

कृष्ण पर ब्रह्म

कण कण में हैं कृष्ण	माया बंसल	34
कृष्ण ही ब्रह्म हैं	विवेक रंजन श्रीवास्तव	35
कृष्ण लीला	प्रीति गोविन्दराज	36
कृष्ण: प्रेम बनाम परीक्षा	यूरी बोत्वींकिन	37
योगेश्वर श्रीकृष्ण	निरुपमा मेहरोत्रा	38
कृष्ण लीला	मोहनदास वैष्णव	39
कृष्ण, राम और मैं	उषा मेहरा	40
कृष्ण योग	पूजा लाल	41
तुला दान	सन्तोष भाऊवाला	43
मेरे कृष्णा	निशा प्रकाश	44
सर्वव्यापी श्रीकृष्ण	आरती ‘लोकेश’	45
अनहद का नाद	विनीता मिश्रा	47

कृष्ण परिवार

महामाया की वाणी	आरती ‘लोकेश’	48
कंस का पश्चाताप	मंजु सिंह	50
कृष्ण का गोकुल	गोपाल कृष्ण भट्ट 'आकुल'	53
मातु दुलार करे हरि को	हरिवल्लभ शर्मा 'हरि'	54
पवनरेखा – एक माँ	उर्मिला चौधरी	55

कृष्ण विछोह

द्वारिका गमन	अर्चना प्रकाश	57
शिकायत नहीं	स्वरांगी साने	58
गोपियों की व्यथा	यशवीर सिंह	60
सुन लो ऊधौ	विनीता मिश्रा	61
कौन द्वारका बसते हो?	विनीता मिश्रा	62
उद्धव और गोपियाँ	रेखा राजवंशी	63
कब आओगे	मंजु सिंह	65
कहाँ ढूँढू तुम्हें	सीमा हरि शर्मा	66
कान्हा जब से गया	गोपाल कृष्ण भट्ट 'आकुल'	67

प्यासी थी...	शैल अग्रवाल	68
कहाँ हो तुम	रेणु चन्द्रा माथुर	69
मोहन मत जाना	कंचन पाठक	70
बीच भँवर मत छोड़	कंचन पाठक	71
भ्रमर गीत	शैल अग्रवाल	72

कृष्ण स्तुति

कैसे तेरा नाम जपूँ	करुणा पांडे	73
पार लगा दो	करुणा पांडे	75
माधव तेरे श्री चरणों में	शार्दुला नोगजा	76
स्तुति श्री कृष्ण की	कौशल किशोर श्रीवास्तव	77
तू है मेरा कृष्णजी	पृथ्वी सिंह बैनीवाल	78
श्याम जगत हितकारी	पुष्प लता शर्मा	79
कृष्ण नमन	राकेश खंडेलवाल	80
प्रार्थना	आशा मोर	81
जीवन का सार	नमिता सिंह 'आराधना'	83
ॐ नम: कृष्णाय	विजय गिरि गोस्वामी 'काव्यदीप'	84
नाम की महिमा	निरुपमा राय	85
कृष्ण नाम अभिराम	गौरीशंकर वैश्य विनम्र	86
श्रीकृष्ण की आरती	श्याम बहादुर श्रीवास्तव ‘श्याम’	88
In the Service of Krishna	Rajesh Kumar Mishra	89
कृष्ण कृपा	राजेश कुमार मिश्रा	90
हम करें समर्पण..	शीला शर्मा	91
श्याम धुन लागी	अनिता कपूर	92
करुणा करो बृजेश	कैलाश गिरि गोस्वामी	93
हे कृष्ण मुरारी!	ओमप्रकाश गुप्ता	94

गीता ज्ञान

गीता ज्ञान	उषा अवस्थी	95
धर्म क्षेत्रे कुरु क्षेत्रे	सुशील शर्मा	97
जीवन का सार	प्रतिभा पुरोहित	101

सारथी	अलका प्रमोद	102
श्री कृष्णाय नमः	शशि जैन	103
गीता का सार	आराधना झा श्रीवास्तव	104
कृष्णा और अर्जुन के कृष्ण	रीता पाण्डेय	106
तुम पार्थ बनो	लता अग्रवाल	107
शान्तिदूत	सन्तोष भाऊवाला	109
एक और गीता दो	ममता मिश्रा	110
गीता सार	आर. के. प्रजापति 'साथी'	111
स्वयं को तैयार कर	प्रियंका पारो मोहन	112

ब्रज में कृष्ण

रसखान की भाषा	जगदीश व्योम	113
ब्रजमंडल में ग्रीष्म	अनुजीत इकबाल	114
शरद पूर्णिमा में रास	अनुजीत इकबाल	115
बाँसुरी	प्रतिभा सक्सेना	116
गोपियों के कृष्ण	कौशल किशोर श्रीवास्तव	118
ब्रज में फाग	पूनम चन्द्रा 'मनु'	119
गिरधर	पूनम चन्द्रा 'मनु'	121
मुरली मनोहर	अभिनव शुक्ल	122
छलिया	अलका प्रमोद	123
तोरी बंसी भाग भरी	शशि पाधा	124
जीवन मुरली	मंजुला चतुर्वेदी	125
बाल लीला	रामकृपाल 'कृपाल'	126
गोपी-कृष्ण प्रेम	रामकृपाल 'कृपाल'	127
मेरो नंदलाल	सूर्यकांत सुतार 'सूर्या'	128
चलो सखि	वीणा अग्रवाल	129
वृन्दावन की बनूँ वृंदा	सुषमा सौम्या	130
मुरलीवाले श्याम	सरस्वती मल्लिक	131
होली खेलूँ साथ	चित्रा गुप्ता	132
ब्रज में सावन	चित्रा गुप्ता	133

मुरली सुनी	हरिहर झा	134
जमुना के तीरे	सुरेशचन्द्र शुक्ल 'शरद आलोक'	135
कृष्ण कन्हैया	निरुपमा मेहरोत्रा	136

भक्तन पुकार

गोविन्द दामोदर दोहे	शार्दुला नोगजा	137
कृष्ण प्रतीक्षा	मोती प्रसाद साहू	138
कान्हा से संवाद	शशि पाधा	139
मन बावरा क्यों है?	उषा अवस्थी	140
पुकार	सरोज अग्रवाल	141
दर्शन दो हे साँवरे	विजय गिरि गोस्वामी 'काव्यदीप'	142
मिलन की आस	उषा मेहरा	143
कृष्ण भला क्यों आएँगे	रुचि श्रीवास्तव	144
हे हरि	मधु खन्ना	145
कृष्ण तेरी प्रतीक्षा	काजरी गुहा	146
तुम फिर आओ ना	हेम चन्द्र तिवारी	147
कन्हैया! भूल मत जाना!	राजेन्द्र स्वर्णकार	148
मोरी सुध बिसराई	मनीष अरोड़ा ‘अश्क’	149
मुझे मीरा होना पसंद है	शीतल जैन "अहमक लड़की"	150
दोहा एकादशी	कैलाश गिरि गोस्वामी	151
कृष्ण भक्ति	सन्तोष कुमार प्रजापति 'माधव'	152
तू जब दुर्गा होगी	ओमप्रकाश गुप्ता	153

मोहना रूप

सूरत बाँकबिहारी की	मञ्जरी पाण्डेय	154
हमारे यहाँ	मञ्जरी पाण्डेय	155
कृष्ण के कितने रूप	मधु चतुर्वेदी	156
तेरा रूप बड़ा प्यारा	प्राची पाठक	158
कान्हा	आभा सिंह	159
नटवर नंद किशोर	सरिता तोतला	160

चितचोर	शैल अग्रवाल	161
सूरत सुहानी है	हरिवल्लभ शर्मा 'हरि'	163
संतुलन	अलका प्रमोद	164
श्याम रंग	सोमनाथ बी डनायक	165
जिया हेरान	विनय विक्रम सिंह 'मनकही'	166

राधा कृष्ण

राधा और ध्यान-योग	आरती ‘लोकेश’	167
राधा खड़ी सदी से	हरिहर झा	168
राधाकृष्ण	माया बंसल	169
कृष्ण के नाम में राधा	संगीता अग्रवाल	170
राधे रानी	रेखा राजवंशी	171
राधा कृष्ण की प्रीत	सुशील शर्मा	172
राधे-राधे	मधु चतुर्वेदी	175
राधारानी और श्रीकृष्ण	आराधना झा श्रीवास्तव	176
कृष्ण आनंदिनी राधा	रीता पाण्डेय	177
राधा-कृष्ण पत्र व्यवहार	डी.पी. सिनालि नदीपमा पतिरण	178
मैं अधीर हूँ	शैलजा सक्सेना	180
राधा की वेदना	शिवप्रकाश अग्रवाल	181

हे
कृष्ण
मुरारी
राधा प्यारे
सब से न्यारे
जग रखवारे
जग में है क्रंदन
हे वसुदेव नंदन
प्रभु बिसराया तुमने
कृपा करो देवकीनंदन
भगवन हम तेरी राया
निष्ठुर तेरी यह माया
दुर्बल मेरी है काया
मैं शरण में आया
राधे प्रियतम
पीड़ा में हम
भगवन
प्रणम्य
नम्य
ॐ

(इसी पुस्तक में पृष्ठ 94 पर)

यह कविता अपने आप में अद्भुत है! इसे मेरा मन 'आकृति कविता' कहने को कर रहा है। यह जिस प्रकार एक वर्ण से होकर एक-एक पायदान बढ़कर 10 वर्णों तक जाकर फिर एक वर्ण तक जा पहुँचती है, उससे न केवल एक आकृति बनती है वरन एक नया अर्थ, नया आयाम भी दिखाई देता है। ऐसा प्रतीत होता है जैसे ब्रह्म के एकल रूप को दर्शाती हुई ये दशावतार तक ले जाती है और फिर ॐ के द्वारा उसे एक ओंकार ब्रह्म में परिणित हो जाती है!

– विनीता मिश्रा, संपादिका, कृष्ण काव्य पीयूष

क्यों जन्मे थे कृष्ण!

ओमप्रकाश गुप्ता
ह्यूस्टन, यू.एस.ए.

हर साल की तरह, फिर जन्माष्टमी आई है,
परमपिता की याद, मन में उभर आई है।
इस जन्माष्टमी पर, मन में प्रश्न उभरता है,
परमपिता परमात्मा, मानव क्यों बनता है?

सुना है विद्वानों से, प्रभु का वैकुण्ठ वास है,
जहाँ न दुःख, संताप, मात्र सुख का वास है।
छोड़ उस धाम को, आते क्यों प्रभु इस लोक,
यहाँ न कोई सुख; मात्र पीड़ा, यातना, शोक!

आप कहेंगे, यह कैसा बचकाना सा प्रश्न है,
गीता में भगवान श्री कृष्ण ने कहा स्वयं है।
“यदा यदा हि धर्मस्य ग्लानिः भवति भारत,
अभ्युत्थानमधर्मस्य तदात्मानम् सृजाम्यहम्।”

अर्थात, कृष्ण थे जन्मे पापियों का नाश करने,
करने रक्षा धर्म की, अधर्म का विनाश करने।
बात मैं मानूँ नहीं, हे भगवन क्षमा मुझको करें,
सही बात है कुछ अन्य, लीला न प्रभु मुझसे करें।

कंस-शिशुपाल जैसे जंतुओं का नाश करने के लिए,
पर्याप्त था हल्का सा इशारा, निपटाने दुष्टों के लिए।
आकर धरा पर आपने, निकृष्टों का नाश ऐसे किया,
'बाय-प्रोडक्ट' हो जन्म का, मन को मेरे वो भा लिया।

जन्मे थे प्रभु आप, हम मानवों को शिक्षा देने,
हम थे भूले-भटके, हमें सही राह की दीक्षा देने।
कैसे करें आदर बड़ों का, माता-पिता, गुरुजनों का,
कर्तव्य-पालन के लिए, त्याग कैसे करें सुखों का।

कैसे करें हम प्रेम निर्मल, मन में न कोई स्वार्थ हो,
मनसा वाचा कर्मणा, हर सोच केवल धर्मार्थ हो।
कैसे निभाएँ मित्रता, सीखें सुदामा के प्रेम से,
छोड़ी प्रतिज्ञा स्वयं की, अर्जुन सखा के स्नेह से।

कैसे करें रक्षा बहिन की, जैसे द्रौपदी की हे प्रभो,
दुष्ट-दण्डित कैसे करें, शिक्षा आपने दी है प्रभो।
त्याग दुर्योधन की मेवा, स्वीकार साग विदुर का,
छोड़ें साथ पापियों का, गूढ़ सन्देश सुदूर आपका।

दी और भी शिक्षा प्रभु, नहीं शब्द मेरे पास हैं,
केशव हाथ मेरा थामिए, मेरी यही एक आस है।
इस जन्माष्टमी पर प्रभु, कुछ बोध मुझको दीजिये,
अनुकरण मैं कर सकूँ, ऐसी बुद्धि मुझको दीजिये।

जन्मे थे प्रभु आप क्यों, ज्ञान सबको दीजिये,
जीवन कैसे जियें हम, पथ प्रदर्शित कीजिये।
'ओम' चरणों में पड़ा, कृपा-शरण दीजे विभु,
कृष्ण-कृपा सर्वत्र हो, जय जयकार हो मेरे प्रभु!

धर्म स्थापन
वेद व्यथित
फरीदाबाद, भारत

युग ऐसा आ गया यहाँ पर,
हुई व्यवस्था छिन्न भिन्न।
ऐसे युग के लिए कहो,
तो क्या करते तब श्री कृष्ण।

जब नारी का सम्मान नहीं,
और भंग हो गईं मर्यादा।
जन हित नहीं साध सकती है
ऐसे राज व्यवस्था।

अब धर्म युद्ध के लिए यहाँ,
प्रतिकार अधम का होगा ही।
इस लिए सत्य के लिए यहाँ,
प्रतिकार अवश्य होगा ही।

सजी गईं युद्ध को सेनाएँ,
सैनिक सब हो गए सिद्ध।
रण भेरी की प्रतीक्षा में,
उद्यत थे वे सब शस्त्र सिद्ध।

पर प्रश्न पार्थ ने किया एक,
मैं देखूं जिन से लड़ना है।
उन को देखूं जिन से लड़कर
मुझ को अब आगे बढ़ना है।

पर कृष्ण योगरत रहें सदा,
उन को इस सब से लेना क्या।
बस एक ध्येय ही रहा प्रभु का
हो धर्म स्थापन सदा यहाँ।

इस हेतु युद्ध भी हो बेशक
कर्तव्य विमुख न हो कोई।
अपने स्वधर्म निभाने में
पीछे न हटे यहां कोई।

जो धर्म त्याग आये हैं यहाँ
वे मानवता के शत्रु हैं।
उन का प्रतिकार सुनिश्चित हो
वे सौम्य प्रकृति के शत्रु हैं।

क्यों करें अतिक्रमण औरों के,
अधिकारों का सीमाओं का।
यह कभी नहीं स्वीकार रहे,
सम्मान हो मर्यादाओं का।

अपने कर्तव्य भाव हेतु,
मानव चिंतित हो जाएँ सभी।
पर सत्य शक्ति के बिना नहीं,
हो सका कभी भी धर्म बली।

आ जाओ अब है समय निकट,
आओ मिल कर उद्घोष करें।
अपने मद मतसर लोभ, मोह,
इन सब का हम प्रतिकार करें।

जो मूल्य मानवीय निश्चित है,
उन सब को अंगीकार करें।
पर धर्म स्थापन हेतु यहाँ,
हम जीवन भी बलिदान करें।

तब मानव जीवन के उपवन में,
शन्ति पुष्प पुष्पित होगा।
संयम जिस की हो मर्यादा,
तब आत्म मुग्ध जीवन होगा।

हे कृष्ण! हे चक्रणि! हे माधव!
तुम धर्म युद्ध के रक्षक हो।
हे प्रभु आप के चरणों में
मेरा सर्वस्व समर्पण हो।

क्षण-क्षण जीवन

हरिहर झा
मेलबोर्न, आस्ट्रेलिया

राधा तकती पनघट पर या
युद्ध करे हुँकार
क्षण-क्षण जीवन है संपूर्ण, केशव रहे पुकार।

संग गोपी के खेली रास
जग को रहे न भ्रम
मान दिलाने अबला को कब
पीछे पड़े कदम
नरकासुर की सौलह हजार ललना अंगीकार।

द्वारकाधीश का राजमहल,
सुदामा से प्रीत
आयाम अनोखे पल पल के
युद्ध या संगीत
कालिया नाग का फन कुचला, मुरली के फनकार।

अधरों पर बजती बंसी या
गिरि धारण करना
चेतन, जड़ में प्रेम, दंभ का,
बूंद बूंद झरना
साग विदुर दे, दुर्योधन का मेवे से सत्कार।

गौपालक ने सबक सिखाया
इन्द्र अकड़बाज
मटकी फोड़ी,
कृष्न बचाये, द्रौपदी की लाज
झलक इक इक पूर्ण जीवित हो मूर्छा है बेकार।

मुड़ कर ना देखा वृंदावन,
पल निकला तो अंत
काल की धारा से निकलता
लम्हा हो जीवन्त
पल में किया गीता-ज्ञान से विश्व पर उपकार।

कृष्ण ज़रा मुझको बतलाना

राकेश खंडेलवाल
सिल्वर स्प्रिंग, यू.एस.ए.

जब-जब नाम तुम्हारा आता
प्रश्न पूछने लगते पल छिन
कृष्ण ज़रा मुझको बतलाना
क्या तुम दोगे उनका उत्तर?

कालिन्दी के तट की सिकता
जिसने पगतलियाँ चूमी थी
वृंद कुंज वे जहाँ बाँसुरी की
धुन, प्रतिध्वनि बन गूँजी थी
वे कदम्ब के वृक्ष बने थे
अलगनियाँ वस्त्राभूषण की
और जहाँ पर चाँद निशा में
खनक पायलों की ठुनकी थी

गए द्वारका जब से, तब से
एक बार न वापिस आए
कृष्ण ज़रा मुझको बतलाना
क्यों न देखा कभी पलट कर?

जिसके अधरों के चुम्बन से
मुरली और सुरीली होती
पल में रूठी, पल में मनती
पल में और हठीली होती
नंद गाँव से बरसाने के
पथ की दूरी शून्य हुई थी
उस राधा की याद तुम्हारे
मन को आ क्या नहीं भिगोती?

पटारानी रुक्मिणी और भामा
के संग बातों बातों में
कृष्ण ज़रा मुझको बतलाना
ज़िक्र किया क्या, कभी झिझक कर?

फिर जब प्रीत संगिनी मन की
आ महलों में बनी देविका
मुरली में सरगम के नूपुर
कैसे बोती, कहो सेविका
भावों की अंतर्ज्वाला में
जलते हुए हृदय का आँगन
बना हुआ था आहुतियों को
बूँद-बूँद पी रही वेदिका

जब वंशी ने आरोहण से
अवरोहण का मौन ले लिया
कृष्ण ज़रा मुझको बतलाना
क्या सुर गूँजा कहीं उभर कर?

कर्मयोगी

चित्र भूषण श्रीवास्तव "विदग्ध"
जबलपुर, भारत

भगवान कृष्ण! हे वासुदेव, करुणावतार! हे सरल श्याम।
हर भारतवासी का घर मंदिर, हृदय तुम्हारा पुण्य धाम।
हे युगदृष्टा! भारत सृष्टा, हे कृष्ण! कर्मयोगी महान।
तुम लीलाधर युग पुरुष, महात्मा, अवतारी युग के प्रधान।
हे भारत के भावुक पथप्रदर्शक, गीतामृत के उद्गाता।
तुम प्रेम, शक्ति, कर्तव्य, भक्ति के रूप, धर्म के व्याख्याता।

तुम से अनुप्राणित राजनीति, तुमसे विकसित अध्यात्म ज्ञान।
तुम त्राता पथप्रदर्शक, शिक्षक, कर्मठ योगी अतिभासमान।
बालक किशोर नवयुवक, प्रौढ़ और वृद्ध सभी के परम मित्र।
शिशु, बाल, ग्वाल, गोपाल, तरूण, सारथी तुम्हारे विविध चित्र।
भारत जनमन सम्राट! सुखद, भगवान, पूज्य हे सत्य काम।
तुम जल थल कण-कण विद्यमान, हे देव तुम्हें शत शत प्रणाम।

कृष्ण

प्रतिभा पुरोहित
अहमदाबाद, भारत

कृष्ण! क्या हो?
तुम!
सखा-गुरु
या
ऊँगली पकड़
राह में चलाने वाले।
मैं तुम्हारी आराधिका
मीरा नहीं
राधा नहीं
फिर क्या हूँ मैं
अज्ञान तिमिर में
भटकती एक कश्ती
जिसे
तलाश है
ज्ञान के प्रकाश की।

कृष्ण क्या हो तुम

रेणु चन्द्रा माथुर
जयपुर, भारत

जन्मे कृष्ण जेल में
संहार किया कंस का
मनमोहक रूप तुम्हारा
देखकर मोहित हूँ,
मैं समझ ना पाती हूँ
कृष्ण क्या हो तुम...

राधा के हो तुम मोहन
मीरा के गिरधारी हो
द्रौपदी के हो सखा
या प्रजा के रखवाले हो,
मैं समझ ना पाती हूँ
कृष्ण क्या हो तुम...

जन्म दिया देवकी ने
यशोदा ने है पाला
राज किया द्वारिका में
दिव्य रूप देख तुम्हारा,
मैं समझ ना पाती हूँ
कृष्ण क्या हो तुम..

बाल लीला करते हो
गैया तुम चराते हो
पशुधन की महिमा
तुम जो समझाते हो,
मैं समझ ना पाती हूँ
कृष्ण क्या हो तुम...

रास लीला रचाते हो
बंसी तुम बजा कर
जीवन मधुर बनाते हो
राधा संग प्रेम तुम्हारा,
मैं समझ ना पाती हूँ
कृष्ण क्या हो तुम...

मीरा तुम्हारे प्रेम में
जोगन बन हो गयी मगन
भक्ति रस बरसाती रही
मीरा कृष्ण प्रेम लगन,
मैं समझ ना पाती हूँ
कृष्ण क्या हो तुम...

कृष्ण! तुम कैसे कृष्ण बने

सतीश चतुर्वेदी 'शाकुन्तल'
गुना, भारत

कृष्ण! तुम कैसे कृष्ण बने।
मार के दैत्य बजाई वंशी
रहते बने-ठने॥
जन्म जेल में ले, विभावरी
में ही मुक्त हुए,
कोई दैन्य न भाव
उपायों से संयुक्त हुए।
निर्भय करके निज जननी को
जसुदानंद बने। कृष्ण .....
कंस-क्रूरता और कुमति का
जाकर अंत किया,
मूल्यों का उद्धारक खुद को
यों अभिव्यक्त किया।
विद्युत बनकर चमके, जितने
बादल हुए घने। कृष्ण .....
इतना गहरा ज्ञान तुम्हें
गीता का कहाँ मिला!
पा संदेश कर्म का, जीवन
को नव अर्थ मिला।
धर्मयुद्ध में एक ने सेना,
एक ने तुम्हीं चुने। कृष्ण .....
प्रेम-योग समवेत तुम्हीं से
ये जग जान सका,
मित्र तुम्हारे-जैसा निर्धन
कोई पा न सका।
अपने तोड़-तोड़कर सबके
जोड़ दिए सपने। कृष्ण .....

मुझे आना ही था

राकेश कुमार चौबे
भोपाल, भारत

मैं क्यों आया!
मेरा आदर्श राम अवतार....
तुम्हें जीना सिखा गया।।
संबंधों की पराकाष्ठा सिखा गया।
वचनों की अर्चना सिखा गया।
नियमों की सार्थकता सिखा गया।
परन्तु,
इन सब के बाद भी...
जाने कब व्यक्ति परोपकार छोड़ स्वार्थ सीख गया।
देश, संगठन, देशभक्ति की जगह
व्यक्तिपूजा और छोटे छोटे राष्ट्रों में बँट गया।
इसलिए, मुझे आना ही था।

बंधनों में पैदा हुआ था,
फिर भी, बंधनों से परे था।
कई राक्षसों को मारा था
पर माँ ने 'ऊखल' से बाँधा था।
देवों को उनका अस्तित्व समझाना था,
व्यक्ति पूजा से इतर प्रकृति को आदर दिलाना था।
गाय और पर्वत को पुजवाना था।
इसलिए मुझे आना ही था।

"प्रेम" का रूप बताना था,
"रास" भी रचाना था।
छलिया से योगी का सफ़र भी बताना था।
इसलिए मुझे आना ही था।

कभी कंस को मार कर योद्धा,
तो कभी रणछोड़ का रहस्य भी समझाना था।
इसलिए मुझे आना ही था।

ज्ञान की पिपासा में गुरु सांदीपनी के पास जाना था।
ज्ञान पाया या नहीं,
पर "सुदामा" को गले लगाना था।
मथुरा मेरी थी क्योंकि उसे जीता था।
पर सपनों की द्वारिका भी बसाना था।
इसलिए मुझे आना ही था।

भारतवर्ष के दम्भी, स्वार्थी, भोगी,
कमज़ोर राजाओं को,
देशप्रेम, धर्म, परोपकार भी सिखाना था।
इसलिए मुझे आना ही था।

कुरुक्षेत्र सजाना था,
कर्मों को धर्म की भाषा समझाना था।
युद्ध तो बहाना था,
लोगों को सांख्य, कर्म, ज्ञान, भक्ति,
योग समझाना था।
कर्म करते हुए अष्टांगयोग
समझाना था।
शिव और राम को मुझे अपनाना था।
इसलिए मुझे आना ही था।

श्री राम के रामराज्य को स्थायित्व,
मेरी "रास" और "गीता" के साथ-साथ
आत्मा-परमात्मा, द्वैत-अद्वैत,
साकार, निराकार
के मर्म को समझाना था।
इसलिए मुझे आना था।
मुझे आना ही था।

वहीं श्रीकृष्ण आते हैं

विजयानन्द

प्रयागराज, भारत

धरा पर हो अँधेरा इस तरह, कुछ सूझता न हो,
निज मोह-मद में कोई, किसी को बूझता न हो।
जंजीरें पाँव में, कई ताले कारागृह के अंदर,
देवकी-वासुदेव सा, हर क्षण भक्तिमय अंतर।।
वहीं श्रीकृष्ण आते हैं .....

उफनती हो यमुन जलधार, यशोदा-नंद लालायित,
कंस की क्रूरता से अधिक, सद् वसुदेव व्याख्यायित।
जहाँ पर गायें रंभाएँ, बुलाएँ ग्वाले घर पर आ,
छींकों पर टँगे मक्खन, बुलाते कान्हा अब तो आ।।
वहीं श्रीकृष्ण आते हैं .....

कुपित हों इन्द्र तो गोवर्धन, अँगुली पर जिसके,
कई के पाप सिर बोले, कई डर से वहाँ खिसके।
गरीबी ग्वाल बालों की, न बहुत काम न धंधा,
गोकुल गाँव का हर, बच्चा बच्चा भक्ति में अंधा।।
वहीं श्रीकृष्ण आते हैं.....

वह गाँव का ग्वाला, मेरा कुछ कर नहीं सकता,
वह नंद का लाला, मेरा कुछ कर नहीं सकता।
बुलाओ उसको जरा, देख लें उसकी जवानी को,
बहुत सुनली कथा, परखें जरा उसकी कहानी को।।
वहीं श्रीकृष्ण आते हैं .....

मरे जब कंस हो निर्वंश, जनता झूम जाती हो,
मथुरा से गोकुल तक, खुशी की लहर आती हो।
तरु की ओट से राधा, निहारें राह कान्हा की,
गोपियाँ कसम खा,आह भरती उसी कान्हा की।।
वहीं श्रीकृष्ण आते हैं .....

राम की दिवाली, जहाँ पर चमक पा जाए,
होली अवध की जिस जगह, उछलती आए।
बहुरंग की जब गोपियाँ, इक रंग में डूबें,
बाँसुरी के स्वरों में सभी, निर्द्वन्द हो झूमें।।
वहीं श्रीकृष्ण आते हैं .....

पुकारे द्रोपदी जब चीर, दुशासन वहाँ खींचे,
पाँचो पांडव हारे हुए, बस आँखें ही मींचे।
भीष्म, द्रोण, कृप, भीम, कुछ कर नहीं पाएँ,
दुर्योधन-दुशासन के लहू, की कसम ही खाएँ।।
वहीं श्रीकृष्ण आते हैं.....

न होगी महाभारत, गाँव बस पाँच दे देना,
न माना दुष्ट तो अर्जुन, को गीता ज्ञान दे देना।
विचारों की जलधि में, डूबते अर्जुन को बाहर ला,
करो अब युद्ध,धर्मध्वज, हनुमान का बल पा।।
वहीं श्रीकृष्ण आते हैं .....

मिले जब शांति तो, घर-बार भी छोड़ा जहाँ जाए,
मथुरा छोड़कर कोई, द्वारिका रहने चला आए।
सुदामा की गरीबी, भूख से हों बिलखते बच्चे,
हड़पे हक किसी का, नेतृत्वकर्ता कान के कच्चे।।
वहीं श्रीकृष्ण आते हैं .....

मनमोहिनी मीरा बुलाए, कान्हा अब तो आ,
सूर के सागर में आकर, यूँ समा तो जा।
रसखान की रस गागरी में प्रेम रस छलके,
आ जा कन्हैया, मेरे दिए तेरे लिए जलते।।
वहीं श्रीकृष्ण आते हैं.....

हमें पाक-चीन भी, आँखें दिखला नहीं सकता,
हमारे वीर सीमा पर, कोई झुठला नहीं सकता।
हमारे खून में है राम-कृष्ण का वही पौरुष,
लड़ेंगे हम कोई हमको, कभी हरा नहीं सकता।।
जहाँ पर सोच हो ऐसी, वहीं श्रीकृष्ण आते हैं .....

लीला पुरुषोत्तम भगवान

रुचि श्रीवास्तव

लखनऊ, भारत

तुमने बदले मानक सारे,
मेरे प्रभु, मेरे घनश्याम!
वाचन मिथ्या कर्म नहीं सत
झूठ किंतु बचपन में बोला।
माटी खायी, मना किया, तब
माता ने मुख जबरन खोला।
माता को ब्रह्मांड दिखाया,
दिया अनृत को पावन नाम!
कठिन, कुटिल रिपु कालयवन,
रण आवाहन उसका माना।
किंतु न संकट में जन गण हों,
विधि विधान यह भी ठाना।
परहित में "रणछोड़" बने,
रिपु को भेजा परलोक धाम।
कौरव थे अधर्म के पथ पर,
दी तदापि अक्षौहिणि शक्ति!
हो नि:शस्त्र पक्ष पांडव के,
स्वीकारी अर्जुन की भक्ति।
भूपति से सारथि बन बैठे,
किया सहर्ष उलट यह काम।
मतिभ्रम में उन्मत्त शत्रु है,
मधुसूदन ने जान लिया।
छल से छली विजित होगा अब,
फिर यह नया विधान किया।
गुण, छल, कपट, नहीं शूर के,
शत्रु कहेगा त्राहिमाम्।
शत पुत्रों के वध पर क्रोधित
गांधारी उन्मत्त हुई।
दे बैठी वह श्राप कृष्ण को,
विधि की लेखा सत्य हुई।
श्राप ग्रहण कर, क्रोध शमन कर,
किया कृष्ण ने उसे प्रणाम।
बदले तुमने मानक सारे,
मेरे प्रभु, मेरे घनश्याम!
सकल सृष्टि में तुम अलबेले,
लीला पुरुषोत्तम भगवान!
मेरे प्रभु, मेरे घनश्याम!
मेरे प्रभु, मेरे घनश्याम!!

भेद अपना बताया नहीं

वीणा अग्रवाल
कोटा, भारत

भेद अपना बताया नहीं,
जन्म-जन्मों में ढूँढा किये,
श्याम कुछ भी बताया नहीं,
जन्म-जन्मों में ढूँढा किये।

कभी मन्दिर में पूजन किये,
कभी मिल करके गाए भजन,
आरती में निहारा तुम्हें,
शंख घंटा बजाया किये।

कभी ध्यान में तुम मिले,
जब जागे तो खोए थे तुम,
मिल-मिल के बिछुड़ते रहे,
हम भ्रमित हो के झाँका किये।

कभी आँसुओं में मिले,
कभी सिर्फ इन्सान में,
कभी मातु-पितु बन मिले,
कभी बाल लीला किये।

रूप ऐसा तुम्हारा अगम,
शारदा शेष जाने नहीं,
एक छछिया भरी छाछ पे
गोप तुमको नचाया किये।

न दिया तुमने अपना पता,
ना ही रस्ता बताया कोई,
रूप सबसे निराला तेरा,
कल्पना में सँवारा किये।

तुम ही कृष्णा हो

अनिता कपूर
फ्रीमोंट, यू.एस.ए.

जिसकी मधुर बाँसुरी सुन
वीणा सा मन डोलता
प्रेम रस की झील में
प्रेम आँसुओं के अँसुवन में
बाँसुरी की मदभरी धुन पर
राधिका के संग मेरा मयूर मन नाच उठे
वो ही कृष्ण हो तुम
तुम ही कृष्णा हो।

जिसकी बाँसुरी के छिद्रों से
ढुलक ढुलक जाये है प्यार
तन मन होने लगे बेसंभार रे
बादलों से गिरने लगे सितार की फुहार रे
शरद चाँदनी समर्पित राधा के अटके प्राण रे
फिर भी प्रेम दीवानी बावरी हुई राधा
वो ही कृष्ण हो तुम
तुम ही कृष्णा हो।

जिसकी बाँसुरी से निकले मधुर अमृत
बज उठते नूपुर गोपियों के
तुमरे छन्द... वन में गीत सी बहती
हवाएँ भी गीत बन चहके
जिसकी दृष्टि के संस्पर्श भर से
सृष्टि की गंध बसंती हो जाए
वो ही कृष्ण हो तुम
तुम ही कृष्णा हो।

कृष्ण संदेश

नूपुर अशोक
राँची, भारत

कर्म निर्धारित करते धर्म,
धर्म निर्धारित करता कर्म,
तुमने आकर दिखलाया था,
जीवन मर्म सिखाया था।

पालन करने वाली ही
माँ की पदवी पाती है,
युगों बाद भी देवकी नहीं,
यशोदा ही माँ कहलाती है।

जन्म चाहे कोई भी दे,
पाल कोई भी सकता है,
प्रेम नहीं बद्ध संबंध सूत्र से,
निर्बाध पवन सा बहता है।

उन्मुक्त विचरती वंशी धुन,
राधा चली आती जिसको सुन,
प्रेम ही है जीवन का केंद्र,
प्रेम ही है भक्ति सगुण।

विराट को जो देख सके,
वही भक्त बन जाता है,
संबंध-मोह में सीमित जो
वह जन्मांध रह जाता है।

अन्याय विरोध है सत्य धर्म,
इसमें नहीं बाधक कोई संबंध,
जिसने बनाया तुम्हें सारथी
उसने ही जीता जीवन रण।

तुम ही नियामक, तुम ही विनाशक,
यह विश्व तुम्हीं से चलता है,
तुम नहीं ब्रह्माण्ड में,
ब्रह्माण्ड तुम में ही रहता है।

विराट रूप
शालिनी गर्ग
दोहा, कतर

अर्जुन बोले, आप मुझे अगर योग्य समझते योगेश्वर।
कल्याण कीजिये मेरा, विश्वरूप अपना दिखालाकर।।
मेरे इस शरीर में अर्जुन, तुम सारा जगत देख लो।
भूत-भविष्य, चर-अचर जो भी चाहे वो देख लो।।

पर नहीं देख सकते मुझको, अपनी इस दृष्टि से।
योग ऐश्वर्य देखोगे मेरा, नेत्रों की दिव्यशक्ति से।।
संजय बोले! सुनो राजन, अर्जुन से ये कहकर के।
विश्वरूप दिखलाया कृष्ण ने, महायोगेश्वर बनके।।

अनेक मुख, अनेक नैन, दर्शन हैं ये अति अद्भुत।
दैवी आभूषणों से अलंकृत, दिव्य शस्त्रों से युक्त।।
दिव्य वस्त्र मालायें धारण, फैल गई दिव्य सुगंध।
चारों ओर फैला मुख था, ना आदि था ना था अंत।।

विश्वरूप के दिव्य तेज से, बिखर गया प्रबल प्रकाश।
हजारों सूर्यों से भी नहीं, फैला सकता यह आकाश।।
अर्जुन ने देखा जब देवों के, देव का अद्भुत विश्वरूप।
हजारों भागों में विभक्त, ब्रह्मांड का दिखा हर स्वरूप।।

आश्चर्यपूर्वक रोमांचित होकर, अर्जुन ने किया प्रणाम।
हाथ जोड़ सिर झुकाकर, विश्वरूप का किया सम्मान।।
अर्जन बोले आपके अंदर, सभी देव व प्राणी विराजते।
दिव्यसर्प, ऋषि, मुनि, शिवजी और ब्रह्माजी सजते।।

मुकुट, गदा और चक्र से, आप हैं अत्यंत सुशोभित।
पर दिव्यरुप आपका, तेज प्रकाश से है आच्छादित।।
मुख से निकल प्रज्वलित अग्नि, हो रही अतिप्रचंड।
लग रहा इस दिव्य तेज से, जग हो जायेगा भस्म।।

आपसे ही परिपूर्ण है ये, गगन, भूमि और हर दिशा।
भय से पर तीनो लोकों की, अब हो रही है दुर्दशा।।
सभी देवता हाथ जोड़के, आप में ही प्रवेश कर रहे।
महर्षि और सिद्धज्ञानी, "कल्याण हो" यह जप रहे।।

उदर और हाथ पैरों का, बड़ा भयानक विस्तार है।
दाँतों का भयानक रूप, देख मेरा भी बुरा हाल है।।
रंगों से जगमग आप, नभ से शीश स्पर्श कराते।
हे विष्णु! मुख फैला, आँखें बड़ी-बड़ी चमकाते।।

ऐसा रूप देखकर केशव, धीरज मेरा खो रहा है।
हृदय मेरा घबरा रहा, और शांत नही हो रहा है।।
विकराल दाँत और प्रलय अग्नि सा देख मुख।
हे देवेश! नहीं मुझे अब, दिशाओं की कोई सुध।।

देख रहा हूँ आपके मुख में, धृतराष्ट्र के पुत्रों को।
भीष्म पितामह, गुरू द्रोण, व अनेक सम्राटों को।।
वीर योद्धा हमारे भी, भयानक मुख में घुस रहे।
कुछ के तो सिर आपके, दाँतों के मध्य पिस रहे।।

हर दिशा के लोगों को ये, मुख चाटकर निगल रहा।
हे विष्णु! आपका ताप, संपूर्ण जग को झुलस रहा।।
हे देवेश! उग्र रूपधारी, आप कौन है मुझे बतलाइये।
नमस्कार वंदन आपको, मुझ पर प्रसन्न हो जाइये।।

आदि भगवन आपके बारे में, और जानना चाहता हूँ।
आपके विराट रूप का, प्रयोजन समझना चाहता हूँ।।
भगवान बोले मैं महाकाल, विनाश करने आया हूँ।
तेरे युद्ध करे बिना भी, मैं इन्हें ले जाने आया हूँ।।

मेरे से ही केवल इनकी, मृत्यु का विधान रचना है।
शूरवीरों की मृत्यु का, तुमको बस निमित्त बनना है।।
मरे हुओ को मारने का, फिर तुमको ये कैसा डर है।
निडर होकर युद्ध करो, जीत तुम्हारे कदमों पर है।।

तुम हो मीत मेरे

अर्चना प्रकाश
लखनऊ, भारत

कान्हा तुम हो मीत मेरे,
साँसों से बोलूँ गीत तेरे।
मैं जोगन हूँ तेरी कन्हैया,
बीच भँवर मेरी जीवन नैया।
आ जाओ तुम बन के खिवैया,
दे दो कुछ पल प्रीत भरे।
कान्हा तुम हो मीत मेरे…

जग ने छीनी मुझ से,
हर प्यारी सौगात मेरी।
सब जीत गए मुझ से,
मैं रही पराजित सब से।
थाम के तुम बहियाँ मोरी,
दे दो कुछ पल जीत भरे।
कान्हा तुम हो मीत मेरे…

ये दुनिया कंस दुर्योधन की,
छल कपट द्वेष पाखण्डों की।
'सम्भवामि युगे' की छेड़ो मुरली
रच दो वृंदावन गली गली।
भुजे तन्दुल भोग लगा कर,
दे दो कुछ पल विश्वास भरे।
कान्हा तुम हो मीत मेरे,
साँसों से बोलूँ गीत तेरे।

कान्हा के हाथों में

संगीता अग्रवाल
अहमदाबाद, भारत

बाद में हाथ, पहले बनती है लकीरें,
बाद में तन, पहले बनती है तकदीरें,
कठपुतली हैं हम, कान्हा है परमात्मा,
कान्हा के हाथों में है सबकी जंजीरें।

भाग्य तो कर्मों का ही खेल है,
अगले पिछले जन्मों का मेल है,
कर्मों की गति सँवारती है तकदीरें।
कान्हा के हाथों में है सबकी जंजीरें।

किसी की जिंदगी में है फीके रंग,
तो कोई है इंद्रधनुष के संग,
पहले ही बन चुकी सबकी तस्वीरें।
कान्हा के हाथों में है सबकी जंजीरें।

कर्मों को कान्हा के वंदन से सींचे,
तो भाग्य खुद चलेगा हमारे पीछे,
स्वर्ग बन जाएगी फिर ये जमीं रे।
कान्हा के हाथों में है सबकी जंजीरें।

श्याम नाम अनमोल

पुष्प लता शर्मा
नई दिल्ली, भारत

रसना! हरि गोविंदम् बोल!
मोह जगत सब मिथ्या माया, श्याम नाम अनमोल।
राज महल धन सोना-चाँदी, तज अवगुण गुण तोल।
सूर्य, चंद्रमा, जल, थल, हरि से, हरि हर मोल अमोल।
सुन चंदन वन लता-वल्लरी, खग-गण करत किलोल।
सफल बना ले नर जीवन को, पट अंतस मन खोल।
पुष्प! चरण-रज भाल सजा ले,नाम अमिय रस घोल।

कृष्णाश्रय

आशीष कुमार यादव
जबलपुर, भारत

सुख दुख मेरा कृष्ण तुम्हीं।
सुबह, शाम और रात तुम्हीं।
सूर्य, चन्द्र, ब्रह्मांड तुम्हीं।

तुम्हीं सखा हो, तुम्हीं शत्रु भी, हो जीत मेरी और हार तुम्हीं।
काल तुम्हीं, अकाल तुम्हीं, भूत, भविष्य, वर्तमान तुम्हीं।

पानी, पावक और प्राण तुम्हीं, मान तुम्हीं सम्मान तुम्हीं, भीड़-भाड़ एकांत तुम्हीं।
तुम्हीं स्वप्न और सार तुम्हीं, पशु पर्वत और पेड़ तुम्हीं ।
फूल शूल और पात तुम्हीं।

सुख-दुख मेरा कृष्ण तुम्हीं।
उत्कर्ष तुम्हीं आघात तुम्हीं,
जीव तुम्हीं निर्जीव तुम्हीं।

हो लाभ तुम्हीं अलाभ तुम्हीं। साकार तुम्हीं निराकार तुम्हीं। तुम्हीं छंद, अलंकार तुम्हीं।
क्रिया कर्म करता तुम्हीं, ज्ञान ज्ञेय ज्ञाता तुम्हीं।
मुझमें मैं और मेरा कुछ भी अब शेष नहीं,
आलाप तुम्हीं, हो विलाप तुम्हीं, और जो कुछ है सब कृष्ण तुम्हीं।
कृष्णाश्रय अब निवास मेरा, तन मन वचन सब कृष्णमय,
कृष्ण मेरी हर श्वास तुम्हीं।

हे कृष्ण कन्हैया

चित्र भूषण श्रीवास्तव "विदग्ध"
जबलपुर, भारत

गोकुल तुम्हें बुला रहा, हे कृष्ण कन्हैया!
वन-वन भटक रही हैं, ब्रजभूमि की गैया।
दिन इतने बुरे आये कि, चारा भी नहीं है।
इनको भी तो देखो ज़रा, हे धेनु चरैया!

करती है याद, देवकी माँ रोज तुम्हारी।
यमुना का तट, और गोपियाँ सारी।
गई सूख धार यमुना की, उजड़ा है वृन्दावन।
रोती तुम्हारी याद में, नित यशोदा मैया।

रहे गाँव वे, न लोग वे, न नेह भरे मन।
बदले से हैं घर द्वार, सभी खेत, नदी, वन।
जहाँ दूध की नदियाँ थीं, वहाँ अब है वारुणी।
देखो तो अपने देश को, बंशी के बजैया।

जनमन न रहा वैसा, न वैसा है आचरण।
बदला सभी वातावरण, सारा रहन सहन।
भारत तुम्हारे युग का, न भारत है अब कहीं।
हर ओर प्रदूषण की लहर आई कन्हैया।

आकर के एक बार, निहारो तो दशा को।
बिगड़ी को बनाने की, जरा नाथ दया हो।
मन में तो अभी भी, तुम्हारे युग की ललक है।
पर तेज विदेशी हवा में, बह रही नैया।

कृष्णमय हो जाता है निधिवन

महेश चंद्र द्विवेदी
लखनऊ, भारत

कृष्ण पक्ष की कृष्ण निशा में
जब छा जाता है अभेद्य तम।
हाथों हाथ न सूझता कुछ भी
कृष्णमय हो जाता है निधिवन।।

सुशृंगारित राधा हैं आतीं
पुकारती फिरती किशन किशन।
कृष्ण कहाँ रुक पाते हैं तब
आकुल हो धाते राधे-मिलन।।

वृंदा की घनी वल्लरियों में
छिपकर नटवर करते नर्तन।
रास रचाते राधा मोहन
मोहित हो जाते जड़-चेतन।।

प्रकृति नटी बिसार सुधि-बुधि
हो जाती अविरल नृत्य मगन।
यही नृत्य है सार सृजन का
यही मृत्यु का भी आवर्तन।।

मेरा कृष्णा

मधु खन्ना
ब्रिज़बन, ऑस्ट्रेलिया

हे कृष्णा, हे मुरारी
कृष्ण मोरे मन की हर लो पीर
मन चंचल कैसै मैं बाँधू
कुछ तो भर दो धीर
हे कृष्ण मोरे मन की हर लो पीर
चहूँ ओर मेरा मन है भटका
कुछ तो जीवन में है अटका
तन मेरा काला, मन भी है काला
कर दो जीवन में उजियाला

मैं तो केवल माटी की मूरत
देख सकी ना तेरी सूरत
सुंदर गुण भर दो
हे कृष्णा मोहे ….

मेरे तन की काली काया
भेद छिपे ना कैसी माया
विपदा अंधकार है छाया
बस तेरे ही प्रेम का साया

प्रभु पड़ूँ मैं तेरी शरणा
मेरी विपदा तुझ को हरना
मन को धीर धरो
प्रभु जी मेरे अवगुण चित ना धरो।
मेरे मन की गति तुम जानो
मेरा मन बस तुम पहचानो
फिर काहै तुम धीर धरो
यूँ चंचल मैं उछल रही
मैं मूरख तुझ को ना जानूँ
रूप तेरा मैं ना पहचानूँ

मेरे कृष्णा आस यही है
मन की केवल प्यास यही है
मुरली मनोहर तुझ को पाऊँ
तेरे भजन जगत में गाऊँ
तेरे दर्शन से प्यास बुझाऊँ
मेरे मन की पीड़ा हर ले
चिंता मेरी हरि तू हर ले।

स्वधर्म का पाठ पढ़ाया
जगत जाल की गहरी माया
यही तो गीता में बतलाया
कैसै मैं नीरस रह पाऊँ
जल बिन मीन भाँति मर जाऊँ
प्रभु तुम्हीं उपचार करोगे
मेरी वीणा में रस भर दोगे
देह नहीं, आत्म का ज्ञान
दृष्टि सूक्ष्म हो, मानव कल्याण

आशा, आग्रह दोनों जाएँ
समत्व बुद्धि हम जीवन पाएँ
राग द्वेष को दूर भगाएँ
आवेग, आकर्षण दूर भगाएँ
स्वार्थ दूर, परमार्थ बड़ाएँ
जय पराजय पर तोले ना जाएँ
शरण प्रभु हम तेरी पाएँ।
तेरे ही गुण गाते जाएँ।

कृष्ण कृष्ण बोलि

पुष्पारानी गर्ग
इंदौर, भारत

गानौ होय तौ रेन दिन राधे कृष्ण गाइये।
राधेकृष्ण नाम बोलि बोलि सुख पाइये।
जानौ होय तौ एक बार नंदगाम जाइये।
बरसाने में राधे जू को सीस झुकाइये॥

सुनानौ जो होय हरि कीर्तन सुनाइये।
राधेकृष्ण धुन में प्यारे नाचिये नचाइये।
देखीवौ जौ चाहो नैक वृंदावन जाइये।
साँवरे बिहारी जू के दरसन पाइये॥

आपुनौ बनानौ होय कृष्ण कूँ बनाइये।
तन मन प्रीति सबु कृष्ण सौं लगाइये।
परिकम्मा करनी होय तौ गिरिराज जाइये।
पुष्प स्याम सुंदर जू की झाँकी करि आइये॥

जीवन के कछु दिन ब्रज में बिताइये।
बृजवासिन ते माँगि माँगि टूक खाइए।
ब्रज रेणु में जाय लोट यूँ लगाइये।
प्रेम रस पान करि छकि छकि आइये॥

नैनन में कृष्ण जू की मूरत बसाइये।
कृष्ण कृष्ण बोलि प्रेम नीर छलकाइये।
प्रेम भरी जमुना में डुबकी लगाइये।
मानस जन्म प्यारे धन्य कर आइये॥

कुण्डलियाँ

सन्तोष कुमार प्रजापति 'माधव'
महोबा, भारत

राधा, मीरा धन्य हैं, जपा तुम्हारा नाम।
सखा सुदामा के बने, सभी सुखों के धाम।।
सभी सुखों के धाम, द्रौपदी चीर बढ़ाया।
याद किया गजराज, मगर से पैर छुड़ाया।।
'माधव' कहते कृष्ण, प्यार मिल जाये आधा।
सफल जन्म लूँ मान, सिफ़ारिश कर दो राधा।।

चोरी माखन नित करें, नटखट माखन चोर।
जाते उनके ही सदन, जहाँ नेह उर भोर।।
जहाँ नेह उर भोर, करें पावन घर जाकर।
भर देते धन-धान्य, जरा सा माखन खाकर।।
कह 'माधव' कविराय, नहीं माधव की खोरी।
अनासक्ति सँग भक्ति, कराती खुद ही चोरी।।

जय श्री कृष्ण

कलणि विहंगा पनागॉड
बण्डारगम, श्री लंका

मंदिर-मंदिर जा आपको, नहीं ढूँढूँगी मैं अब से,
जंगल और मरुस्थल में, नहीं ढूँढूँगी मैं अब से,
पार सात समुन्दर करके, नहीं ढूँढूँगी मैं अब से,
मुझे पता है आप बसे हैं, दिल में मेरे जब से।

बदन को ढकने सस्ते में ली, ओढ़नी मुझको काफ़ी है,
पेट को भरने चुल्लू-भर का, पानी ही मुझको काफ़ी है,
रहने हेतु छोटे छप्पर की, हल्की छाया भी काफ़ी है,
जीवन में हे कान्हा, आपकी शरणागत काफ़ी है।

सूर्य-रश्मि कैसी स्वर्णिम, मृदु चाँदनी जब ताकती हूँ,
बंसी की ध्वनि गिरिधर की, तब ख्यालों में बजती है।
रूप आपका सुभग सलोना, स्वर मीठे-मीठे हैं भाते,
अंतर-आत्मा को ये मेरी, धीरे से चैन दिला जाते।

हालाँकि आपका जन्म हुआ भारत माता के अंक,
नज़र आपकी पड़ती चारों ओर दुनिया पर निशंक,
आपकी करुणा अपरंपार, आपकी लीला है विख्यात,
बरसती रहे हृदय में आपकी, सदा गुण-वर्षा सुख्यात।

तड़के से शाम होने तक, अन्य कामों में जब लगती हूँ,
"जय श्री कृष्ण" मंत्र से शांति, अपने मन में भरती हूँ।
बिलख-बिलखकर रोती, हँसी-ठिठोली में डूब जाती हूँ,
"जय श्री कृष्ण" मंत्र जपूँ, मैं तसल्ली मन की पाती हूँ।

तुम्हारा नाम

बशीर अहमद मयूख
कोटा, भारत

शरद की चाँदनी शायद तुम्हारी देह से निकली
तुम्हारी साँस का सौरभ चुरा लायी है पुरवाई
मलय की गन्ध ने माधव! तुम्हारा नाम टेरा है
वाह! 'माखनचोर' यह उपनाम तेरा है।

तुम्हें आवाज दी सबने चमन में, कोहसारों में
गोपी कहें पागल पपीहे सी पुकारों में
व्यंग्य से घायल उद्धव को बान मारा है
मदनमोहन कहाँ? गोपी ने पुकारा है

तुम्हारा नाम शहनाई, तुम्हारा नाम पुरवाई,
तुम्हारा नाम जन्नत है, गजल है, गीत-रुबाई
तुम्हारा नाम राधा है, तुम्हारा नाम वृन्दावन,
गिरिधर! क्या कहूँ तुमको, तुम्हारा नाम वंशी धुन
तुम्हारे नाम का ही नाद, मेरे छंद में बोला,
भगत और भगवान के सम्बन्ध में बोला।

सजे जो फूल काँटों पर, तुम्हारा नाम शबनम है
तुम्हीं हो तत्त्व मसि मेरे, तुम्हारा नाम सोऽहं है,
पतझड़ के मारों ने, तुम्हारा नाम जब टेरा
वहीं पर पालकी रख दी बहारों की कहारों ने।

कान्हा नाम

दिगम्बर नासवा
क्वालालामपुर, मलेशिया

इस मुई मुरली को कब विश्राम है,
है जहाँ राधा वहीं घनश्याम है।

बाल यौवन द्वारका के धीश हों,
नन्द लल्ला को कहाँ आराम है।

हाथ तो पहुँचे नहीं छीके तलक
गोप माखन चोर बस बदनाम है।

पूछ कर देखो बिहारी लाल से,
है जहाँ पर प्रेम वो ब्रज-धाम है।

रास हो बस रास हो गोपाल संग,
गोपियों का घर न कोई ग्राम है।

हे कन्हैया! शरण में ले लो मुझे,
तू ही मेरा कृष्ण तू ही राम है।

धर्म पथ पर ना कभी विचलित हुए,
कर्म का उपदेश कान्हा नाम है।

कण कण में हैं कृष्ण

माया बंसल

ऑरेंज, यू.एस.ए.

प्रात: उगते सूरज में मैं, गोविंद की मुखछवि देखूँ
मंदिर के बजते घंटों में, कृष्ण नृत्य की थाप सुनूँ
भजनों की स्वरलहरी में, भक्तिन मीरा को याद करूँ
भक्तजनों की टोली में, गोपी ग्वालों की छवि देखूँ।

मौन खड़े वृक्षों में देखूँ, श्याम खड़े हैं मंदस्मित
मन मोहिनी राधा देखूँ पुष्पों में, मैं हूँ विस्मित
कृष्णमयी सारी धरती, पर्वत झरने अरु अम्बर
टिम-टिम तारे सूरज चंदा, नदिया नीरद सागर
कृष्ण अखंड प्रकाश पुंज, इक विग्रह में नहिं सीमित
प्रेममय नयनों से हों, जग के कण-कण में भासित।।

कैसे कह दूँ सब माया है, जग भ्रम जगजन मिथ्या
शिव सुंदर चहुँ ओर दिखे, तो सदा सनातन सत्य
अहंकार ही माया है जो, आए पद काया धन से
नित चाह अधिक की वासना, जाए न मोहित मन से।

वासनाओं का धुआँ छाँट, तप कर निकलूँ मैं ज्ञान रूप
सब ओर दिखे बस कृष्ण-कृष्ण, सबमें वही परमात्म रूप
मैं बूँद सरीखी सागर की, सागर अनंतानंत विशाल
महिमा अनंत विस्तार कृष्ण, कैसे कर सकूँ उनका विख्यान
शब्द लेखनी तुच्छ जान, देती हूँ मैं अब अल्पविराम
विट्ठल विभूत चित्त को दीखे, हर तिनके में बस श्याम-श्याम।।

कृष्ण ही ब्रह्म हैं

विवेक रंजन श्रीवास्तव
जबलपुर, भारत

कृष्ण ही विष्णु हैं, कृष्ण ही ब्रह्म हैं।
कृष्ण ही सत्य हैं, कृष्ण सर्वस्व हैं।
जीव रथ ये शरीर, सारथी कृष्ण हैं।

कृष्ण से गीत हैं, कृष्ण से मीत हैं।
कृष्ण से प्रीत है, कृष्ण से जीत है।
अनुकरण सब करें, अनुकरणीय कृष्ण हैं।

कृष्ण हैं शीर्षक, कृष्ण ही वाक्य हैं।
कृष्ण ही भाष्य हैं, कृष्ण अभिसार हैं।
कृष्ण ही मंजिलें, कृष्ण ही मार्ग हैं।

कृष्ण हैं काफिया, कृष्ण ही रदीफ हैं।
कृष्ण से नज्म हैं, कृष्ण ही वज्न हैं।
कृष्ण हैं हर किताब, हर्फ हर कृष्ण हैं।

कृष्ण सरकार हैं, वे सरोकार हैं।
कृष्ण व्यवहार हैं, कृष्ण त्यौहार हैं।
कृष्ण ही हैं हृदय, कृष्ण ही प्यार हैं।

कृष्ण हैं शाश्वत, कृष्ण अंतहीन हैं।
कृष्ण ही हैं प्रकृति, कृष्ण संसार हैं।
महज राहगीर हम, कृष्ण की राह है।

कृष्ण लीला

प्रीति गोविन्दराज
मैकलेन, यू.एस.ए.

शांति-दूत हैं, मेरे कृष्ण मुरारी
भक्तों की जो समझे पीड़ा सारी
दिव्य चंचल, जग-आयोजन,
अधर्म संहार करे सुदर्शन धारी!

देवकी पुत्र जन्म, पावन मानस
शक्ति अलौकिक जगा निर्बल में,
यमुना की बाढ़, रात अमावस
सब नतमस्तक एक पल में।

नन्द-यशोदा के आँगन में
पूतना की ममतायी छल में
गोकुल वासी देखे, अचरज में,
विष को तोडा जब, शिशु-बल ने।

भोली मैया को साक्षात ब्रह्मांड
मुँह में अपने दिखलाया
कभी ओखली को घसीटकर,
देव श्राप से तुरंत छुड़ाया।

इन्द्र देव की सुना दर्प गाथा,
जब भय में काँपे नर-नारी
गोवर्धन का आश्रय उँगली पर
पलट गई विपदा भारी!

नन्द नंदन का रंग साँवरिया
मोर मुकुट, संग बाँसुरिया
धूर्त-क्रूर आतंक का अंत,
अरिष्ट असुर या भुजंग कालिया।

गुरुकुल का प्रिय सखा, सुदामा
दारिद्र्य में कुंठित जब,
धन-धान्य कुछ माँग न पाया
राजन ने सहर्ष भेंट स्वीकार कर,
छवि आदर्श मित्र का दर्शाया।

मथुरा में जब फैला अधर्म का साया
कंस, शिशुपाल से उसे मुक्त कराया,
रुक्मिणी, राधा, मीरा और भामा
मोह-भक्ति का आँचल लहराया।

अर्जुन द्वारा मिला उपदेश
गीता ज्ञान का नित दोहन,
कर्मयोग का खोला भेद,
राधे-राधे, अद्भुत सम्मोहन!

कृष्ण: प्रेम बनाम परीक्षा

यूरी बोत्वींकिन
कीव, युक्रैन

जब स्वर्ग की सब पूजा करते थे- तुम ने
पहाड़ी को पूजा, श्रेय देकर
धरती को... अंधों का शिकार तुम बने
खुद पर उत्तरदायित्व लेकर
उस युद्ध का जो मानव का दर्पण बना...

कहते हैं: तुम रोक भी सकते थे!
हाँ, रोका नहीं, वह भी जानकर, वरना
जो लालच व क्रोध में जलते थे
वह कैसे जान लेते सब दुष्परिणाम?
बस दूसरे अवसर की प्रतीक्षा
करते थामे क्रोध... प्रेम तुम्हारा बनाम
रक्त-अग्नि की मानव-परीक्षा–
चुना तुमने दूसरा, स्वीकार करके श्राप...

मोहपूर्वक तब भी मुस्कुराया...
तभी हो गया मृत्यु से वह मिलाप
जो फिर वन-एकांत में निभाया...

योगेश्वर श्रीकृष्ण

निरुपमा मेहरोत्रा
लखनऊ, भारत

हे परम ब्रह्म श्री कृष्ण!
गोलोक त्याग धरा पर आए;
जगत कल्याण हेतु,
असुर विनाश हेतु,
ज्ञान भक्ति कर्म का मार्ग दिखाने,
एवम् धर्म संस्थापना हेतु।

अवतरित हुए तुम,
कारागार के बंधन में;
फिर अशेष संघर्ष यात्रा,
कंटकपूर्ण रहा हर पग;
और आसुरी शक्तियों का आतंक,
जिससे आर्तनाद कर उठा जग।

बाधाओं का अतिक्रमण कर,
हे कृष्ण! सफल योद्धा बन तुम,
जीत गए हर युद्ध,
जाना विश्व ने तुम्हें अपराजेय, प्रबुद्ध।

प्रेम की कोमलता तथा उसकी शक्ति को,
कण-कण में फैलाकर,
प्रेम भाव से सराबोर संसार किया;
प्रेम के शाश्वत तत्व को,
मानव मन का आधार दिया।

ब्रह्म और जीव की एकात्मता को,
राधा संग रास रचाकर,
कण-कण में विस्तार दिया।

सोलह कला संपूर्ण तुम,
योगेश्वर; पुरुष पूर्ण तुम।

दीन सुदामा के परम सखा,
भक्त के भगवान हो;
गीता ज्ञान सुनाने वाले,
आपको शत-शत नमन हो।

कृष्ण लीला

मोहनदास वैष्णव
बाँसवाडा, भारत

राधावल्लभ रासबिहारी,
मन मोहन मुरली वाला।
लीलाधर ने लीला की है,
सब को अचरज में डाला॥

कारागर के ताले टूटे,
मात पिता के बंधन छूटे।
वसुदेव देवकी के जाये,
कान्हा प्यारे गोकुल आये॥

मात यशोदा पुलकित हो गई,
कहलाये नंद के लाला।
लीलाधर ने लीला की है,
सब को अचरज में डाला॥

पूतना का उद्धार किया है,
नाग कालिया संहारा।
बकासुर और अघासुर को,
पलक झपकते ही मारा॥

गैया का चरवाहा बन के,
संग लिये सब ही ग्वाला।
लीलाधर ने लीला की है,
सब को अचरज में डाला॥

मान घटाया इंद्रराज का
नख पर गोवर्धन धारा।
पर्वत का पूजन करवाया,
सुखी हो गया ब्रज सारा।

राधा के संग रास रचाया,
गोपी मन भाने वाला।
लीलाधर ने लीला की है,
सब को अचरज में डाला॥

मामा कंस अत्याचारी था,
उसका भी उद्धार किया।
बने भक्तवत्सल मनमोहन
भक्तों को भव पार किया॥

कर्म योग की शिक्षा देकर
अर्जुन को भी संभाला॥
लीलाधर ने लीला की है,
सबको अचरज में डाला॥

ब्रज छोड़ा द्वारिका सिधारे,
सुन्दर नगरी बनवाई।
सूर मीराबाई की भक्ति,
श्याम के मन को भी भाई॥

"मोहन" को वर दे दो मोहन,
जपा करे तेरी माला।
लीलाधर ने लीला की है,
सबको अचरज में डाला॥

कृष्ण, राम और मैं

उषा मेहरा
ह्यूस्टन, यू.एस.ए.

तुम कृष्ण होगे मीरा के, कृष्ण होगे राधा के
प्रियवर हो गोपियों के, नटवर हो साथियों के।
हो यशोधरा के लाल, और नन्द जी के बाला
हो आसुरों के काल, ब्रजबासियों की हाला।

मेरे लिए हे कृष्ण तुम, सीता के राम हो
दशरथ के लाल हो, लक्ष्मण के नाथ हो।
हो कैकई के प्यारे, भरत के भाई न्यारे
ऋषियों के प्राण रक्षक, अयोध्या के दुलारे।

शबरी की भाँति, हर पल की आस हो
घट घट में व्याप्त हो, सब की साँस हो।
इस तत्व में समाऊँ, स्वयं को मिटाऊँ
ब्रह्म भास पाऊँ, तब एक भाव हो।

कृष्ण योग

पूजा लाल
प्रयागराज, भारत

लेकर आए जब संदेश ब्रज में माधव का,
आनंद से भर गया मन नीति निपुण उद्धव का,
पग पग जहाँ बिखरी थी स्मृतियाँ लीलाओं की,
कान्हा संग राधा की और ग्वाल बालाओं की।

संपूर्ण परिवेश जैसे कृष्णमय सा था,
तृण तृण भी कहता कथा सागर सा था।

सुध बुध भूल, प्रेम भक्ति में बँधी गोपांगनाएँ थीं,
कृष्ण को सुनने सुनाने को सभी में आकांक्षाएँ थीं,
नयनों में, मुखों में कान्हा की लीलाएँ थीं,
मिलन की आस और वियोग की कथाएँ थीं।

कृष्ण के सिवा और न कुछ कहने आईं थीं,
उलाहना में भी वो प्रेम के पुष्प लाई थीं।

मन जब प्रेममय हो कृष्ण में तो
योग की विधि कहाँ काम आती है,
प्रेम तो वो राह है जो
अंततः कृष्ण तक ही जाती है।

चेतना जब प्रेम की गहराइयों में पहुँच जाती है,
तब बुद्धि और तर्क से परे परम तत्व में लीन हो जाती है।

चकित कर दिया इस चिंतन ने उद्धव के विचारों को,
जो स्थापित करने आए थे योग की धारणाओं को।

निरुत्तर हो गए वो, यूँ गोपियों के आगे,
जैसे निर्गुण स्वप्न से कोई सगुण संसार में जागे।

मान बहुत दिया था स्वयं को ब्रह्म को जानने का,
था अभिमान प्रेम से अधिक ज्ञान को मानने का।

सोचा था दीक्षित कर देंगे योग के ज्ञान रूप से,
खुद ही अभिभूत हो गए प्रेम के स्वरूप से।

दिखा न सके ब्रह्म के विराट रूप को,
पर देख लिया गोपियों में उसी के प्रतिरूप को।

अर्पित कर दिया उद्धव ने अपने को उस क्षण में,
बसती है जहाँ कृष्ण भक्ति अवनि के हर कण में।

माधव ने यह लीला क्यूँ है रचाई,
उद्धव को आज ये बात समझ में आई।

ब्रज में उन्होंने योग का वो मार्ग दिखाया,
ज्ञान योग से उद्धव को कृष्ण योग में पहुँचाया।

तुला दान

सन्तोष भाऊवाला
बैंगलोर, भारत

तुला दान कर रहे कृष्ण पर रहा पलड़ा भारी
अखंड धन दौलत समक्ष तुलसी महिमा न्यारी
प्यार के दो मीठे बोल सारी दौलत पर है भारी
दुश्मन को भी दोस्त बना मिटा दे नफरत सारी।

जिनके एक पलड़े में हो प्यार और दूजे में दौलत
कहाँ कर पाते सच्चा प्यार हरपल रहता तड़पना
प्यार के वशीभूत ठुकरा दे जो दुनिया की दौलत
इतिहास के पन्नों पर लिख जाते वो नाम अपना।

तोल कर देख लो ऊपर ही रहे प्यार का काँटा
हो प्यार की जीत यही हर दिल की अभिलाषा
दिल और दौलत कभी भी रह सके ना बराबर
प्यार में है ताकत बड़ी इतनी सी है परिभाषा॥

मेरे कृष्णा

निशा प्रकाश
पूर्णिया, भारत

कृष्णा अवतरित हुए कारा में,
पहुँच गए नंद गाँव।
सलोनी सूरत मोहिनी मूरत,
यशोदा को मुख माहि
दिखा गए सम्पूर्ण ब्रह्माण्ड,
ग्वाल बाल संग माखन चुराते,
राधा संग रास रचाते ब्रजधाम,
कनिष्ठा अंगुलि पर उठा गोवर्द्धन
ग्वाल बाल की रक्षा करते,
जब जब गाँव में आती विपदा
कृष्णा हरदम रहते साथ,
कहाँ कहाँ तक गिनाऊँ उनके कार्य?
नहीं लेखनी में मेरे.....
सुदामा को तार दिया
मित्रता का ऐसा क़र्ज़ चुकाया,
विवाह रचाया रुक्मिणी से
जीवन भर साथ निभाया राधा से।
कंस से मुक्ति दिलायी,
सारी प्रजा हर्षायी,
ऐसा अवतारी देखा नहीं जग में,
कृष्णा के गुणगान कम नहीं हैं भाई।

सर्वव्यापी श्रीकृष्ण

आरती 'लोकेश'
दुबई, यू.ए.ई.

(देवकी)-गर्भ में तुम, (यशोदा)-अंक में तुम,
मुख में दिखते ब्रह्मांड तुम्ही हो।
तुम में जड़-मूल, तृण-पत्र तुम में,
अखण्ड वन के सुकाण्ड तुम्ही हो।

गौ-ग्वाल में तुम, ब्रजबाल में तुम,
मटकी भर दधि-माखन तुम हो।
चर-अचर में तुम, चल-अचल तुम में,
नंदबाबा के गृह-आँगन तुम हो।

तुम में संगीत, सुर-ताल में तुम,
मोहना! तुम्ही मुरलीधर हो।
आधार में तुम, शिखर तुम में,
कान्हा! रक्षणा गिरिधर हो।

तुम में है देव, अदेव में तुम,
वसुदेव के वासुदेव तुम्ही हो।
चतु:भुज में तुम, त्रिनेत्र तुम में,
भू-सृष्टि के त्रिदेव तुम्ही हो।

मीरा में तुम, राधामय तुम,
षोडश कला का काव्य तुम्ही हो।
सूक्ष्म भी तुम, विराट भी तुम,
पार्थसारथी संभाव्य तुम्ही हो।

चीर भी तुम, अचीर भी तुम,
कृष्णा के तारनहार तुम्ही हो।
चिंत भी तुम, अचिंत तुम में,
अच्युत के अवतार तुम्ही हो।

धुरी में तुम, घूर्णन में तुम,
गति-लय के चक्रधर तुम्ही हो।
प्रकाश में तुम, तमस तुम में,
इंद्रधनुषी अंशुधर तुम्ही हो।

गीता में तुम, उपदेश में तुम,
परमज्ञान संज्ञान तुम्ही हो।
वरुणा में तुम, करुणामय तुम,
दुष्टों का संधान तुम्ही हो।

विंद में तुम, प्रलय में तुम,
नैया के खेवनहार तुम्ही हो।
विरक्ति तुम, आसक्ति तुम में,
माया का भवसार तुम्ही हो।

कर्म में तुम, कर्त्ता में तुम,
हर क्रिया के करतार तुम्ही हो।
जन्म में तुम, मृत्यु तुम में,
प्राणों के भरतार तुम्ही हो।

आगत तुम में, विगत तुम में,
त्रय कालों का स्वरूप तुम्ही हो।
आरंभ तुम से, अंत तुम में,
अंततोगत्व विश्वरूप तुम्ही हो।

तुम में शांति, रण में तुम,
धर्म हित रणछोड़ तुम्ही हो।
नीरस में तुम, सरस तुम में,
नवरस का निचोड़ तुम्ही हो।

शाश्वत में तुम, क्षणभंगुर तुम,
लीला का शोभित सत्य तुम्ही हो।
निकृष्ट में तुम, धन्य में तुम,
पुण्यफल के कृतकृत्य तुम्ही हो।

अक्षय में तुम, विलय में तुम,
द्वारकाधीश! पर्याप्त तुम्ही हो।
तुम में सब तत्त्व, सर्वस्व आप्त,
जगत में सर्वव्याप्त तुम्ही हो।

अनहद का नाद

विनीता मिश्रा
लखनऊ, भारत

भाव भरा मन समझेगा
भाव की बहती बानी को।
भाव रहित न समझ सके
मेरी राम कहानी को।।

भाव भाव में मीरा खो गई
बिन देखे मोहन की हो गई।
विषदाता न देख सका
मीरा प्रेम दीवानी को।।

बहता पानी बहता जाए
इतनी कहानी कहता जाए।
पकड़ सको तो पकड़ लो आकर
इस बहते से पानी को।।

योगी आकर योग सिखाते
ज्ञानी हमको ज्ञान बताते।
मन मेरा थामे बैठा है
भीतर की नादानी को।।

कोई कहे तू अनहद नाद
कोई कहे तू प्रेम का राग।
कोई माने सरल मना
मैं सुनती प्रेम की बानी को।।

महामाया की वाणी

आरती 'लोकेश'
दुबई, यू.ए.ई.

मेरा वध तेरे वश नहीं कंस!
त्रेता युग का तू है अभिशाप,
इतिहास न देगा तुझे सुशंस।
अट्टाहस कर ले तू कितना,
निर्मम संहार का भोगेगा दंश।
दुष्कृत नाश धर्म संस्थापना,
हेतु अवतार विजय अवतंस।

मुझे नहीं छू सकता तू,
आसमान या ऊपरि भू,
मान मुझे न जग की काया,
मैं आई हूँ बन महामाया।
छ: नवजात शिशु हत्याएँ-
अवश्य लाएँगी विध्वंस।
मेरा वध तेरे वश नहीं कंस॥

मैं लाडली नंदबाबा की,
राजदुलारी यशोदा माँ की,
जानती हूँ कुकर्म सब तेरे,
काल की चक्की के हैं फेरे।
हाथ न काँपे पटक धरा पर-
देव अंशों पर प्रहार नृशंस।
मेरा वध तेरे वश नहीं कंस ॥

अष्टम पुत्र से भय अगाध,
अधमकृत रक्त बहा निरपराध,
मूढ़ निज रिपु न पहचाने,
एक से आठ गणित न जाने।
चुन लेता अपने विवेक से-
संहारक अकल्प को जैसे हंस।
मेरा वध तेरे वश नहीं कंस॥

भूला तू भागिनी का क्षेम,
कलंक बना सहोदर प्रेम,
रक्षाबंधन की रखूँ लाज,
वचन दिया भ्राता को आज।
लाख कोशिश तू कर देख-
नहीं खत्म होगा जदुवंस।
मेरा वध तेरे वश नहीं कंस॥

उग्रसेन को बेड़ी पहनाई,
देवकी कारागार भिजवाई,
प्रजा पर किया घोर आतंक,
सुयज्ञ किए अशुचि अपंक।
परम तेरा यह दुराचार-
अंतिम अब यह तेरा ग्रंस।
मेरा वध तेरे वश नहीं कंस॥

चतु:कोस दूर वह गोकुल में,
हड़कम्प मचेगा अरिकुल में,
मैं चली मोक्ष को उर्ध्वलोक,
निश्चित तेरा हश्र दृश्य शोक।
नियति न बिंधे तेरी घातों में-
लाख बिछा ले तू वितंस।
मेरा वध तेरे वश नहीं कंस॥

करती मैं यह आकाशवाणी,
ले मान मेरी तू भविष्यवाणी,
सुरक्षित जगह पहुँचे भगवान,
लेना तू चाहता जिनके प्राण।
काल रूप सम्मुख पाएगा-
प्रत्यक्ष तोड़ेगा तेरा अंस।
मेरा वध तेरे वश नहीं कंस॥

कंस का पश्चाताप

मंजु सिंह
शारजाह, यू.ए.ई.

हे देवकी भगिनी प्रिया
उद्विग्न है मेरा हिया
विधना ने खेला खेल क्यों
भाया ना भ्राता प्रेम क्यों?

सच है मैं लोभी राज्य का
बंदी किया पितु उग्र को
पर था तुझे गुड़िया मेरी
अधिकार मेरे प्यार का।

परिणय तेरा वसुदेव से
हर्षित हृदय था मोद में
वामा मनोहर सी बनी
जिसको खिलाया गोद में।

तुझ को विदा करते समय
अंतर व्यथित सा था मेरा
बचपन समेटे नयन में
रथ हाँकता था मैं तेरा।

“तेरा विनाशक जन्म लेगा
देवकी की कुक्षि से ---"
आकाशवाणी जब हुई
गिर पाए अश्रु न अक्षि से।

यह देववाणी कर्ण में
लावा सरित सम थी बही
अस्तित्व कंपित सा हुआ
अब डोलती थी ये मही।

देवों ने कैसा छल किया
मम मृत्यु हित तुझको चुना?
संबंध छलनी कर दिए
वो जाल था उसने बुना।

थी प्राणप्यारी बहन जो
वह काल की सूचक हुई
जिसका हृदय में वास था
वो ही हृदयबेधक हुई।

कैसे उठाता खड्ग मैं
मेरे हृदय का अंश थी
जीवित भी कैसे छोड़ता
मेरे लिए अब दंश थी।

थे कंपकपाते हस्त भी
किस भांति वध तेरा करूँ
वसुदेव की युक्ति चतुर
मेरे हृदय को भा गई।

था शत्रु मेरा विष्णु जो
सुत बन तेरा कल आएगा
पर जन्मते ही शिशु मुझे
वसुदेव दे कर जाएगा।

मन में पुलक तव पुत्रों को
झूला-झुलाने की रही
यह चाल श्रीपति की मगर
संबंधों की घातक रही।

तू लाडली मेरी सदा
निज रक्षणार्थ विवश हुआ
लेना उन्हें था अंक में
मैं भागिनेय: घातक हुआ।

मैं असुर था, मैं क्रूर था
बल के नशे में चूर था
हाँ स्वार्थ से भरपूर था
कायर था मैं, न शूर था।

अभिमान था निज शक्ति पर
स्व को अमर जाना सदा
भ्रम खंड तब ही था हुआ
मारी गई जब पूतना।

पर सत्य स्वीकारा नहीं
प्रभु को पुकारा भी नहीं
बस दुष्प्रयासों में मगन
करता प्रयास बुझे अगन।

दिन-दिन भयातुर हो रहा
उद्दंडता न तज सका
अपराध का मेरा घड़ा
भरता रहा, भरता रहा।

निशिदिन वही था ध्यान में
जाग्रत हो या कि स्वप्न में
वैरी समझ सुमिरन किया
था ध्येय कदाचित गुप्त में।

अब मृत्यु सम्मुख जब खड़ी
मनहर कृष्ण के रूप में
क्षण-भर मनस यह सोचता
अक्षम्य था हर कृत मेरा।

दुष्कर्म जो थे सब मेरे
थे हँस रहे मुझ पर खड़े
जब कृष्ण रूपी विष्णु ने
मुष्टिक प्रहार किए कड़े।

करना क्षमा मुझको पिता
मैं मातु अपराधी तेरा
भार्या क्षमा करना मुझे
भगिनी मैं पातक हूँ बड़ा।

है क्षमा प्रार्थी कंस यह
अपनी प्रजा संतान से
निशिदिन दुखित और
थी व्यथित जो मेरे अत्याचार से।

अधिकार इच्छित था मुझे
संपूर्ण तीनों लोक पर
पर रक्तसंबंधो का भी
रख मान मैं पाया नहीं।

कितना बली हो, शूर हो
पद के नशे में चूर हो
पापी भले हो क्रूर हो
संबंधों से यदि दूर हो।

वह चैन पा सकता नहीं
विश्रान्ति पा सकता नहीं
अंबर भले सेवक बने
चेरी बने चाहे मही।

यह स्वर्ण, माणिक और मोती
काम कुछ आया नहीं
यह ताज रत्नों से जटित
मुझको बचा पाया नहीं।

है काल निश्चित सत्य यह
स्वीकार मैं पाया नहीं
आधार सुख का प्रेम है
मैं ये समझ पाया नहीं।

भौतिक सुखों को त्याग यदि
सद आचरण मानव करे
हो प्रेम पूरित जन्म तब
सुख-शांति से जीवन भरे।

कृष्ण का गोकुल

गोपाल कृष्ण भट्ट 'आकुल'
कोटा, भारत

कृष्ण का गोकुल यशोदा नंद का नँदगाँव लिख दूँ,
कृष्णप्यारी राधिका वृषभानुजा का गाँव लिख दूँ,
नीति का ऐसा अनोखा ग्रंथ देखा ना अभी तक,
कूटनीतिक, राजनीतिक द्यूत का हर दाँव लिख दूँ।
कृष्ण का गोकुल.....

जसुमती का भाग देखो, देवकी का त्याग देखो,
गोपियों का राग देखो, कृष्ण का अनुराग देखो,
फिर बना ब्रजधाम मथुराधीश का परित्याग देखो,
द्वारिका के नाथ का गोकुल न लौटा पाँव लिख दूँ।
कृष्ण का गोकुल.....

गिरिशिखर को भी धरण कर, कंस का भी संहरण कर,
यादवों को भी उऋण कर, रुक्मिणी को भी शरण कर,
कृष्ण राधा के अनोखे, प्रेम की रज छू वरण कर,
धन्य है चैतन्य की ब्रज-भूमि भी है ठाँव लिख दूँ।
कृष्ण का गोकुल.....

पांडवों का पक्ष कर के, पार्थ का सारथ्य कर के,
कर्ण को निर्बल किया था, इंद्र ने भी स्वाँग धर के,
पांडवों ने भी घटोत्कच, वीर अभिमन्यु को खोया,
कौरवों की हार से इस युद्ध का पटदाँव* लिख दूँ।
कृष्ण का गोकुल.....

कृष्ण का संदेश गीता आज भी है सिद्ध जग में,
प्रेम का सानी नहीं स्वयमेव यह है सिद्ध जग में,
मोक्ष की हर कामना का ग्रंथ है 'गीता' अनोखा,
दे सभी को मार्गदर्शन ध्येय सच्ची छाँव लिख दूँ।
कृष्ण का गोकुल.....

*पटदाँव- पटाघात, पटाक्षेप

मातु दुलार करे हरि को

हरिवल्लभ शर्मा 'हरि'
भोपाल, भारत

मध्य निशा प्रकटे प्रभु जी, नभ रोहिणि भाद्रपदी इठलाती।
बन्धन टूट गए सब ही प्रहरी जन को निंदिया उलझाती।
कृष्ण को ले वसुदेव चले फिर पार किये यमुना उफनाती।
सौंप दिये नंद लाल यशोमति गोद लिये मन में हुलसाती।

मातु दुलार करे हरि को, मिसरी दधि माखन दूध खिलाती।
ग्वालिन छेड़ करे हरि से, बहुभाँति उन्हें दधि से ललचाती।
प्रेम से पास बुला गवली बिलिया भर छाछ में नाच नचाती।
व्यर्थ उलाहन दे यशुदा कह, कौन गली मटकी तुड़वाती।

निशि बासर नाम रटूँ उनका जिनकी महिमा अति पावन है।
मनमोहन धेनु चरावत है लगता जिनको प्रिय माखन है।
मुरलीधर तान सुनावत हैं सुर गोपिन के मन भावन है।
'हरि' कुञ्ज गली लगती उजड़ी बिन माधव भाय न सावन है।

पवनरेखा – एक माँ

उर्मिला चौधरी
दुबई, यू.ए.ई.

दिवस वह आया जिसका, किया बेसब्री से इंतज़ार।
मथुरा पुरी में घर-घर बहा, हर्ष और उल्लास अपार।।
पिता रूप में उग्रसेन की, खुशी का रहा न पारावार।
पा गोद में पुत्ररत्न उमड़ा, पवनरेखा का वात्सल्य बारंबार।।
यशस्वी बने पुत्र उसका, आशीर्वाद का हवा में हुआ संचार।
क्या होगा भविष्य पुत्र कंस का, माँ का हृदय रहा विचार।।

सूर्य उनके जीवन का उस पल, हुआ उल्टी दिशा से उदित।
गर्भनाल से जुड़ा वह बालक, माँ के गुणों से दूर कदाचित।।
मातृत्व सुख की आभा तले, अनजाना-सा भय हुआ अंकुरित।
कालनेमि का पुनर्जन्म वह, पल-पल बदला रूप अनपेक्षित।।
शून्य मानवीय गुण उसमें, अहं छद्म दंभ भरा अपरिमित।
पाल राक्षस उदर में माँ ने, विनाश का बीज किया पल्लवित।।

था तो बड़ा पराक्रमी लेकिन, पराक्रम उसका पूर्णतः निराधार।
दीन-हीन सबके जीवन पर, उसने किया सदैव तीक्ष्ण प्रहार।।
अपनी बहन देवकी जिससे, रखता बड़ा स्नेह व्यवहार।
भविष्यवाणी को सुन राक्षस ने, उस निर्दोष को दिया कारागार।।
किया गर्भ से उत्पन्न उसके, नवजात शिशुओं का संहार।
दिया क्रूर कंस ने प्रमाण, निष्ठुर होने का हर बार ।।

अपदस्थ कर पिता को अपने, शासक बना वह दुश्चरित।
शस्त्र कला तंत्र विद्या का ज्ञाता, तीनों लोक किये भयान्वित।।
हर माँ चाहती बालक उसका, बने विजयी और विख्यात।
पर झेल रहा दंश हृदय उसका, चहुँ दिश होने का कुख्यात।।
पुत्र के अनघ अपराध की, साक्षी सदा बनी वह दु:खित।
जंग लगी मूरत लोहे सी, दिन-दिन घटती गई वह पीड़ित।।

दिवस वह भी आया जिसका, करें व्यग्रता से इंतज़ार।
मथुरा आगमन कृष्ण का, जो विष्णु के अष्टम अवतार।।
कुत्सित बुद्धि कंस का, वहाँ आए करने को उद्धार।
सुन जन-जन की पुकार, मिटाया दनुज का क्रूराचार।।
संतोष और पीड़ा से माँ ने, विधि लेख को किया स्वीकार।
प्रजा रूपी संतान खातिर, था माँगा विष्णु से पुत्र निस्तार।।

द्वारिका गमन

अर्चना प्रकाश
लखनऊ, भारत

गोकुल विरज में मचो है शोर,
द्वारका जइहै आजु नंद किशोर।
रोवै सब नर नारी अँसुवन जोर,
ठाड़े गोप गोपी डगर दुहु ओर।

कान्हा न जावो मोहन हमहिं न छोर
पछरा खावें गोपी मूर्छित चहुँ ओर।
नैन जल भरे मुरारी न देखे केहु ओर,
पैंया परै गोपी विनती करै कर जोर।

मोहन तुमरे बिन होई न रैना न भोर,
रसवंती गोपिन्ह मन भयो चकोर।
छुट्यो साज सिंगार चुनर केहि ठौर,
उफनै कालिंदी लहरें करै बहु शोर।

व्यथित है मोहन उठै नहि पग पोर,
जगत नियंता दबावै शोक कर जोरि।
वृंदावन महु वृंदा डोलै घनन घनघोर,
धावै पवन अंधड़ उड़ावै बहु जोर।

कहत सबै मोहन गोकुल न छोड़
मोहन ही जाने पीर हिया की दुहुँ ओर।
प्रीत बिना नहि जीवन की डोर,
द्वारकाधीश तो है गोकुल सिरमौर।

गोकुल विरज में मचो है शोर,
द्वारका जइहै आजु नन्दकिशोर।

शिकायत नहीं
स्वरांगी साने
पुणे, भारत

सब कुछ
तयशुदा समय पर हो रहा था
दिन ढल रहे थे
रातें जा रही थीं
सब कुछ था जीवन में
सिवाय तुम्हारे।

एक दिन
किसी ने बताया
वहाँ उस वृक्ष के नीचे
बैठे हो तुम समाधिस्थ
वो दौड़ पड़ी
पर जैसे दूर-दूर होते चले गए
वृक्षों के झुरमुट
किस वृक्ष के नीचे
खोजती तुम्हें
वो रही अनजान।
उसने उठा लिया
वहीं पड़ा बाँस का टुकड़ा
फूँक दिए प्राण।

एक के बाद दूसरी
फिर तीसरी-चौथी
अनगिनत तानें
निकलती गईं
बिखरते गए सुर
पर वे भी नहीं खोज पाए तुम्हें।

वो दौड़ती रही वन प्रदेशों में
चुभते रहे पैरों में काँटे
बिना रोली ही
छोड़ते गए उसके निशान जंगलों में।

वो उठाती चली गई
मोरपंखों को
उनमें कहीं मिल जाओगे तुम शायद।

पर
ऐसा नहीं होना था
नहीं हुआ।

कितने दिन बीते
ये भी याद नहीं
आसमान होने लगा श्यामवर्णी
और बिजली की कौंध-सी
छाने लगी सफ़ेदी बालों में
आकाश का कालापन
आँखों के नीचे जमता चला गया।

उसने देखी
पानी में अपनी छवि
पर उसमें दिखाई देती रही
उसे तुम्हारी ही मूरत।

वो तुम्हें खोजती रही
इस खोज का कोई अंत नहीं
जैसे कोई मुक्ति नहीं इस श्राप से।

पर अब
उसने जान लिया है इस सत्य को
और खुद को
मुक्त कर लिया है अपने आपसे।

अब वो न राधा है
न मीरा
न रुक्मिणी
न सत्यभामा।

अब वो है
कृष्णा
श्यामा।

पुकारना चाहो
तो पुकार लो
उसे
इसी नाम से।

गोपियों की व्यथा

यशवीर सिंह
सोहार, ओमान

गोकुल से श्री कृष्ण ने मथुरा को प्रस्थान किया
गोपियों को विरह ने अतिशय ही बेहाल किया।
गोपाल के विरह में वे वन-वन में भटकने लगीं
तरुओं, वृक्ष, लताओं से कान्हा को पूछने लगीं।

कहकर गए थे परसों की, पर आज तक न आए
व्यथित इस हृदय को, किस भाँति अब समझाएँ?
हर पल राह निहार कृष्ण की, दुःख प्रकट करने लगीं
कृष्ण के विरह में इस तरह वे कहने लगीं।

गोकुल से जाने वाले, गोकुल में लौट आओ
मुरली की धुन सुनाकर, धीरज हमें बँधाओ।
हम सब तो जल रही हैं, विरहाग्नि की लपट में
आकर हमें बचाओ, सबको बचाने वाले।

ओ नाग के नथैया, ओ कंस के मरैया
वो रास फिर रचाओ, हे रास के रचैया।
खाती पछाड़ें मैया, जैसे हो कोई गैया
आकर उन्हें बचाओ, गायें चराने वाले।

ओ पूतना के मरैया, माँ यशोदा के कन्हैया
बलराम जी के भैया, गोवर्धन के उठैया।
हम सबको अब बचाओ, बंसी बजाने वाले
गोकुल में लौट आओ, गोकुल से जाने वाले।

सुन लो ऊधौ

विनीता मिश्रा
लखनऊ, भारत

छूकर मेरे मन का चंदन
देखो तुम भी हो गए कुंदन।
सोने में ज्यों सुगन्ध समाई
अब तुम में महके चंदन चंदन।
एक सहजता तुम में आ गई
भूल गए तुम सारा क्रंदन।
रेगिस्तान का फूल कभी थी
हँसी तुम्हारी अब सुंदरवन।
आर पार का खेल नहीं ये
लहरों में ही पलता जीवन।
मुक्तिमार्ग को तुम न खोजो
जग ही अपना सारा मधुवन।
कहें गोपिका सुन लो ऊधौ
बजती वंशी मेरे तन मन।
ज्ञान का तुम हो पाठ सिखाते
पात पात में दिखते मोहन।

कौन द्वारका बसते हो?

विनीता मिश्रा
लखनऊ, भारत

मैं मोहन तुम्हें ढूँढ रही,
तुम उद्धव बनकर मिलते हो।
मैं रस कविता होना चाहूँ,
तुम गीता ज्ञान से बहते हो।।

मैं राधा वन - वन डोल रही,
तुम मथुरा को पग धरते हो।
संसार मेरा बस मधुबन तक,
तुम सृष्टि नई नीति रचते हो।।

मैं धुन वंशी की खोज रही,
रण शंखनाद तुम करते हो।
मैं राधा प्रेम की धारा बस,
तुम विराट रूप में दिखते हो।।

महारास बस एक रात,
अब विरह नाग से डरते हो।
हे कान्हा! अब तो आन मिलो,
कौन द्वारका बसते हो?

उद्धव और गोपियाँ

रेखा राजवंशी

सिडनी, ऑस्ट्रेलिया

पहने पीताम्बर, पुष्पमाल
कानों में कुण्डल, तिलक भाल।
उद्धव ब्रज भूमि में आए
कान्हा का संदेसा लाए।

छूकर ब्रज की पद धूलि को
उद्धव के कोमल नयन भरे।
कितनी पावन है यह भूमि
कान्हा ने जिस पर चरण धरे।

उद्धव आए, उद्धव आए
ब्रज की गलियों में शोर हुआ।
कान्हा का संदेसा लाए
ये समाचार हर ओर हुआ।

कान्हा कैसे हैं बतलाओ
इस पेड़ तले बैठो, आओ।
कैसे रह पाते हैं हम बिन
या बिता रहे हैं दिन गिन-गिन।

उद्धव ने सबको शांत किया
सबको निर्गुण का ज्ञान दिया।
बोले श्री कृष्ण सर्व व्यापी
जिनसे डरते सारे पापी।

वे इस जग के निर्माता हैं
वे तीन लोक के ज्ञाता हैं।
वे रहते हैं जल में, थल में
सर्वत्र समाए पल-पल में।

उद्धव ने सबको बतलाया
तब चैन सभी के मन आया।
गोपियाँ मगर न शांत हुईं
पूछा जब उद्धव को पाया।

तुम आए हो तो स्वागत है
आओ बैठो कुछ बात करो।
पहले कुछ मीठे फल खाओ
फिर शीतल जल का पान करो।

क्या कान्हा याद हमें करते
क्या ठंडी आहें भरते हैं।
क्या मन की बात छिपाते हैं
क्या बतलाने से डरते हैं।

उद्धव ने कहा बताता हूँ
वे राजमहल में रहते हैं।
रक्षा करने में जनता की
कष्टों को सारे सहते हैं।

मिलता उनको न समय अभी
सो भी न पाते कभी-कभी।
अच्छा हो भूल उन्हें जाओ
मन को अब अपने समझाओ।

गोपियाँ और भी अकुलाईं
उद्धव की बात नहीं भायी।
बोलीं हमको न बहकाओ
झूठीं बातें न बतलाओ।

कान्हा के मन की क्या जानो
तुम कान्हा को क्या पहचानो।
कान्हा के साथ पले होते
बचपन से साथ रहे होते।

मन मात्र एक, दस बीस नहीं
जो मुरलीधर के साथ गया।
ये पंच भूत की देह बची
जीवन कान्हा के साथ गया।

जो तुमने प्रेम किया होता
जो अपना हृदय दिया होता।
वंशी की धुन जो सुन लेते
जो तुमने रास किया होता।

तो ज्ञात तुम्हें होता ऊधो
कि प्रेम अग्नि क्या होती है?
कैसे जीते हैं विरहा में
ये प्रेम शक्ति क्या होती है?

जाओ जाओ उद्धव जाओ
हमको न ज्ञान सिखाओ तुम।
ये प्रेम विरह तुम क्या जानो
अपनी दुनिया में जाओ तुम।

कब आओगे

मंजु सिंह
शारजाह, यू.ए.ई.

घन-श्याम आच्छादित गगन
घनश्याम प्रेमाकुल ये मन
निसिदिन प्रतीक्षित ये नयन
निद्रारहित कैसा शयन।

ये कुंज वन क्यों दहकते
वनपुष्प क्यों न महकते
खग-वृंद भी उद्विग्न है
क्यों अब नहीं हैं चहकते।

गोपाल भूले केलि सब
गैया भी जैसे क्षुब्ध अब
जमुना चली मंथर गति
आवेंगे मेरे श्याम कब?

ले शीश दधि मटकी चली
गोपी ठिठक रहती खड़ी
कान्हा छिपा होगा कहीं
खंडित करे मटकी अड़ी।

माखन वही मिश्री वही
गोपाल-गोपी सब वही
धूमिल सी है क्यों चाँदनी
अब रास भी रचती नहीं।

तू क्या गया तू ले गया
जीवन के हर आनंद को
संगीत भी अब तरसता
मुरली की मीठी तान को।

जमुना का तट सुनसान है
पनघट लगे वीरान है
वन वीथियाँ सुनसान हैं
पथ पर लगे बस कान हैं।

मोहन निरंतर नाम ले
राधा स्वयं मोहन हुई
मुरली तेरी जो सौत थी
शृंगार अधरों का बनी।

ये नेत्र भी पथराए अब
जिह्वा हुई है मूक सी
हर पल भ्रमित हैं कर्णपट
उठती है दिल में हूक सी।

मनमोहना कब आओगे?
कब तक हृदय तड़पाओगे
जलती हृदय की अग्नि पर
कब शीत जल बरसाओगे?

कहाँ ढूँढू तुम्हें

सीमा हरि शर्मा
भोपाल, भारत

छिपे हो रात के तम में,
कभी सित भोर दिखते हो।
कहाँ ढूँढू तुम्हें मोहन,
कहो किस छोर बसते हो।

तिमिर की घोर छाया में,
क्षणिक दर्पण दिखाते हो।
स्वयं को साध न पाऊँ,
कहीं खुद को छिपाते हो।
अगोचर तुम अखिलनन्दन,
मेरी पहचान तन नश्वर।
कहाँ ढूँढू तुम्हें मोहन,
कहो किस डोर बँधते हो।

सुदामा से नहीं तन्दुल,
न सधती भक्ति मीरा-सी।
न अंतर्दृष्टि सूरा सी,
मग़र ज़िद है कबीरा सी।
कहीं कुछ राह तो होगी,
करोगे पथ प्रदर्शन तुम।
कभी तो ढूँढ ही लेंगे,
कहाँ किस ठौर रमते हो।

कहाँ ढूँढू तुम्हें मोहन,
कहो किस छोर बसते हो।

कान्हा जब से गया

गोपाल कृष्ण भट्ट 'आकुल'
कोटा, भारत

कान्हा जब से गया था गोकुल, सुनसान हो गया था।
सूना हर पथ, यमुना तट वन, उद्यान हो गया था।

दिन-रात, देखते थे, पथ सब, इतनी सी थी आहट,
सांदिपनी आश्रम में पढ़ कर, विद्वान् हो गया था।

स्मृतियाँ ही शेष थीं तब वहाँ, बिखरी जहाँ तहाँ पर,
कैसे निर्मोही उनसे मनमोहना हो गया था।

दिन-रात बीतते, थे तब तो, स्मृतियों खण्डहरों में,
वृंदावन भी तब से जैसे, शमसान, हो गया था।

ऋतुओं के जैसे, वे दिन क्या, लौटेंगे कल फिर से,
सोचा पड़ी कुदृष्टि या उनसे, अपमान हो गया था।

जुगत, जसोदा, नंद, रोहिणी, नंदराय कर हारे,
गोपी गोप सभी प्रिय से क्यों, अनजान हो गया था।

अवतारी की माया से सब, भूले स्वप्न समझ कर,
वर्द्धमान को भविष्य का कुछ, अनुमान हो गया था।

प्यासी थी...

शैल अग्रवाल
बरमिंघम, यू.के.

तुम्हें ढूँढ़ने निकली
तो मथुरा तक जा पहुँची
तुम्हारे जन्म स्थल पर
कारावास की उस शिला पर
जी भरकर हाथ फिराया
पर मन में विशेष भाव न आया।
तुम ही न थे जब बाँके बिहारी
तो भला मैं कैसे टिक पाती
दौड़ी-दौड़ी गोकुल जा पहुँची
चौरासी खंभों में भटकी
माखन मिश्री का भोग लगाया
पर वहाँ भी तुम्हें ना पाया।
मोटा पंडित पैसे लूटे
वादे करे कितने सच्चे झूठे
बरसाना और नंदगाँव
थे हमारे अगले पड़ाव
वहाँ भी पर बस वही हुआ
शोर भरी राहें और उजड़े मंदिर
एक अनोखा बाज़ारवाद
गोवर्धन की परिक्रमा संग
घूम डाला पूरा ही ब्रज।
पहुँचे फिर जब हम वृंदावन
रम्य था और अति मनोरम
पर कान्हा नहीं
कान्हा की परछाइयों डूबा
मोर तोते तो दिखे सब
राधा-कृष्ण के सानिध्य का
पर असली सुख ना मिला।
एक ही रही तब अपनी साध
ढूँढूँ तुम्हें द्वारिका में जाकर
द्वारिका नगरी थी भव्य खड़ी
रहस्यमय और रोमांचक बड़ी
उमड़ती लहरों के किनारे
देखा जहाँ अनूठा
द्वारिकाधीश का मंदिर
भेट द्वारिका की वो यात्रा
रुक्मणि का अकेला मंदिर
कितनी यादें कितनी बातें
सोमनाथ का मंदिर भी
भव्य विशाल और रोचक
पर मन की प्यास
खींच ले गई भालका स्थल
कृष्ण ने जहाँ थे प्राण तजे
बैठी सघन उस वृक्ष के नीचे
सब जगह स्मारक ही दिखे
मूर्तियों में ढूँढ़ा किए हम तुम्हें
जगह-जगह और इधर-उधर
पर ना वो कृष्ण ना वो राधा
ना ही मीरा ही दिखी कहीं पर
बेचैन मन क्यों यूँ बावरा ढूँढ़े
अंतस में छुपा साँवरिया...

कहाँ हो तुम

रेणु चन्द्रा माथुर
जयपुर, भारत

भारी हर पल है लगता
चैन नहीं मुझको आता
विपदा आन पड़ी मुझपर
कृष्ण कहाँ हो तुम?

हर दिन याद करूँ तुमको
कैसे बात कहूँ तुमको
साँझ सवेरे तुम्हें पुकारूँ
कृष्ण कहाँ हो तुम?

नयनों से पानी है बहता
मन मेरा हर पल है रोता
मझधार पड़ी मेरी नैया
कृष्ण कहाँ हो तुम?

राधा से प्रेम किया तुमने
मीरा को मान दिया तुमने
मेरी भी पीड़ा हर लो
कृष्ण कहाँ हो तुम?

पुकार द्रौपदी की सुनी तुमने
अर्जुन को ज्ञान दिया तुमने
एक अरज मेरी भी सुन लो
कृष्ण कहाँ हो तुम?

मानवता है शर्मसार
फैल रहा भ्रष्टाचार
धर्म की हानि हो रही
कृष्ण कहाँ हो तुम!

मोहन मत जाना

कंचन पाठक
नई दिल्ली, भारत

ओ योगेश्वर जगत मोहना
इतनी अरज सुनो ना
मोहन मत जा ना।
वृन्दावन की गलियाँ रो रो
कान्हा तुम्हें पुकारे।
सूख गया सारा कजलीवन
यमुना जी के धारे।
वह संकेत स्थल सूना है
पीली गात व्यथा से।
मधुबन की साँसें बोझिल हैं
व्याकुल विरह कथा से।
बेबस आँखों से निर्झर का
झर झर कर बह जाना।
मोहन मत जा ना।
हे अक्रूर, यूँ हीं निष्ठुर
किस हेतु हुए जाते हो।
श्यामसुंदर प्राणों से प्रिय को
कहाँ लिए जाते हो।
अश्रु प्रवाह से गौवों की
आँखें भी हुई धुँआला।
श्याम रहो दृग पुतली में
ले श्रीमुख भोला भाला।
एकहिं रूप बसे जीवन भर
नैना हृदय समाना।
मोहन मत जा ना।
नहीं विलग हो सकते
प्रकृति पुरुष एक दूजे से।
जहाँ खड़ी मैं आवाजें दो
श्याम उसी कूचे से।
मैं बूँदें हूँ मेघ से टूटी
धूल में मिल जाऊँगी।
थाम लो बाँहें नीलसिन्धु
शतदल बन खिल जाऊँगी।
समय मोड़ दो पीछे कान्हा
फिर से रास रचाना।
मोहन मत जा ना।

बीच भँवर मत छोड़

कंचन पाठक
नई दिल्ली, भारत

बीच भँवर मत छोड़ कन्हाई।
प्राणों की चिर अभिलाषा ले
शरण तुम्हारे आई
कन्हाई!

बीच भँवर मत छोड़।
कैसे कहूँ गरुड़ के भय से
छुपे इधर हम आकर
जीने की कुछ चाह नहीं पर
वश प्रकृति के होकर
भूख विवश हो किए शिकार
हुई हमसे बड़ी ढिठाई।
कन्हाई।

बीच भँवर मत छोड़।
शरणागत हम श्याम तुम्हारे
हमको दान अभय दो।
बेबस कद्रू पुत्र परिजन को
श्री चरणों में आश्रय दो।
द्वीप रमण जाने को
कोई दो अब उपाय बतलाई।
कन्हाई।

बीच भँवर मत छोड़।

भ्रमर गीत

शैल अग्रवाल
बरमिंघम, यू.के.

मटकी फोड़ै और माखन खावै
राह चलत जो हमैं रिझावै
तुम ये कहो वो याद न आवै
जाकी मुरली पै हम नाचे
नित नित ही ता-ता थैया
भूल के अपनो घर संसार
लोक लाज बापू और मैया
वो ही सुध ना लेवैगो हमारी
मनमानी कैसी ये इसकी
छल चुको बहुत वो छलिया
छोड़ हमें मथुरा को जावै
बहलावन फिर दूत पठावै
पानी मैं क्यों चाँद दिखावै
बातों से और ना फुसलाओ
इतनो ध्यान हमारो तो
क्यों ना खुद मिलने आवै
एक वही सब कुछ तो वही
गोपी हम कान्हा है हमारो
कहियो तुम निठुर ते जाय
कान्हा की बाँसुरी
कान्हा से ज्यादा निर्मोही है
बिन कान्हा के
एक गीत ना गावे है
पनघट पर बैठी राधा
अँसुवन सुवन गागर भर लावे है
शब्दन की खिड़की पे बिखरी
आड़ी-तिरझी धूप
तिसपर तुम्हारी ज्ञान की बातें
और औघड़ अक्खड़ रूप
अँखियन किरकें भर-भर बरसें
कैसे इन बतियन को समझें
अँखियन रचे रमे जब मनमोहन
नयन बावरे तो दरसन को तरसें
एक मुरली की धुन ही हमैं सुहावै
रास रचाएँ कान्हा पलकन पे बैठे
तान पे जिनकी पग नूपुर थिरके
भोली हैं हम ब्रज की बिरहन बाला
बाट निहारें कब आवैगो नन्दलाला
अधर बाँसुरी शीश पर मोरपंख
दिखे ना कहीं पर नटवर नागर
बावरी-सी भटक रही बृषभान लली
ढूँढती अपने कन्हा को गली गली
सूनो सूनो उमड़ो बिखरो है पलपल
प्रतिक्षारत आकुल जमुन जी को जल
तरुवर पंछी तक दिखते व्याकुल
अगन लगाए है शीतल बंसीबट
जाओ भ्रमर तुम वापस जाओ
ज्ञान की यहाँ ना धूनि रमाओ
बृंदावन की कुंज गलिन में
महकेंगी ना फिर वो कलियाँ
एक कृष्ण के आने पर ही
मुस्काएँगी ब्रज की गलियाँ...

कैसे तेरा नाम जपूँ

करुणा पांडे
लखनऊ, भारत

हे कृष्ण कृपा करना मुझ पर, भक्ति प्रेम से मन हो पूर,
तेरे नाम का रहे सहारा, राग द्वेष से रहूँ मैं दूर।
झूठे काव्य ग्रन्थ को लिखकर, रहती हूँ मैं मद में चूर
हूँ दीन-हीन भिक्षुक सी मैं, तुम हो इस जग के नूर॥

समझ न पाती दीप्तीवरण किस भाषा में मैं बोलूँ,
ऐसी कहाँ तुला है जिस पर कान्हा तुमको मैं तोलूँ।
तुम हो सीमाहीन, छंद सीमा में मैं कैसे बाँधू
हे नाथ द्वारिकाधीश, थाल कुंठा का मैं कैसे खोलूँ॥ |

केशव तुम हो अपरिभाषित, चाहे कितने ग्रन्थ जपूँ,
प्रेम भक्ति के अपरिमित सागर, भवसागर मैं कैसे तरूँ॥
चेतना का चिंतन तुम्हीं हो, आत्मतत्व का मंथन तुम्हीं हो।
नदियों की चंचल सी धारा, गहन सा सागर तुम्हीं हो॥

वासुदेव के हृदय स्पंदन, नन्द के गोपाल तुम हो।
देवकी के हो तुम जाये, यशोदा के ललना तुम्हीं हो॥
राधिका की आत्मा तुम, रुक्मणी के प्रियतम तुम्हीं हो।
गोपियों का रास तुम हो, ग्वालों का संसार तुम हो॥

कुंती-पुत्र के सारथी तुम, दुर्योधन के मद-मर्दक तुम्हीं हो।
विराट स्वरुप के विस्तारक, अर्जुन के गुरु तुम्हीं हो॥
व्यास के मुखारविंद में, गीता का सब ज्ञान तुम हो।
दुष्टों के तुम हो संहारक, भक्तों के उद्धारक तुम्हीं हो॥

जड़-चेतन में छवि तुम्हारी, सर्वस्य सर्वज्ञ बस तुम्हीं हो।
करुण के हृदय स्पंदन में, साधना आराधना तुम हो॥
शिवम रूप की भव्य संस्कृति धर्म सारथी तुम ही हो।
तप्त हृदय की हर ज्वाला को हरने वाले तुम ही हो॥

वामन शब्द कोष है मेरा, तुम विराट हे स्वामी।
और कल्पना तम में भटकी, तुम उदयाचल गामी॥
करुणा के कुछ भाव सुमन, इन युगल चरणों में अर्पित।
मैं क्या जग ही कहता केशव, नमो नमामि नमामी॥

पार लगा दो

करुणा पांडे
लखनऊ, भारत

भक्तों का जीवन सँवारों ओ वंशी बजैया,
इक तुम्हीं हो सहारे मेरे कृष्ण कन्हैया।
जो उठाई कलम तो भाव मूक हो गए,
मन तुम्हीं में रमा अपनी सुधि खो गए,
देखी लीला अपरम्पार ओ ब्रज बसैया,
राह तुमसे मिली तृप्ति तुममे कन्हैया।
मेरा जीवन सँवारों ओ कृष्ण कन्हैया।
भक्तों का जीवन बचा लो ओ वंशी बजैया॥

जब दुखों ने घेरा शब्द हुए मौन,
भीगी आँखों से देखा- प्रश्न तुम्हारा-"तू कौन?"
द्वंद्व में पड़ कर याद हमें करते हो
प्रश्न-उत्तर की भीनी चदरिया बुनते हो।
कहाँ जाये किससे गिला करें खिवैया।
भक्तों का जीवन बचा लो ओ वंशी बजैया॥

कागासुर आया उसको मारा तुम्हीं ने,
पूतना की छाती को भी चीरा तुम्हीं ने,
शापित ताड़ को देव बनाया तुम्हीं ने,
शिशुपाल, जरासंध, कंस उद्धारे तुम्हीं ने,
इंद्र का मान-मर्दन करने वाले गोवर्धन उठैया।
भक्तों का जीवन सँवारों ओ वंशी बजैया॥

त्यागी दुर्योधन की खीर साग भोग लगाया,
सम्मान विदुर का, कान्हा तुमने बढ़ाया,
मुठ्ठी भर तंदुल के दानों पर राज लुटाया,
प्रेमी बन गोपियों संग रास रचाया,
सुदामा के दुःख-दर्द दूर करैया।
भव दुखों से हमको बचा लो कन्हैया॥

देवकी यशोदा के नयनों के तारे,
ग्वालिनों ग्वाल गौओं के हो रखवारे,
राधिका की साँस के तुम हो सहारे,
रुक्मणी के लिए तुम रिमझिम बहारें,
जग में हैं केवल निष्ठुर, प्रपंची सहारे,
पर परम कृष्ण हैं, मन करुण के खिलैया॥

माधव तेरे श्री चरणों में

शार्दुला नोगजा
सिंगापुर

माधव तेरे श्री चरणों में जो जैसा है, वैसा अर्पित
आर्द्र अरुण अड़हुल का आँचल, नाद शंख सागर में गुंजित
गंध, हवाएँ, ऋतु की डलिया, फल-फूलों से भरी-भरी सी
सब में है तू, तुझ में हैं सब, तू ही याचक, तू ही वन्दित!

उन्नत शिखर, घुमंतू बादल, रज नटखट शीशे चमकाती
उषा सुन्दरी, निशा सहचरी, संध्या वंदन, लीन प्रभाती
गोचर स्पर्श, खिलौने तेरे, बिखराये तूने गोपाला
तेरे अर्पण को वनदेवी, मोर-पंख पे मणि रख जाती!

भाव-रुँधे स्वर, प्रीत-जुड़े कर, शुचि, संपन्न, शुभ्र सब तेरे
तिमिर हृदय के, तुमुल विलय के, पातक-हरण ग्रहण कर मेरे
जीवन-धारा, कूल-किनारा, यश-अपयश, सुख-दुःख की लहरें
देय-अदेय, बिंधे छन्दों की बाँसुरिया वनमाली ले रे!

स्तुति श्री कृष्ण की

कौशल किशोर श्रीवास्तव
मेलबोर्न, ऑस्ट्रेलिया

किस रूप में देखूँ तुम्हें कृष्ण?
हे वासुदेव, हे देवकी नन्दन!
हे नन्द-किशोर, यशोदा नन्दन!
कहूँ तुम्हें मैं माखन चोर या गोकुल के गिरिधर?
कोई कहे गोपाल तुम्हें, कोई कहे मुरलीधर
मुग्ध गोपियों के वंशीधर, राधा के चितचोर!
दुनिया कहती राधा-कृष्ण, निर्मल प्रेम के तुम प्रतीक
धन्य हुए वृन्दावन वासी, सुन्दर सुगम बना यह लोक
पुलकित मन से गाते हैं हम 'स्तुति श्री कृष्ण की'।

हे गोपेन्द्र द्वारकाधीश,
मित्र सुदामा, दीन दुःखी, आए थे तेरे द्वार
छोड़ सिंहासन दौड़ पड़े तुम उनके सुस्वागत में
मानव मूल्यों की विजय हुई - तेरे घर आँगन में
पुलकित मन से गाते हैं हम 'स्तुति श्री कृष्ण की'।
क्रूर कंस के संहारक, द्वापर युग के नायक
मानव रूप में विष्णु आए, नीति धर्म के संस्थापक
कर्मयोग के अनुदेशक, चक्र सुदर्शन धारी
बल बुद्धि विद्या के पूजक, धर्म-युद्ध के अनुगामी।

महाभारत का युद्ध भयानक, कृष्ण अर्जुन के सारथि
गीता का उनको ज्ञान दिया, जीवन दर्शन का ग्रन्थ
वही विरासत हिन्दू धर्म का - खुशहाली का पंथ
भव-सागर भी पार कराए, कहते साधु-संत
भक्तिभाव से गाते हैं हम 'श्री कृष्ण की स्तुति'।

तू है मेरा कृष्णजी

पृथ्वी सिंह बैनीवाल
हिसार, भारत

तू ब्रह्म तू ब्रह्मांड है,
तू ही मेरी ज़ागीर है।
तू है मेरा कृष्णजी,
तू ही मेरी तकदीर है।।

कितने जन्म भटके,
जाने कहाँ थे अटके।
अब पूर्ण सचेत हूँ मैं,
अब नहीं रहेंगे लटके।।

जिन्दगी है भजन को,
सही कर रख लगन को।
अखिल विश्व प्रकाश है,
मौका है ईश जगन को।।

खुशियों का नीर हूँ,
खड़ा यमुना तीर हूँ।
तोड़ रहा भजन से,
आवागमन जंजीर हूँ।।

पुष्पों की वर्षा करने में,
कृष्ण नाम जपने मे।
आनन्द बहुत आता है,
कृष्ण कृष्ण भजने में।।

बैठ कर एकान्त में,
'पृथ्वीसिंह' शांत मैं।
हरदम गीत गाता हूँ,
कृष्णमय पात-पात मैं।।

श्याम जगत हितकारी

पुष्प लता शर्मा
नई दिल्ली, भारत

जयति-जयति जय कृष्ण मुरारी!!
मोर मुकुट सोहे मस्तक पर, अधर मुरलिया प्यारी।
रूप-चन्द्रमा दम-दम दमके, मनमोहन मनुहारी।
कानन कुण्डल मोती लटके, तन पीताम्बरधारी।
नयन कंज तन नीलनलिन नव, देख जगत बलिहारी।
वक्ष वृहद उर करुणा सागर, जग के पालनहारी।
चरणामृत धारा सुरसरि की, कृपा सिंधु बनवारी।
परम ब्रम्ह प्रभु नटवर नागर, ज्योति पुंज अभिसारी।
"पुष्प" चरणरज भाल लगा ले, श्याम जगत हितकारी।।

कृष्ण नमन

राकेश खंडेलवाल
सिल्वर स्प्रिंग, यू.एस.ए.

गीता शास्त्र प्रणेता माधव, मधुसूदन, घनश्याम
तुमको शत-शत वन्दन मेरा, लाखों-कोटि प्रणाम!

तुम विराट, तुम सूक्ष्म, सूक्ष्मतर, तुम ही सृष्टि रचेता
तुम ही सब प्रश्नों के उत्तर और तुम्हीं नचिकेता
तुम ही वाहन, तुम ही वाहक, हो सब के जीवन के
दृश्य तुम्हीं हो, और तुम्हीं हो अनदेखे हर क्षण से,

तुम हो खांडव वन की ज्वाला, तुम बासंती शाम
तुमको कोटि-कोटि वंदन हैं, लाखों-सहस प्रणाम!

कालसर्प के नाथ नथैया, तुम गोकुल के बाँके
एक तुम्हारी ही छवि आकर, ब्रह्मा, शंकर ताकें
अभिशापों के तुम्हीं निवारक, दुष्ट विनाशक तुम ही
तुम संस्थापक धर्म ध्वजा के, सत्य मार्ग तुम से ही

मधुर शांति की सरगम हो तुम, निशि-दिन आठों याम
तुमको शत-शत नमन करूँ मैं, अनगिन कोटि प्रणाम!

राजपुत्र के सखा अनूठे, मित्र सुदामा के भी
प्रीत निराली राधा की तुम, पूजित मीरा से भी
कूटनीतियाँ, राजनीतियाँ, युद्ध नीतियाँ तुमसे
तुम ही हो सर्वत्र अकेले, अंतरहित उद्गम से

कर्मयोग परिभाषित करता श्री कृष्ण का नाम
करूँ तुम्हारा चिंतन हर पल, करते हुए प्रणाम!

प्रार्थना

आशा मोर
पोर्ट ऑफ स्पेन, त्रिनिदाद एण्ड टोबागो

कान्हा तुम हो दु:ख भंजन, आ जाओ इस ओर।
छुपे कहाँ हो अब तलक, थामो अब तो डोर।।

फिर से आओ दुनिया में, दिखाओ अपनी झाँकी।
कलियुग में तुम्हारा आना, अब भी है बाकी।।

कोरोना के कारण विश्व, है सारा परेशान।
आ जाओ हे कृष्ण कन्हैया, कर दो अब उत्थान।।

उठाया गोवर्धन गिरि तुमने, नाथा कालिया नाग।
को नहीं जानें तुम्हरी ताक़त, कौन करै अब लाग।।

तुमने ही जितवाया महाभारत, हे कृष्ण मुरारी।
तुम्हरे ही कारण विजयी हुए अर्जुन, हे गिरिधारी।।

कोरोना तो है तुम्हारे लिए, एक चुटकी समान।
तुमने तो है विश्व को, दिया गीता का ज्ञान।।

थक गया है विश्व अब, निरखत तुम्हरी ओर।
आके बचा लो तुम अब, खिल उठे नयी भोर।।

घड़ा सब्र का भर चुका, ऊपर तक झकझोर।
और परीक्षा नाहिं लो अब, आ जाओ चितचोर।।

है दुख भंजन, हे करुणानिधि, तकूँ तुम्हारी ओर।
कैसे अब जीवन कटे, दिखे न कोई छोर।।

उथल पुथल है जग में देखो, हो रही मारा मार।
किससे कहें अब व्यथा हमारी, को है पालनहार।।

अंतस में है भीषण ज्वाला, उर न पावै चैन।
वाट तुम्हारी हम जोहत हैं, कटत नहीं दिन रैन।।

थक गए हैं अब तो सब, तुम नैया खेवनहार।
विश्वरूप दिखाओ अपना, लगाओ सबको पार।।

जीवन का सार

नमिता सिंह 'आराधना'
अहमदाबाद, भारत

जब जब निहारूँ मैं आईना
प्रतिबिंब तेरा ही पाऊँ कान्हा
भीड़ में हो कर भी तेरे बिन
मैं खुद को पाऊँ तन्हा।
तेरे ही गीत मैं गाऊँ
सपनों में तुझे ही सजाऊँ।
गोपियों संग तू रास रचाए
हर दिल को तू भाए।
तू कण-कण में विद्यमान
नहीं कोई तेरे समान।
तू ही है मेरा आराध्य
मन मगन पाकर तेरा सान्निध्य।
तुम बिन सूना है जहाँ
मैं तुमसे दूर हूँ कहाँ।
तुम मेरे हृदय में, प्राण में
निस दिन तुम ही हो ध्यान में।
मेरी साँस का गीत हो तुम
मेरी भावना की जीत हो तुम।
तुम हो परमात्मा का स्पर्श
मेरे पुलकित हृदय का हर्ष।
मेरे दिल में धड़कते हो सदा
मैं हूँ वहाँ, तुम हो जहाँ।
मेरी साँसों का आधार हो तुम
मेरे जीवन का सार हो तुम।

ॐ नम: कृष्णाय

विजय गिरि गोस्वामी 'काव्यदीप'
बाँसवाड़ा, भारत

मोर मुकुट अधरों पर बंसी, देख मन हर्षाय।
ॐ नम: कृष्णाय...ॐ नम: कृष्णाय...

चारु वदन पंकज सम लोचन, श्याम घटा सी लट।
मुख पर माखन लेप किये हैं, कान्हा बड़े नटखट।।
ग्वालों के संग कन्हैया तो, गौएँ खूब चराय।
ॐ नम: कृष्णाय...

बाल रूप में श्री कृष्ण ने, लीला कई बताई।
गोवर्धन उठाया, मारा कालिया, पूतना मार गिराई।।
अंत आया जब कंस का भी, उसे दिया मिटाय।
ॐ नम:कृष्णाय...

प्रेम का साँचा अर्थ बताने, आये श्री नंदलाल।
ऋषि तपस्वी बनी गोपियाँ, कीन्हा उन्हें निहाल।।
ज्यों सहस्त्र वर्षों का तप-फल, नंद यशोदा पाय।
ॐ नम:कृष्णाय...

जब जब धर्म की हानि होती, तब तब ले अवतार।
देवकी के घर जन्म लिया है, हैं जो भव भरतार।।
वसुदेव माथे पर लेकर, यमुना पार कराय।
ॐ नम:कृष्णाय...

फल की इच्छा किये बिना ही, दिया कर्म संदेश।
मानव ऐसा करेगा जो, दु:ख मिटे अरु क्लेश।।
कर्म फल तो मिलकर रहेगा, मधुसूदन बतलाय।
ॐ नम:कृष्णाय...

सखा सुदामा की देख दशा, कर देते उद्धार।
करुणानिधि श्री वासुदेव ही, जग के पालनहार।।
श्री कृष्ण शरण में जाए 'गिरि' जो, भव सागर तर जाय।
ॐ नम:कृष्णाय...ॐ नम:कृष्णाय...

नाम की महिमा

निरुपमा राय
पूर्णिया, भारत

कृष्ण नाम की प्रतिदिन प्रतिपल महिमा गाते हैं।
जब पीड़ा में प्राण फँसे, तब कृष्ण छुड़ाते हैं॥
ग्राह के मुख से गज को उसने ही छुड़ाया था
ले दशावतार प्रभु ने जग को भी बचाया था
प्रभु नाम की गंगा में हम नित्य नहाते हैं।
जब पीड़ा में प्राण फँसे, तब कृष्ण छुड़ाते हैं॥
मौन खड़ा था मूक बना, जब अर्जुन उस रण में
घोर निराशा और हताशा छाई थी मन में
तब कुंतीसुत को प्रभु गीता का ज्ञान बताते हैं।
जब पीड़ा में प्राण फँसे, तब कृष्ण छुड़ाते हैं॥
भरी सभा में दु:शासन ने जब द्रौपदी का चीर हरा
द्रुपद सुता के मन में भीषण दाहक दुख भरा
कहाँ छिपे हो मधुसूदन! सब मुझे सताते हैं।
जब पीड़ा में प्राण फँसे, तब कृष्ण छुड़ाते हैं॥
विकट घोर कलिकाल में कृष्ण नाम आधार
कृष्ण नाम पर ही टिका यह सारा संसार
मुरली मनोहर मनमोहन नटवर हमें लुभाते हैं।
जब पीड़ा में प्राण फँसे, तब कृष्ण छुड़ाते हैं॥
हर घड़ी प्रतिक्षण कृष्ण नाम की टेर लगाते हैं
प्रतिदिन प्रतिपल कृष्ण नाम की महिमा गाते हैं
जब पीड़ा में प्राण फँसे, तब कृष्ण छुड़ाते हैं॥
हे शरणागत वत्सल कृष्ण!

कृष्ण नाम अभिराम
गौरीशंकर वैश्य विनम्र
लखनऊ, भारत

योगेश्वर, गोपाल, बलि, गिरिधर, माखनचोर।
वंशीधर, गोविंद, हरि, नटवर, नंदकिशोर।

लीला गोपी - कृष्ण की, देती सर्वानंद।
परम शांति की खोज में, अंतस हो स्वच्छंद।

गीता में प्रभु कृष्ण ने, ओम कहा निज नाम।
भजता निर्गुण ब्रह्म जो, पाता ईश्वर धाम ।

छोड़ फलाशा कीजिए, जीवन में सत्कर्म।
नटवर ने समझा दिया, कर्मयोग का मर्म।

मोह रहित सर्वज्ञजन, भजते मुझको पार्थ।
मम अंशी जीवात्मा, शिष्य बने निःस्वार्थ।

सब भूतों में कृष्ण ही, ईश्वर स्थित मान।
हे भारत! सर्वात्म में, सर्वभाव पहचान।

वासुदेव पुरुषोत्तम, परमेश्वर साकार।
ज्ञानी जाने तत्त्व से, माने विविध प्रकार।

स्वयं बने हों सारथी, जिनके प्रभुवर कृष्ण।
उसे पराजित कर सके, कौन अविज्ञ सतृष्ण।

रहकर सदा गृहस्थ में, कृष्ण वचन ले मान।
वह मनुष्य हो जाएगा, अर्जुन वीर समान।

वेदव्यास जी ने रचा, अद्भुत गीता ग्रंथ।
योगेश्वर के शब्द हैं, दिव्यलोक सद्पंथ।

योगेश्वर के हृदय पर, भक्तों का स्वामित्व।
साधु सुरक्षा, दुष्ट वध, ईश्वर का दायित्व।

स्वयं बचायी दौड़कर, द्रुपदसुता की लाज।
नाम जपो गोपाल का, छेड़ श्वास का साज।

कहा कृष्ण ने, पार्थ सुन, महागूढ़तम ज्ञान।
मैं ईश्वर हूँ, मम शरण, पाओ जीवन त्राण।

कृष्ण सभी के हैं पिता, पूर्ण सृष्टि संतान।
वे न भूलते किसी को, सबको दें सम मान।

पीड़ा-सुख, जीवन-मरण, कालचक्र की चाल।
मनमोहन को सौंप दें, दुनिया के भ्रमजाल।

नमन यशोदा जननि को, पिता धर्म गुरु नंद।
शिशु लीला कर कृष्ण ने, बाँटा परमानंद।

जोड़ी राधा-कृष्ण की, अद्भुत, अकथ, अनूप।
निर्मल मन से जो भजे, वह न पड़े भवकूप।

गोकुल, वृंदावन रमे, लीलाधर, घनश्याम।
भक्तों के उद्धार हित, कृष्ण नाम अभिराम।

श्रीकृष्ण की आरती

श्याम बहादुर श्रीवास्तव 'श्याम'
जालौन, भारत

जयति जय श्री वनवारी की,
आरती कृष्णमुरारी की।।

त्रिभंगी लीलामय घनश्याम,
अधर धर मुरली शोभाधाम,
माधुरी मूर्ति मनोहर श्याम,
सच्चिदानंद, कृष्ण ब्रजचन्द, जयति नंदनन्द,
कलानिधि कुंजबिहारी की।
आरती कृष्णमुरारी की।।१।।

पीतपट मोरमुकुटधारी,
बाँकपन चितवन मनहारी,
परम योगी जग हितकारी,
गले वनमाल, घूँघरे बाल, कृष्ण गोपाल,
सर्वहित गिरवरधारी की।
आरती कृष्णमुरारी की।।२।।

श्याम ब्रजवासी माखनचोर,
भक्तजन रक्षक हरि चितचोर,
सारथी पारथ के बेजोड़,
हरण दुख-द्वन्द्व, क्षरण भव फंद, परम आनन्द,
दलन खलदल असुरारी की।
आरती कृष्णमुरारी की।।३।।

In the Service of Krishna

Rajesh Kumar Mishra
Mumbai, India

In this world full of miseries and dualities,
The only Solace and the only Hope is Krishna,
For humanity, entangled in dark ignorance,
The path of freedom and the Light is Krishna.

Majority full of ego, fighting for pseudo-credits,
Forgetting the fact that the only Doer is Krishna,
Running here-there for gains, begging for favors,
Forgetting Infallible Support, the Giver is Krishna.

Dreaming & chasing to enjoy, possess beauty outside,
Forgetting abundance within, the Real Beauty is Krishna,
Running after peace, with never-ending stressful efforts,
Sit back & Chant Holy Name, the Eternal Peace is Krishna.

Running after love, spoiling everything including life,
Gain the Real Knowledge, the Supreme Love is Krishna,
Striving for oneness, running behind various religions,
Achieve eternal-oneness, Supreme Religion is Krishna.

In this world full of deceitfulness, inimicalities & unfaithfulness,
Dare to be amicable; move strong with Infallible Faith in Krishna,
Renounce to be in blind rush to demean others for supremacy,
Surrender and serve, Supreme Personality of Godhead is Krishna.

Krishna is everywhere, Krishna is in everyone,
Let my each moment be in the remembrance of Krishna,
Krishna is the Beginning and Krishna is the End,
Let my whole life be engrossed in the Service of Krishna.

कृष्ण कृपा

राजेश कुमार मिश्रा
मुंबई, भारत

इस कलियुग के मानव पर भगवान कृष्ण की कृपा का एक उत्कर्ष,
भगवद गीता के माध्यम से दिखाया, अनवरत धर्म युक्त जीवन की युक्ति,
अंदर ही बैठे आसुरी शक्तियों और दैवी शक्तियों के चलते संघर्ष,
सुनिश्चित किया भगवतता की जीत, और इसी पराकाष्ठा के साथ मुक्ति।

कर्मों की महत्ता बतला, समर्पण सिखलाया कर्मयोग के माध्यम से,
समस्त योगों की महत्ता बता, दिखलाई पराकाष्ठा भक्ति योग की,
सज्जनों को आश्वस्त किया "यदा यदा ही धर्मस्य" के माध्यम से,
"सर्व-धर्म परिताज्य" के माध्यम से, बतलाई सरल उपाय जीवन की।

अनवरत शास्त्रों ने बताया गुरु की महिमा और रूप,
गुरु गोविंद के बीच कौन महान, यह भी जतलाया,
पर गीता के माध्यम से गुरु का विलक्षण स्वरूप
स्वतः भगवान नें परम गुरु बनकर बतलाया।

परम योद्धा शिष्य अर्जुन के माध्यम से किया सुंदर प्रबंध
स्थापित किया जग में, गुरु के प्रति समर्पण हो कैसा।
पिता-पुत्र, सखा तथा प्रियतम के समाविष्ट चरम संबंध
प्रेम तथा सम्पूर्ण समर्पण का अद्भुत मिश्रण हो कैसा।

भगवद गीता नहीं सीमित है किसी वर्ण, जाति, धर्म हेतु या देश,
यह इन सबसे परे, दिखाता सम्पूर्ण मानवता के विकास का पथ,
"ईश्वर: सर्वभूतानां..." के रूप में अध्याय **18** श्लोक **61** का संदेश,
मानव विकास की पराकाष्ठा दिखा, निर्देशित करता हर धर्म का पथ।

हम करें समर्पण..

शीला शर्मा
लखनऊ, उत्तर प्रदेश

जो भव कारा से मुक्ति दिलाने
कारागृह में आए थे,
हर पीड़ित और दुखी मन में जो
आस जगाने आए थे।

खुद सही अनेकों विपदाएँ पर
धैर्य प्रेम न त्यागे थे
निज स्वजनों के रक्षा हित जो
रणछोड़ कहा कर भागे थे।

आपसी स्वार्थ और अहं हेतु,
धरती पर युद्ध न ठन जाए।
भाई भाई के द्वंद्व में यह ..
संस्कृति न कलंकित हो जाए।

जो थे विराट वे हो विनम्र..,
कुछ अपनों को समझाने आए।
मान और अपमान एक सम
स्वयं हलाहल पीने आए..।

दुर्जन चित्त कैसे समझेगा,
निर्मलता की उस भाषा को।
उस करुणसिंधु उस परम सुहृद
उस संधि पत्र परिभाषा को।

निज स्वार्थ बुद्धि करती विनाश
यह सत्य सदा हर युग का है,
लोभ क्रोध और अहं भोग यह
रोग कुटिलता मन का है..।

ली अधर बाँसुरी कर गीता
जीवन का अर्थ बताने को..,
माँ के कान्हा.. राधा प्रियतम.. बने
सारथी... धर्म सिखाने को।

वैरी अनीति के मार्ग चले तब
नीति काम नहीं आएगी
उसकी भाषा, में उत्तर से,
स्वयं समझ, आ जाएगी।

हम पूरे मन से कर्म करें ..
फल की चिंता को किए बिना।
निश्चय भविष्य अच्छा होगा ..
यह कर्म योग बन जाएगा।

पाञ्चजन्य बजे या मुरली तान
रण दुंदुभी हो या रासगान..
भीतर से वो निर्लिप्त रहे
अधरों पर थी मोहक मुस्कान।

हम करें समर्पण अहं छोड़ मन
मोहन मन में आएगें..
वह सखा मित्र वह दीनबंधु
योगेश्वर खुद अपनाएंगे।

श्याम धुन लगी

अनिता कपूर
फ्रीमोंट, यू.एस.ए.

आज फिर हृदय में जाग उठी बाँसुरी।
नेह के, प्रणय के, गीत गावे बाँसुरी।
शब्द में, मौन में, तारों में, दिशाओं में,
जागरण में, स्वप्न में, स्पंदन करे बाँसुरी।
मन को यदि जीत लिया, जीत लिया जग को,
चाँदनी रात में जशन जीत गुनगुनाए बाँसुरी।
कृष्ण ही है गति मेरी, तू ही है मेरा साक्षी,
प्रभु ही है सुहृदय एक ही राग बजाए बाँसुरी।
प्रभु में मेरा निवास, कृष्ण चरणों में ही शरण,
अगाध सिंधु में गंभीर स्वर में गूँजे है बाँसुरी।
सुन के यह मधुर तान चित्त ने प्रश्न किया,
प्रभु से मिलन कैसे को, मुझे बताओ बाँसुरी।
मन से द्वंद्व हटा अपने चित को लगा ईश में,
कृष्ण मिलन फिर ही होगा यह जतावे बाँसुरी।
अब तो श्याम धुन लगी, गोपाल धुन लगी,
दिव्य प्रेम ज्योति जगाने लगी हरी नाम बाँसुरी।

करुणा करो बृजेश

कैलाश गिरि गोस्वामी
बाँसवाड़ा, भारत

असुर देश को तोड़ रहे हैं,
करुणा करो बृजेश।
श्याम आज फिर बुला रहा है,
तुम्हें तुम्हारा देश॥

गीता वाला वचन निभाकर,
भारत भू को पावन कर दो।
मित्र सुदामा के फिर बनकर,
खुशियों से झोली भर दो॥
पाप ताप और शाप मिटें,
मिट जाएँ सारे क्लेश।
असुर देश को तोड़ रहे हैं,
करुणा करो बृजेश॥

चक्र सुदर्शन धारण करके,
मायासुर को मारा था।
डूबते हुए गजराज को,
तुमने ही तो तारा था॥
रावण की तरह बदल रहा,
व्यक्ति अपना वेश।
असुर देश को तोड़ रहे हैं,
करुणा करो बृजेश॥

पांचाली को भरी सभा में,
तुमने ही तो बचाया था।
यमुना तट पर नन्द के लाला,
तुमने रास रचाया था॥
एक बार दूत शांति के बन,
आओ अपने देश।
असुर देश को तोड़ रहे हैं,
करुणा करो बृजेश॥

मामा कंस को मारा तुमने,
गरीब सुदामा तारा।
जन्म लेते ही तुम्हारे,
टूट गई थी कारा॥
सोया हुआ पार्थ जगा दो,
कौरव रहें न शेष।
असुर देश को तोड़ रहे हैं,
करुणा करो बृजेश॥

हे कृष्ण मुरारी!

ओमप्रकाश गुप्ता
ह्यूस्टन, यू.एस.ए.

हे
कृष्ण
मुरारी
राधा प्यारे
सब से न्यारे
जग रखवारे
जग में है क्रंदन
हे वसुदेव नंदन
प्रभु बिसराया तुमने
कृपा करो देवकीनंदन
भगवन हम तेरी राया
निष्ठुर तेरी यह माया
दुर्बल मेरी है काया
मैं शरण में आया
राधे प्रियतम
पीड़ा में हम
भगवन
प्रणम्य
नम्य
ॐ

टिप्पणी: काव्य लेखन में यह मेरा नया प्रयोग है। इस में पहली पंक्ति में एक वर्ण है, फिर दो, तीन... इस प्रकार यह 10 वर्णों तक जाती है। पुन: 10 वर्णों से आरंभ हो कर 9, 8, ... और अंत में एकाक्षर ॐ पर समाप्त हो जाती है। इससे कविता एक ज्यामितिक (geometric) आकार लेती है। चूँकि अंतिम वर्ण ॐ है, इस नई विधा को मैं ओम-गणित विधा कहना चाहूँगा। इस विधा में आगे काम करने को उत्सुक मित्र मुझे om@ramacharit.org द्वारा संपर्क कर सकते हैं।

गीता ज्ञान

उषा अवस्थी
लखनऊ, भारत

कुरुक्षेत्र के युद्ध में
रथ पर हो आरूढ़
देख स्वजन, हो मोहग्रस्त
किंकर्तव्य विमूढ़।

क्षोभ युक्त विचलित हृदय
बाण धनुष को त्याग
जा बैठा अर्जुन व्यथित
रथ के मध्यम भाग।

श्वेताश्वों की डोर को
अपने हाथों थाम
जिस पर बैठे सारथी
स्वयं कृष्ण भगवान।

युद्ध भूमि के बीच जब
हुआ धनञ्जय आर्त
मधुसूदन ने ज्ञान दे
जगा दिया पुरुषार्थ।

जीव पुरुष का आपसी
नहीं कोई संयोग
दोनों पृथक-पृथक
सम्भव नहीं वियोग।

निर्गुण माया से परे
चेतन, जो आधार
सत, रज, तम गुण योग से
बना सृष्टि आकार।

सकल कामना से विलग
होकर त्रिगुणातीत
स्थित चिन्मय मात्र में
त्याग सकल भव प्रीति।

वासुदेव के तनय, जो
धरणी पर अवतार
कौन्तेय को है दिया
इस विधि ज्ञान विचार।

त्याग फलेच्छा जो करे
दूजों के हित कर्म
बँधे न बंधन में किसी
पार्थ यही है मर्म।

पृथा-पुत्र को फिर दिया
भक्ति योग का मूल
जो समस्त अज्ञान हर
हरे ताप, सब शूल।

सदा हुआ संतुष्ट मन
इन्द्रिय सहित शरीर
अर्पित कर मुझको हुआ
मुक्त, वही मति धीर।

किसी योग का आश्रय
जन ले करे प्रयास
साक्षात हो सत्य से
सकल अविद्या नाश।

देकर पुरुषभर्भ को
अतुल, अलौकिक दृष्टि
ब्रह्माण्डों संग चर अचर
सहित दिखाई सृष्टि।

विश्वरूप में सामने
देखा श्रीभगवन्त
भारत रोमांचित हुआ
देख अनादि अनंत।

इस विधि गीता ज्ञान से
हुई वृत्तियाँ शान्त
उठा लिया गाण्डीव तब
अर्जुन ने निर्भ्रान्त।

धर्म क्षेत्रे कुरु क्षेत्रे

सुशील शर्मा
नरसिंहपुर, भारत

अर्जुन उवाच
हे कृष्ण रण में सामने ये कौन हैं?
बंधु मेरे इस प्रश्न पर सब मौन हैं॥

भिक्षान्न में होकर प्रसन्न मुझे कुछ न चाहिए।
बंधुओं का वध कैसे करूँ हे केशव बतलाइए॥

पितामह की गोद गुरु के चरण क्या भूल जाऊँ।
राज पाने के लिए क्या इन पर बाण चलाऊँ॥

युद्ध मुझको अब करना नही, हे माधवा।
ऐसी विजय से तो हार अच्छी, हे केशवा॥

मेरा ही रक्त सामने है युद्ध मैं कैसे करूँ।
मुझसे न होगा युद्ध ऐसा चाहे मैं खुद मरुँ॥

मन उद्विग्न धनुष त्याग पार्थ विक्षिप्त सा।
शस्त्र रहित मोहित चित्त शोक संतप्त सा॥

श्री भगवानुवाच
पार्थ तुम इन अज्ञानों से क्यों इतने भरे।
क्यों जी रहे हो अपने अंतस इतने संशय धरे॥

धर्म क्या होता है तुम इसको सूझ लो।
कर्म क्या होता है तुम इसको बूझ लो॥

मैं ही परा अपरा आकाश हूँ।
मैं ही धरा मन का विश्वास हूँ॥

नित्य मुझ में ही प्रवाहित कर्म सब।
नित्य मुझ में समाहित धर्म सब॥

अनगिनत आकाश गंगाएँ मुझ से विहित।
करोड़ों सूर्यमंडल हैं मुझ में निहित॥

शून्य से विराट की प्रकृति हूँ मैं।
जीव अविनाशी की प्रवृत्ति हूँ मैं॥

माया में रहकर सदा हूँ मैं माया से रहित।
यह अनादि अखंड ब्रह्मांड है मुझ में निहित॥

शब्द से अनहद का आधार हूँ मैं।
मौन के संदेश का संचार हूँ मैं॥

परम का मैं मूर्त स्वरूप हूँ।
अनंत का मैं अद्भुत रूप हूँ॥

युद्ध मैं हूँ, शुद्ध मैं हूँ, धर्म मैं हूँ, पार्थ मैं।
कर्म मैं हूँ, विजय मैं हूँ, आत्मा का अर्थ मैं॥

तमस मैं हूँ, राज मैं हूँ, शुद्ध सत्य सतोगुणी।
योग मैं हूँ, क्षेम मैं हूँ, राजसी रजोगुणी॥

चित्त मैं हूँ, बुद्धि मैं हूँ, ध्यान का आधार हूँ।
जीव मैं हूँ, प्रकृति मैं हूँ, ये प्रकट संसार हूँ॥

आदि मैं हूँ,अनादि मैं हूँ, न है कुछ मुझ से रहित।
समय हूँ मैं, काल हूँ, भूत भविष्य मुझ में विहित॥

जन्म मैं हूँ, मृत्यु मैं हूँ, अहम का आभास हूँ।
प्रेम मैं हूँ,सत्य मैं हूँ, जीव का विश्वास हूँ॥

आदि अनादि नियंता, सर्वज्ञ हूँ मैं।
सच्चिदानंद अचिन्त्य, अविज्ञ हूँ मैं॥

ॐ हूँ मैं, व्योम हूँ मैं, भूत भावन परमात्मा।
स्वर्ग हूँ मैं, अपवर्ग हूँ मैं, हिरण्यगर्भ आत्मा॥

सत हूँ, असत भी, ब्रह्म रूप गुणों की खान हूँ।
कल्प हूँ, संकल्प हूँ, ज्ञानियों का ज्ञान हूँ॥

विष्णु हूँ मैं, सूर्य हूँ, मैं नक्षत्राधिपति चंद्रमा।
इंद्र हूँ मैं, वेद हूँ मैं, काम की मैं मधुरिमा॥

शिव हूँ मैं, नाद हूँ मैं, यज्ञ हूँ मैं, प्रजापति।
शील हूँ मैं श्रेष्ठतम, राम हूँ मैं, रमापति॥

हूँ अजन्मा, रूप है अविनाशी मेरा।
योगमाया से प्रकट, परमात्मा मैं हूँ तेरा॥

बुद्धि ज्ञान और तर्कों से मैं परे।
परा अपरा शक्तियों को जो धरे॥

गूढ़ से गुह्तम मेरा आभास है।
मुझे पाता वही जो मेरा दास है॥

मुझ को समर्पित कर्म तुम अपने करो।
परिणाम की चिंता न तुम मन में धरो॥

इंद्रियों को वश में करे स्पृहा रहित।
क्रोध को जीते जो समता सहित॥

काम को वश में करे वो नरोत्तम कहाता है।
हे परंतप वही सच्चा ज्ञान पाता है॥

कर्म फल के बिना जो कर्म करता रहे।
मुझ परम योगी में वो सदा रमता रहे॥

पाप उसके नष्ट मैं सारे करूँ।
उचित अनुचित भोग उसके मैं हरूँ॥

अंतःकरण जिसका ज्ञान से तृप्त है।
जीवात्मा वही सुख से संतृप्त है॥

योग से अभ्यास से जो मोह माया छोड़ दे।
हे नरोत्तम पुरुष ऐसा प्रलय का मुँह मोड़ दे॥

हे धनंजय भिन्न मुझसे कोई कर्त्ता नहीं।
मैं ही सब करता हूँ कोई दूसरा कर्त्ता नहीं॥

सुन हे पार्थ असमय में मोह नही शोभता।
नपुंसकता त्याग साहस जुटा क्यों दुख भोगता॥

हे पार्थ अब त्याग संशय गांडीव को कर में उठा।
सव्यसाची हे धनंजय साहस को मन में बिठा॥

अर्जुन उवाच
आप ही सब में समाहित आप ही भगवान हैं।
आप ही हैं देह धारी निर्गुण प्राण अपान हैं॥

आप ही हैं परम अक्षर विश्वरूप अनादिका।
अचल अविचल चल चराचर मोक्षरूप प्रदायिका॥

दिव्य से भी दिव्यतर हैं विराट रूप ईश्वरा।
सहस्रकोटि सूर्य सम अखंड ब्रह्माण्ड अधीश्वरा॥

खुल गए हैं चक्षु मेरे अति गोपनीय गीता ज्ञान से।
युद्ध मेरा शुरू होगा गांडीव के शर संधान से॥

धर्म क्षेत्रे कुरु क्षेत्रे युद्ध में अर्जुन खड़ा।
पाञ्चजन्य जय घोष से रण में कोलाहल बढ़ा॥

जीवन का सार

प्रतिभा पुरोहित
अहमदाबाद, भारत

जीवन की पोथी के
चार अक्षरों में
समाया है,
जीवन का सार!
पात कली फूलों से
सजा हुआ संसार।
मात्र नहीं सधता है
केवल्य ज्ञान,
जिससे पूरित है
भक्ति का विधान।
कान्हा ने जब छेड़ी
बाँसुरी की तान,
वृन्दावन में छिड़ गया
मधुर रागों का गान।
साँसों का सुर सधा
जीवन के राग से
पात-पात महक गया
हरसिंगारी रात से।
गोप-ग्वाल संग
थिरक उठे राधा के
कान्हा!
वासंती वेश में
सज उठे परिधान।

सारथी

अलका प्रमोद
लखनऊ, भारत

सारथी बन अर्जुन के तुमने,
युद्ध में थी विजय दिलायी,
कर्म-धर्म, कर्म-फल,
जन्म-मृत्यु, सत्य-असत्य,
की सारी गुत्थी सुलझायी।
जब डाल हथियार,
अर्जुन ने कार्पण्य अपनाया,
तब गुरु बन कर तुमने,
अर्जुन को था मार्ग दिखाया।
अर्जुन फँसे मोहपाश में,
कर्मयोग का महत्व बताया।
ब्रह्मरूप दिखा अर्जुन को,
गांडीव उठाने को उकसाया।
ब्राह्मी-स्थिति पाने को,
इंद्रियजय का मार्ग सुझाया,
समदर्शी होने का तुमने,
गूढ़ बहुत था पाठ पढ़ाया।
संयम अपनाने का दे आदेश,
एकाक्षर ब्रह्म 'ओऽम' बताया,
दिव्यशक्ति को ब्रह्ममय बनाया,
विश्वरूप दर्शन कराया।
क्षेत्र और क्षेत्रज्ञ से,
तुमने ही परिचय करवाया,
सत्व, तम, रज, की व्याख्या,
भी तुमने था बतलाया ।
क्षर, अक्षर, अव्यय के संग से,
जन्म वैश्वानर अग्नि ने पाया,
सत्य अनृत का भेद बताया।
सम, रज, तम है, श्रद्धात्रय,
इसका विश्लेषण करवाया,
संचालन से जिसके होता कर्म,
रहस्य यही तुमने था बताया
होती निष्ठा जिसके प्रति भी,
उसका वैसा कर्म बताया।
पहचाने जो वृत्ति-निवृत्ति,
उसने ही सात्विकी-बुद्धि,
से जीवन सार्थक बनाया,
जो जाने धर्म-अधर्म को,
जो समझे बंध-मोक्ष को,
उसने ही मोक्ष है पाया।
तुम तो ज्ञानी-अन्तर्यामी,
तुमसे क्या अन्जाना था,
युद्ध तो एक बहाना था,
सारथी बन जन मानस को,
मोक्ष की राह दिखाना था,
जीवन के गूढ़ रहस्य,
मानव को बतलाना था।
पाना गान्धारी से शाप,
मृत्युलोक तजने का बहाना था,
अवतरित हुए करने उद्धार,
देवलोक को वापस जाना था।

श्री कृष्णाय नमः

शशि जैन
लखनऊ, भारत

एक पुष्प उनके चरणो में,
जो गीता के रहे प्रणेता।
धर्म ध्वजा के संवाहक जो,
सर्वश्रेष्ठ नेता, अभिनेता।।

"मामेकं शरणं व्रज" कहकर,
देते अभयदान जो हमको।
"संभवामि युगे युगे" कहकर,
हरते अनाचार के तम को।।

यह जीवन हर पल उत्सव है,
हर्ष भाव से इसको जीना।
पर आसक्ति करो मत जग से,
यह माया का जादू टोना।।

फल की इच्छा भी अर्पण कर,
तुम करो सदा निष्काम कर्म।
सुख दुख में समभाव रहो तुम,
है गीताजी का यही मर्म।।

पावन प्रेम ब्रह्म हो जाता,
प्रेम से यह जग परिपूर्ण है।
ज्ञानी जन यह भेद जानते,
राधा बिना कृष्ण अपूर्ण है।।

गीता का सार

आराधना झा श्रीवास्तव
सिंगापुर

तू आप ही अपना शत्रु है
तू आप ही अपना मित्र,
या रख जीवन काग़ज़ कोरा
या खींच कर्म से चित्र।

मन में अब तू ये ठान ले,
है कर्म ही धर्म ये जान ले।
भ्रम का अपने संज्ञान ले,
तू माध्यम मात्र ये मान ले।

तुम साधन हो जिस कर्म के
उस कर्म का मैं ही कर्ता हूँ।
जिस शोक में डूबे हो अर्जुन
उस शोक का मैं ही हर्ता हूँ।

मैं ही कण हूँ, मैं ही सृष्टि,
मैं ही घटना, मैं ही दृष्टि।
मैं कृष्ण, मैं अर्जुन, मैं कुरुक्षेत्र,
मैं ही संजय और उसका नेत्र।

है कहो कहाँ नहीं समाया हूँ?
मैं योग, मैं ही तो माया हूँ।
हर युग में लीला रचाता हूँ,
मैं राम, मैं कृष्ण कहलाता हूँ।

तुम गांडीव नहीं उठाओगे
पर होनी टाल न पाओगे।
ये योद्धा प्राण गँवाएँगे,
अपनी गति को ही पाएँगे।

ये नियति है इसकी काट नहीं,
इससे बचने की बाट नहीं।
इस सत्य को तुम स्वीकार करो,
हे धनुर्धर गांडीव धरो।

ये कैसी दुविधा कहो पार्थ?
जनहित से श्रेयस्कर हुआ स्वार्थ?
मुझ में समर्पण का भाव धरो,
हे कौंतेय अपना कर्म करो।

है अविनाशी यह चेतना
प्राणों का फिर क्यों मोह करे?
नश्वर काया के मिटने से
तू व्यर्थ में ही इतना है डरे।

ये जीव मुझ से ही तो
जग में विस्तार पाते हैं,
मृत्यु पथ पर चलकर
मुझ में ही वापस आते हैं।

मृत्यु ही अंतिम सत्य है
इस सत्य को तुम पहचान लो,
हैं स्वयं प्रभु तेरे सामने
मुझसे गीता का ज्ञान लो।

नियति-नियंता नियत समय
कर्मों का फल देते हैं,
चिंता फल की मत कर तू
ये स्वयं प्रभु कहते हैं।

गीता में जीवन-सार छिपा
ये कर्म का पथ दिखलाता है
दुविधा की काली रात में
ये ज्ञान का दीप जलाता है।

मन के चक्षु को खोल दे
भ्रम का हर जाल हटाता है,
एक बिंदु से ब्रह्मांड तक
अनंत विस्तार दिखाता है।

सुलझा मन की उलझी ग्रंथि
जीवन का मर्म सिखाता है।
निस्तार के, संसार के
सब भेद खोल समझाता है।

भ्रम का हर जाल हटाता है
जीवन का मर्म सिखाता है,
उर में ऊर्जा संचित कर दे
गीता वह दिव्य-पुंज कहलाता है।

कृष्णा और अर्जुन के कृष्ण

रीता पाण्डेय
सिंगापुर

याज्ञसेनी के मन बसी श्रीकृष्ण की मूरत,
एक क्षण भी बिसरे नहीं मनमोहनी सूरत।
वासुदेव स्थिति भाँप गए,
पासा तुरंत पलट गए।
अंतर्मन समझ द्रुपद सुता का,
बखान गांडीवधारी का कर उठे।
द्रौपदी की जिज्ञासा बढ़ी,
आशाओं की बनी लड़ी।
मन मंदिर में बस गई,
अर्जुन की खूबसूरत छवि।

कृष्णा का जब रचा स्वयंवर,
आए अनेक वीर धुरंधर।
पार्थ जब न आए नज़र,
पांचाली थी आकुल निरन्तर।
माधव के मुखमंडल पर,
निश्चिंतता को देखकर।
अर्जुन ही हैं प्रारब्ध,
द्रौपदी का हुआ विश्वास अटल।

मत्स्य भेदन कर्ण चला,
लक्ष्य पर धनुष तानकर।
अनहोनी को सोचकर,
रह गई द्रौपदी काँपकर।
शब्द बाण चला दिये,
सूत पुत्र पुकार कर।
कदम ठहर गये कर्ण के
अपमान का ज़हर पीकर।

द्रवित हुआ माधव का दिल,
भविष्य को सोचकर।
तत्क्षण हुआ कोलाहल,
स्वयंवर में आया पुंज प्रखर।
मुख मंडल पर अद्भुत आभा,
अद्वितीय अर्जुन वीर धनुर्धर।
मत्स्य चक्षु भेद डाला,
प्रसन्न हुआ पूर्ण मनोरथ कर।

अर्जुन ने किया पूर्ण वचन,
स्वयंवर में विजित होकर।
हुई द्रौपदी गौरवान्वित,
मनचाहा वर पाकर।
धनंजय हर्षित हुए,
माधव संग खुशियाँ बाँटकर।
धन्य हुआ जीवन
अभीष्ट प्रसाद पाकर।

तुम पार्थ बनो

लता अग्रवाल
भोपाल, भारत

बनता कुंदन सोना
आग में तपकर
संघर्ष से निखरता व्यक्तित्व
द्वंद्व नियति है मानव की
किन्तु जब अंतर्मन में
कुछ इस तरह उठे द्वंद्व
कठिन काल के प्रवाह में
हृदयस्थल बन जाए कुरुक्षेत्र
विकारों की अक्षोहिणी सेना,
अन्तर्मन पर करे प्रहार
मन में विराजित हो संशय,
समझो काम के धुएँ ने
ज्ञान के दर्पण पर डाल दिया आवरण
वासना का बीज अपनी
जड़ें जमाने को आतुर
ऐसे में क्या तुम रह सकते हो?
समभाव...?
समदृष्टि...?
निष्कामयोगी ...?
कीचड़ में कमल की तरह...?
स्थितप्रज्ञ....?
कर सकते हो साक्षात्कार
अपने अंतःकरण से...?
अपनी आसक्ति और कामनाओं से
संपृक्त हुए बिना
रह सकते हो...?
लोभ, मोह, क्रोध की
श्रृंखलाओं से निस्पृह?
तोड़ सकते हो बेड़ियाँ
वासनाओं की...?
तो बन सकते हो पार्थ।

हाँ! तुम बन सकते हो पार्थ।
अगर अपने अंतःकरण की जमीन पर
अंकुरित ही न होने दो
बीज वासना का
अन्यथा
इंद्रियों का आश्रय पाते ही
अमर बेल सा विस्तार पाएगा,
कामनाओं का खाद पानी पीकर
शीघ्र ही ले लेगा आकार वट वृक्ष का
इंद्रियों के अधीन कर तुम्हारे अंतस को
मलिन कर देगा
गाहे-बगाहे बाहर आने को
आतुर ये तृष्णाएँ
तुम्हारे पथ में होंगी बाधक।

इंद्रियाँ....सेविकाएँ है मन की
जो प्रकृति में विकृति पैदा कर
विवश कर देंगी तुम्हें
तुम खाते रहोगे गोते; वासनाओं के सागर में।
इंद्रियों के रथ पर सवार
यह बेकाबू मन
जन्म देगा भीतर तुम्हारे एक महाभारत को

यही वटवृक्ष एक दिन
तुम्हारी अनंत समस्याओं
का हेतु होगा।
जब तुम पाना चाहोगे मुक्ति
तब चाहकर भी नहीं काट सकोगे
इस वटवृक्ष को
क्योंकि वटवृक्ष काटने से
कटा है कभी?
एक टहनी के काटते ही
चार टहनियाँ और फूट पड़ेंगी
काटोगे जड़ तो छोड़ देगी
वो कई नए अंकुर
धरोहर के रूप में अपने
इस एक कामना के वृक्ष से
अनेकानेक वृक्ष जन्म लेंगे।
तब तक फैल चुकी होगी
ये जड़ें तुम्हारे
अचेतन गर्भ में।

जिसे मिटाने को आतुर
तुम्हें जाना ही होगा अपने स्व के निकट
जैसे-जैसे तुम अपने निकट होगे
अंतःकरण में उतनी शुद्धता पाओगे
जीत कर इंद्रियों को
निकटस्थ पाओगे
स्मृतियों को

स्मृतियाँ! जो ले जाएंगी तुम्हें
बुद्धि की ओर
बुद्धि से सटी होगी आत्मा जो
कराएगी साक्षात्कार परमात्मा से

यहीं होगा मिलन आत्मा का परमात्मा से
तुम्हें होगी अनुभूति एक परम शांति की
तब वासना का यह वटवृक्ष
स्वयमेव ही धराशायी हो जाएगा
टूट जाएगी मोह, लोभ एवं क्रोध की सभी
श्रृंखला।
मन की बंजर भूमि पर पड़ा वह बीज
स्वतः ही सूख जाएगा

अंत होगा तुम्हारे भीतर के
सभी महाभारत का
होगा नए युग का सूत्रपात तुम्हीं से
तुम विराजित होगे
अनासक्ति के सिंहासन पर
समभाव।
समदृष्टि।
निष्कामयोगी।
कीचड़ में कमल की तरह।
स्थित प्रज्ञ।
हाँ! तब तुम बनोगे पार्थ|

शान्तिदूत

सन्तोष भाऊवाला
बैंगलोर, भारत

शान्तिदूत बन कर आये यदुनंदन
कौरव सभा में वरिष्ठजनों को वंदन
धृतराष्ट्र से कर रहे अग्रिम निवेदन
हे धर्मध्वज रक्षक प्रजा के हितहेतु
पांडवों को दे दो आधा राज्य कदाचित
या फिर पाँच गाँव कर दो उन्हें अर्पित
पर क्रोधित हो, हठी दुर्योधन गुर्राया,
पांडवों का शान्ति प्रस्ताव ठुकराया।

युद्ध करूँगा पर जुए में जीता राज्य न दूँगा
न सुई की नोक भर भूमि का अधिकार दूँगा
कृष्ण को बंदी बनाने उद्दत हुआ फलस्वरूप
विश्वम्भर ने दिखाया परम दुर्धर्ष विश्वरूप
विदुर पितामह गुरुवर द्रोण सुख पाये अमित
भयभीत हुई कौरव सभा हतप्रभ, मायाभ्रमित
पर, दुर्योधन ने एक न मानी
पांडवों से युद्ध करने की ठानी।

विनाशकारी युद्ध टला, मेरा आना सार्थक होगा
साम के तुल्य दूसरा कोई सुखद उपाय न होगा
गर हुआ युद्ध, अविस्मरणीय परिणाम होगा
सर्वत्र रक्तपात, शान्ति का कोई पर्याय न होगा
असंतोष की धुन्ध न बन जाये कहीं भारी संकट
पछतावे बन जाय निरर्थक महासमर हो विकट
कौरव सभा को करते यदुपति सम्बोधन
आखिर क्यों है ये हठधर्मी दुर्योधन?

एक और गीता दो

ममता मिश्रा
बुनिक, नीदरलैंड्स

हे कृष्ण एक और गीता दो
जन जागरण निमित्त संहिता दो
हे कृष्ण एक और गीता दो!!

भूल चुकी ये सृष्टि सकल कल
गीता का हर वचन करम फल
बिसरा दी सम्बंध समीक्षा
प्रण प्राणों की अटल अपेक्षा
धर्म गुरु बन फिर दीक्षा दो
हे कृष्ण एक और गीता दो!!

यहाँ भीष्म तोड़ें प्रतिज्ञा
पांडव करें सदा अवज्ञा
दुर्योधन सा साथ नहीं है
अर्जुन सा अब भ्रात नहीं है
सम्बन्धों की रीत बता दो
हे कृष्ण एक और गीता दो!!

ना ही गांधारी सा तप है
ना ही युधिष्ठिर सा नृप है
कृष्ण सा कोई बचा ना सारथी
पथभ्रमित और सब ही स्वार्थी
दिशाहीन को दिशा दिखा दो
हे कृष्ण एक और गीता दो!!

कोई न अर्जुन साथ खड़ा है
कौन कहे ये अटल सत्य
सम्बन्धों से धर्म बड़ा है
युद्ध सत्य के लिए लड़ा है
फिर वह सफल पाठ पढ़ा दो
हे कृष्ण एक और गीता दो!!

अर्जुन खड़ा आज एकाकी
लिए प्रश्न मौन वैरागी
मंत्र चेतना का फिर गूँजे
अर्जुन को ऐसा एक वर दो
हे कृष्ण एक और गीता दो!!

गीता सार

आर. के. प्रजापति 'साथी'
टीकमगढ़, भारत

देख बन्धु सगे मित्र, पार्थ मोह में विचित्र,
भावना पवित्र आज, सोचते विचारते।
हार जीत बीच युध्द, सामने खड़े प्रबुद्ध,
सभी आज हैं विरूद्ध, स्वाभिमान मारते।
कृष्ण देख पार्थ मोह, कौन भाँति हो विछोह,
सोचते विचार करें, शब्द ये उचारते।
युद्ध भूमि सिर्फ कर्म, जीत ही रहे सुधर्म,
मान शत्रु छोड़ शर्म, मर्म ही सुधारते।

ब्रह्म हूँ अनादि आदि, और शम्भू की समाधि,
मैं अखण्ड रूप भूप, प्रेम मग्न ध्यान लो।
विश्व जीव जन्तु सार, सूर्य चंद्रमा निखार,
तीन लोक शक्ति भार, अंग अंग मान लो।
अंत भी अनन्त घाट, रोम रोम है विराट,
शक्ति शौर्य से ललाट, तेज देख जान लो।
हूँ समस्त वेद शास्त्र, आदमी अबोध मात्र,
कर्म को बना सुपात्र, पार्थ युद्ध ठान लो।

स्वयं को तैयार कर

प्रियंका पारो मोहन
सिंगापुर

भरत वंशी अर्जुन को ललकारा
इंद्रियों को वश में कर
प्रलाप तेरा विनाशकर्ता!
चल उठ हे धनुर्धर!
स्वयं को तैयार कर!

दिया उपदेश अमर योग विद्या का,
सूर्यदेव ने विवस्वान् को।
विवस्वान् ने बढ़ाई परंपरा
पहुँचाया संदेश मनु महान को।

हरि की हुई जब कृपा
इक्ष्वाकु ने पाया उपदेश प्रसाद
प्राण धन बुद्धि वाणी से
कल्याणी तू काम कर!
स्वयं को तैयार कर!

आज भी वर्तमान में,
हे मानव और मानवता!
ज्ञान और आत्म
प्रकाश के वास्ते
स्वयं को तैयार कर!

बुराइयाँ जब प्रखर पर हों
प्रताड़नाएँ जब शिखर पर हों
न हो नतमस्तक कभी
तुम अहंकार के सामने,
स्वयं को तैयार कर!

अर्पण समर्पण कर,
उछाह उत्साह निर्भयता भरकर,
चल उठ खड़ा हो जा
स्वयं को तैयार कर!
स्वयं को तैयार कर!

रसखान की भाषा

जगदीश व्योम
नोएडा, भारत

माटी की सोंधी सुगंध सनी
मनमोहिनी है रसखान की भाषा।
शब्द ढरे, निखरे, सुथरे
भई हीरकनी रसखान की भाषा।
रीझी है कान्ह की कामरिया पै
बनी बँसुरी रसखान की भाषा।
स्याम नचैं छछिया भरि छाछ पै
देखि हँसै रसखान की भाषा।

ब्रजमंडल में ग्रीष्म

अनुजीत इकबाल
लखनऊ, भारत

उग्र तापक ग्रीष्म हाय, अग्नि बरसाए ब्रजमंडल पर,
श्याम सुंदर नित धेनु चराए, उष्णता का त्याग कर डर।
कुंज वाटिका घोर तप्त है, व्याकुल है संतापित समीर,
क्षोभित अभिघातिन वनाग्नि, देती है जीवन को चीर।
स्निग्धा अन्तर्धान हो गई है, सखिमंडल हुआ अधीर,
कृष्ण संग क्रीड़ा की उत्कंठा, कैसे आएँ जमुना तीर।
तमाल निष्पत्र हो रहें हैं, दुराक्रांत निदाघ धरा पर,
कर दिए रिक्त सरोवर सारे, वानरों ने अवगाहन कर- कर।
राधाकुंड पुकार रहा है, कैसे धरे तन मंजुल वेष,
मेघ को ढूँढे बृज-बालाएँ, चित्त में साहस रहा ना शेष।
श्री राधा तो कोमलांगी हैं, मदन तृप्ति का बनो आधार,
वियोग से श्रीमुख निष्प्रभ है, मोहन तुम करो स्वप्न साकार।
ललिता निज भवन में बैठी है, उर में प्रेम का दीप जला कर,
श्याम निष्ठुर बना हुआ है, निर्मोही उसे हृदय से भुला कर।
थकन बलित से नीलाक्ष हैं, वक्ष पर कुछ कंचुकी खुली,
विशाखा याद कर रही,जब पिया संग हिंडोले झूली।
मदन कामना से आकुल हैं, रास-नृत्य आस आकंठ,
विरह वेदना में झुलस रही हैं, कान्हा आन लगाओ कंठ।
गिरिराज जैसी पीर है, सब सखियन का मन अकुलाय,
शुष्क पात सी झर रहीं हैं, हृदयस्थल का प्रसून मुरझाय।

मृदु तन अंगार सा दहक रहा है, करने आओ शीतलप्रद रास,
विकराल ग्रीष्म में कान्हा, क्यों दे रहे सबको बनवास।
वन-केलि को बौराईं सखियाँ, बैठीं नवदल सेज सजाई,
पिय से वियोग अनल समाना, श्री गोपाल तूने प्रीत भुलाई।
हृदय-अग्नि अति प्रचंड है, विस्तृत हो रही चहुँ ओर,
प्रेम वृष्टि कर दो वृंदावन में, कहाँ हो तुम नवल किशोर।

शरद पूर्णिमा में रास

अनुजीत इकबाल
लखनऊ, भारत

शरद यामिनी प्रगटे निधिवन
परमानंद गुण अद्वैत गोपाला
शीश मुकुट श्रवण मीन कुंडल
कंठ विभूषित वैजयंती माला।

पीतांबर धारे आभूषण सजीले
कटि पर मधुर किंकिणि चंगी
नख से शिख सब अति सुंदर
वंशी लिए मुस्काये त्रिभंगी।

उन्मुक्त भयीं समस्त ब्रज नारी
स्वामी, कुटुंब, भवन बिसारे
रासभूमि में आईं सखियाँ
श्याम विरह का क्षोभ निवारे।

मुदित मन से नाचें गोपियाँ
अष्ट सखियाँ मधुर धुन गावें
श्री राधा झूल रही हिंडोला
कृष्ण अधर धर वेणु बजावें।

अति सौम्य शीतलप्रद रात्रि
शरद पूर्णिमा का उज्ज्वल चंदा
दर्शन मदन गोपाल मनोहर
महारास रचाये नंद का नंदा।

मोहित तरु तमाल खग धेनु
सखियों के घूँघट-पट छूटे
विस्मित हुआ समग्र शशिमंडल
चौदह भुवन को मोहन लूटे।

अधरपान परिरंभन सिंधु
प्रेममग्न सब सखियाँ सहेली
रति लीला में मस्त हुईं सब
प्रमोद वाटिका में हो रही केली।

शिव शंकर वेष धरा गोपी का
हिय प्रेम का ताप उपजावे
कुमकुम, अंजन से सज्जित कर
गोपियाँ औघड़ शम्भू नचावें।

बाँसुरी

प्रतिभा सक्सेना
फॉल्सम, यू.एस.ए.

ग्रन्थियों के बन्ध से कर मुक्त तुमने,
काठ थी सूखी कि रच-रच कर सँवारा।
रन्ध्र रच,जड़ सुप्त उर के द्वार खोले,
राग से भर कर मुझे तुमने पुकारा।

पोरुओं से परस, कैसा तंत्र साधा,
कर दिया तुमने सकारथ वेदना को।
मंत्र जाग्रत कर दिया फिर-फिर स्वरित कर,
दीप्ति दी, धुँधला रही-सी चेतना को।

जुड़ गई जिस क्षण तुम्हारी दिव्यता से,
देह की जड़ता जकड़ किस भाँति पाये।
नहीं कुछ भी व्यापता तन्मय हृदय को,
बोध तो सारे तुम्हीं में जा समाये।

बाह्य से हो कर विमुख अन्तस्थता में
डूब कर ही तो व्यथा से त्राण पाया।
आत्म-विस्मृति से उबर किस भाँति पाऊँ,
उच्छलित आनन्द जब उर में समाया।

पात्रता दी राग भर अपना तुम्हीं ने,
साध कर अपने करों में मान्यता दी।
बावली मति धार सिर, आश्वस्ति दे दी
सरस अधरों से परस कर धन्यता दी।

फूँक दे तुमने कि मोहन मंत्र साधा,
गा उठीं जीवन्त हो कर तंत्रिकायें।
भर दिये उर में सुचिर अनुराग के कण,
नाच उठतीं मोरपङ्खी चन्द्रिकायें।

चल रहा अभिचार यह कैसा तुम्हारा,
प्राण वीणा से सतत झंकारते हैं,
उमड़ आते ज्वार, मानस के जलधि में,
तोड़ते तटबन्ध तुम्हें पुकारते हैं।

फिर वही स्वर जागते अंतरभुवन में,
रास राका-ज्योत्स्ना यमुना किनारे।
प्रेम का सन्देश जब भी गूँज भरता,
तुम्हीं-तुम हर ओर शत-शत रूप धारे।

वंश की अनुबद्धता से मुक्ति दे,
अवरुद्ध अन्तर-वासना तुमने सँवारी।
पूर्णता पाई तुम्हारे अङ्ग से लग,
चिर-सुहागिन बाँसुरी मैं हूँ तुम्हारी!

गोपियों के कृष्ण

कौशल किशोर श्रीवास्तव
मेलबोर्न, ऑस्ट्रेलिया

हे गोपियों के कृष्ण कन्हैया, मुरलीधर गोपाल!
रास रचायो वृन्दावन में गोपियों के साथ
राधा-कृष्ण की युगल संगति, देखे सारा संसार
मनमोहक यह दृश्य अनोखा, नारी का श्रृंगार
निर्मल प्रेम, आत्म समर्पण, जिसका था आधार।
रासलीला की परंपरा आज भी जीवंत है
ब्रजभूमि की यह विरासत हिंदुत्व का स्तम्भ है।

हे मनमोहक नटखट कृष्ण!
यमुना तट पर कदम्ब वृक्ष, वृन्दावन की धरती
स्नान करती गोपियाँ - जल क्रीड़ा की मस्ती
उनका वस्त्र चुराकर, तुम छुप गए वृक्ष के ऊपर
अनुनय विनय के आगे तुम हार गए वंशीधर!
बालपन की यह कहानी, स्वच्छंद जीवन का प्रहर
कृष्ण लीला की पहेली, गोपियों की है धरोहर।

कर्मयोगी कृष्ण बनकर तुम चले मथुरा नगर
विलाप करती गोपियाँ, देती तुम्हें आशीर्वचन
“भूल मत जाना कन्हैया, सखा-प्रेम का बंधन
गोपियाँ हैं एक उपवन, जिसके तुम सौरभ सुमन।”

ब्रज में फाग

पूनम चन्द्रा 'मनु'
टोरांटो, कनाडा

नभ, धरा, दामिनी, नर, नारी रास रंग राग,
भाव विभोर हो सब कृष्ण संग खेले फाग!

सूर्य किरण 'सलोने' से छन कर
भूमि पर करे सुन्दर अल्पना,
ब्रज धरा 'केशव' रंग में रँगकर
देखो स्वर्ण भई आज!

ग्वाल बाल 'गोविन्द' संग नृत्यकला सीखें,
पाताल हर्ष विभोर होवे जब
हरिचरण दें थाप!

गैयाँ रम्भाकर गल घंटियाँ छनकाएँ,
ताल मिलाकर ध्वनि से मिलाएँ थाप से थाप!

मनमोहक मधुर छवि 'श्याम' को सुन्दर बनाए,
हर गोपी खुद 'मदन' भई, सुधबुध सारी बिसराए,
मुरली ध्वनि ने देखो
वो मोहपाश फेंका आज!

'मनोहर' की छवि से चकित
केवल नर-नारी ही नहीं,
जमुना-तट गोवर्धन पर्वत
पुष्प, तरु, लता, मोरपंख
कोई भी स्वयं के बस में नहीं आज!

राधिका माधव संग बैठ झूला झूलें,
प्रेम पेंग बढ़ा कर गगन छू लें आज!

नन्दगोपाल, यादवेन्द्र मुरली मनोहर श्याम,
उसी रूप में सब संग रंग खेलें
जिसने जो दिए उनको नाम!

नभ, धरा, दामिनी, नर, नारी रास रंग राग,
भाव विभोर हो सब कृष्ण संग खेले फाग!!

गिरधर

पूनम चन्द्रा 'मनु'
टोरांटो, कनाडा

साँवरी घटाएँ पहन कर जब भी आते हैं गिरधर
तो
श्याम बन जाते हैं
बाँसुरी अधरों का स्पर्श पाने को व्याकुल है
वो खुद से ही कहती है
जाने अब साँवरी घटाओं में क्या ढूँढ रहे हैं
राधिका के आने तक
मुझे क्यों नहीं सुन लेते
काफी गीत याद किये है मैंने उनके लिए
एक मैं ही हूँ जो सदा साथ रहती हूँ
तब ही कुछ कहती हूँ
जब वो सुनना चाहते हैं
पवन तुम ही किंचित बहो ना
तुम्हारे स्पर्श से ही वो मुझे हाथो में ले लेंगे
ये क्या साँवरी घटाओं से सूर्य भी दर्शन देने लगे
वो भी दर्शन के प्यासे हैं
ओह! कितना सुन्दर दृश्य है
स्वर्ण जैसी किरणों ने श्याम को छुआ
और देखते ही देखते
श्याम साँवरे 'सलोने' हो गए
ये मनमोहक दृश्य सिर्फ मेरे लिए
सिर्फ मेरे लिए।

मुरली मनोहर

अभिनव शुक्ल
फॉल्सम, यू.एस.ए.

दान है मधुर वो जो दूर करे अभिमान,
ध्यान वो मधुर है जो तुझमें लगा रहे,
धर्म है मधुर वो जो सबको करे समीप,
दीप वो मधुर रात रात जो जगा रहे,
सुर है मधुर प्राण जिसमें सिमट जाए,
मधुर वो राग जहाँ सुर उमगा रहे,
प्रीत है मधुर वो जो मन को करे पुनीत,
गीत वो मधुर है जो प्रेम मे पगा रहे।

मुरली मनोहर ने मधुर सी छेड़ी तान,
मनन मनन मन, मन मन भा गई,
पवन पीताम्बर पटन डुलाती भई,
सनन सनन सन सन सहला गई,
रंग से तरंग ले उमंग घनघोर घटा,
घनन घनन घन, घन घन छा गई,
छमकाती छम छम घुँघरू छबीली राधा,
छनन छनन छन छन छन आ गई|

कान्हा पिचकारी लिए पेड़न मा छिप गए,
गोरटी को लगा गिरिधारी लाल खो गए,
चुपके से राधिका पुकार आगे आ गए तो,
बिना रंग या गुलाल गाल लाल हो गए,
राधाजी ने नयन तरेर कर देखा फिर,
कान्हाजी हँसे औ हँस के निहाल हो गए,
रंग भरी पिचकारी हरिप्रिया छीन लीन,
पोर पोर भीगे हुए नंदलाल हो गए|

कौन है वो जिसने मनुष्य को मनुष्य किया,
जीवन को जीने योग्य किसने बनाया है,
नूतन पुरातन में, दुई दुई पाटन में,
कौन है जो साबुत समूचा बच आया है,
कौन रस छन्द गीत शब्द-शब्द से परे है,
कौन रस छन्द गीत शब्द कहलाया है,
जड़ और चेतन में, चेतन अचेतन में,
प्रेम है वो तत्व जो समत्व में समाया है।

छलिया

अलका प्रमोद
लखनऊ, भारत

हे कृष्ण!
लीला कर
समझाया तुमने,
सत्य-असत्य
कर्म-धर्म की महिमा,
पर न समझा मानव अज्ञानी,
तेरी शिक्षा की गरिमा।
जब अर्जुन ने चुना तुमको निहत्था,
और दुर्योधन सेना पा प्रसन्न था,
तब नहीं जानता था मूर्ख,
खो दिया शुभाकांक्षी तुम सा,
दास, आदेश की, सेना पा,
तुमने तो तभी बता दिया था,
मन के साथ की शक्ति।
जब द्रौपदी ने बाँधा था,
एक टुकड़ा आँचल का,
तुमने दे कर अथाह साड़ी,
की थी रक्षा उसके सम्मान की,
और समझा दिया था,
समय पर साथ देने की शक्ति।
जब सुदामा के तंदुल के बदले,
तुमने भर दिया धन धान्य से,
तुमने बताया था,
सच्ची मित्रता की शक्ति।
जब राधा ने किया प्रेम तुमसे,
अमर कर दिया नाम तुमने,
नाम जोड़ निज संग जताया,
समर्पित प्रेम की शक्ति।

मूर्ख मानव नहीं समझा लीला तेरी,
नहीं समझा, क्या है भक्ति तेरी।
वह राधा कृष्ण के मंदिर तो बनाता है,
जन्माष्टमी को भजन भी गाता है।
पर अभी भी ईश्वर का साथ नहीं,
सुख सुविधा का आडम्बर,
मिल जाये यही मनाता है।
नहीं देखता किसी दुर्बल में तेरा रूप,
प्रसन्न करने को तुझे,
सोने के मुकुट चढ़ाता है।
गाता है गान तेरे,
पर मित्र निर्धन नहीं,
किसी समर्थ को बनाता है।
राधा से तेरे अलौकिक प्रेम की,
दे दुहाई, रंगरेलियाँ मनाता है।
वह जपता नित्य गीता के श्लोक,
पर सत्कर्म को भूल कर,
येन-केन-प्रकारेण,
सुफल पाने की जुगत लगाता है।
उसे ही धर्म का मर्म बताता है।
यह भूल जाता है कि
तुम तो जब भी लोगे अवतार,
उद्धार करोगे साधु का।
संहार बुरे कर्म कर्ता का।
वह रेत में मुँह छिपा कर,
यह नहीं समझ पाता है।
वह तो स्वयं को ही छलता है,
छलिया तुमको बताता है।

तोरी बंसी भाग भरी

शशि पाधा
रेस्टन, यू.एस.ए.

कान्हा तोरी बंसी भाग भरी
पल छिन तेरे संग जिये वो
जब से अधर धरी।

वृन्दावन की कुंज गलिन में
गोपिन रास रचाई,
सात सुरों में गूँजे बंसी
झूमें कृष्ण कन्हाई|

दूर खड़ी यशोदा मैया
नयनन नेह झरी।

छू के बंसी राधे बोली
तू किसना अति प्यारी
श्वास-श्वास में तोरे बसते
मैं तुझसे ही हारी

किस डोरी से बाँधे तूने
पूछत पहर-घरी|

राधे-राधे गाए बंसी
कान्हा हिय हरषाय
मेरे मन की बूझी तूने
पुनि पुनि गीत सुनाय

तेरे सुर की राग-रागिनी
बाँधे प्रीत-लड़ी|
कान्हा तोरी बंसी भाग भरी।

जीवन मुरली

मंजुला चतुर्वेदी
मुंबई, भारत

हृदय कमल में विराजैं,
मोहन मुरली बजावैं।

सात स्वरों में जीवन दर्शन,
जग का भेद बतावैं।

आओ हिलमिल हृदय लगावें,
सरगम धुन गले लगायें।

सा-संसार आधार उपजावैं,
ब्रह्म नाद का मर्म बतावैं।

रे- रेशम से कच्चे धागे,
रिश्ते-नाते बने मिट जाते।

ग- गम्भीर, गहन हों विचार,
बुद्धि से मोती चुन-चुन लायें।

म- ही मन है,मंजुल, निर्मल होवे मंगल,
म ही मधुरम, म ही मनोहर,
जीवन धन यह,मध्य मार्ग अपनावैं।

प - पनपाये, प्रेम, प्रीत, प्रण,
मीठे बोल हृदय बस जावैं।

ध- धन, धर्म, धैर्य से संवारे,
कर्म महान बनावैं।

नी- प्रिय नीर सरित का उज्जवल,
बहते जायें, सिन्धु समायैं।

तार सप्तक में षडज मिले फिर,
चक्र में रास रचायैं ।

पंखुड़ियों पर राधे नाचें,
बाँके बिहारी ठाढ़े मुस्काने
रज को रजत बनाए, मुरली मधुर बजावैं।

बाल लीला

राम कृपाल 'कृपाल'
जालौन, भारत

ठुमुक-ठुमुक पग मणिमय आँगन, बालकृष्ण गोपाल।
देख बाल छवि अम्ब यशोदा, गद्गद हृदय निहाल।।

दंतावलि दामिनि ज्यों न्यारी,
नन्द-यशोदा अजिर बिहारी।
चंचल-चपल नयन रतनारे,
मोर मुकुट की शोभा प्यारी।
बिंब पकड़ने को अति आतुर, नटखट-अटपट चाल।
ठुमुक-ठुमुक पग मणिमय आँगन, बालकृष्ण गोपाल।।

प्रभा कोटि कंदर्प मनोहर,
नीलकमल तन कोमल सुंदर।
शोभित पग नूपुर कटि किंकिणि,
भाल तिलक गोरोचन रुचिकर।
धूल धूसरित मुख में माखन, उर बैजंतीमाल।
ठुमुक-ठुमुक पग मणिमय आँगन, बालकृष्ण गोपाल।।

सुर-मुनि त्राता विश्व विधाता,
पार्थ-सारथी शक्ति प्रदाता।
बाल सुलभ करते शिशु लीला,
शांति निकेतन गुरु-पितु-माता।
जय -जय त्रिभुवन पालनकर्ता, करुणासिंधु 'कृपाल'।
ठुमुक-ठुमुक पग मणिमय आँगन, बालकृष्ण गोपाल।।

गोपी-कृष्ण प्रेम

राम कृपाल 'कृपाल'
जालौन, भारत

कालिंदी के पुलिन पर, मतवाली पनिहार।
जमुना जल भरने चली, कुसुम कली कचनार।।

मनमोहन को ढूँढ़ती, कालिंदी के तीर।
तन में लगती तीर-सी, शीतल-मन्द समीर।।

ग्वालिन गोकुल गाँव की, मन में तीव्र हिलोर।
मन मनसिज का जोर है, लगी सुरत की डोर।।

बलखाती कटि क्षीण अति, तरुणाई के भार।
मन मन्मथ संवेग पुनि, अंग-अंग श्रृंगार।।

पीन उरोज सरोज मुख, बिंदी लाल लिलार।
कजरारे नैना विमल, कटि किंकिणि झंकार।।

मनभावन पावन पुलिन, बहती मंद समीर।
कलरव करते कुञ्ज में, कोकिल-केकी-कीर।।

पहन पीत पट नवल तन, मतवाली-सी चाल।
जमुना जल भरने चला, रूप समुद्र 'कृपाल'।।

मेरो नंदलाल

सूर्यकांत सुतार 'सूर्या'
दार-ए-सलाम, तंज़ानिया

मेरे घर आयो है, मेरो नंदलाल
माथे मोर मुकुट, मेरे ब्रजलाल,
बंसी की धुन में, नाचे हैं ग्वाल,
मेरे घर आयो है, मेरो नंदलाल।

बंसी में उसकी, मीठी-सी लय है,
नशा हैं धुन का, ये ना कोई मय है,
उँगली में उसकी एक ही भय है,
दुर्जन असुरों का अंत तय है,
माखनचोर ने दी मटकी उछाल,
मेरे घर आयो है, मेरो नंदलाल।

यमुना के तट पे, रास रचाए,
सारथी बन के, रथ जो चलाए,
राधा के मन में, प्रेम जगाए,
जब-जब कान्हा बंसी बजाए,
गोपियो संग खेले, रंग गुलाल,
मेरे घर आयो है, मेरो नंदलाल।

प्रेम से प्रेम को प्रेम सिखाए,
रण में रण का ज्ञान जो पढाए,
राधा ने कृष्ण को श्रीकृष्ण बनाए,
शिशुरूप बन को मैया सताए,
प्रभु तेरे कितने, रूप हैं कमाल,
मेरे घर आयो है, मेरो नंदलाल।

चलो सखि

वीणा अग्रवाल
कोटा, भारत

चलो सखि ढूँढन चलें श्री श्याम
जोत जलाएँ मंगल गाएँ
लीनो पंथ बुहार।
चलो सखि...

कृष्ण नाम जल बरस रहा है
मेरा तन मन भींज रहा है,
भींजत-भींजत इस बरखा में
लीनी चदरिया तान।
चलो सखि...

कहाँ मिलेगा मेरा स्वामी
राहें मुश्किल हैं अनजानी,
चलते-चलते थके पाँव
नाहिं यहाँ विश्राम।
चलो सखि...

माटी को दिवरा स्नेह की बाती
मेरे भीतर लौ परकासी,
घट माँही उजियारो छायो
बैठ्यो थो घनश्याम।
चलो सखि...

वृन्दावन की बनूँ वृंदा

सुषमा सौम्या
लखनऊ, भारत

ओ गोपाला ओ गोविंदा
पुकारे मन का परिंदा
गगन छूने दो भजन को
पंख न काटे दरिंदा....

मीत तू ही, गीत तू ही
नृत्य तू ही है चरण का
जमा हो कर द्वार तेरे
बना है हर भक्त बन्दा
ओ गोपाला.....

जीत ले हर कष्ट बाधा
शक्ति मेरी बने राधा
चढ़ा जीवन पर नशे सा
रंग श्यामल, न हो मंदा
ओ गोपाला.....

प्रीत की वंशी सुना दे
प्रीत का माखन लुटा दे
बीत जाये घुप निशा ये
उगा दे उजियार चंदा
ओ गोपाला.....

भीत गिर जाये दुःखों की
शीत मिट जाये पलों की
रास रच अभिलाष के संग
गीत का पल रहे जिन्दा
ओ गोपाला.....

ज्यों शमा प्रेमी पतंगा
ऐसे पागल प्राण अंधा
लड़खड़ाते हम डगर में
दे सहारा तेरा कंधा
ओ गोपाला.....

कुंजवन हर हरित कर दो
शुद्ध पर्यावरण कर दो
रहे बृज की भू सुगंधा
न हो जमुना नीर गन्दा
ओ गोपाला ओ गोविन्दा

पुकारे मन का परिंदा
बहा दे फिर प्यार गंगा
झूम जाये विपिन वृन्दा
ओ गोपाला.....

मुरलीवाले श्याम

सरस्वती मल्लिक
मैककिन्नी, यू.एस.ए.

ओ मुरली वाले श्याम। तुम्हें बारम्बार प्रणाम।।

जब मुरली मधुर बजाते हो। सुध बुध तुम सभी भुलाते हो।।
तुम मनमोहन हो श्याम। तुम्हें बारम्बार प्रणाम।।

तुम माखन मिसरी चुराते हो। लीलाधारी कहलाते हो।।
तुम कितने भोले हो श्याम। तुम्हें बारम्बार प्रणाम।।

मुरली तेरी गाये राधे राधे। संग में तेरे राधे विराजे।।
तुम राधापति हो श्याम। तुम्हें बारम्बार प्रणाम।।

अंतर में सबके बसते हो। छिपकर सब देखा करते हो।।
तुम अंतरयामी हो श्याम। तुम्हें बारम्बार प्रणाम।।

तुम दया सभी पर हो करते। सब पे सम दृष्टि हो रखते।।
तेरा अद्भुत रूप महान। तुम्हें बारम्बार प्रणाम।।

तेरी कृपा से धरती टिकी हुई। तेरी माया से सृष्टि रची हुई।।
तुम मायापति हो श्याम। तुम्हें बारम्बार प्रणाम।।

बँध जाते कर्म फलों से हम। भव बंधन में फँसते हम।।
फिर तुम छिप जाते हो श्याम। तुम्हें बारम्बार प्रणाम।।

जब शरण तुम्हारी हम आते। तुम गले लगाते मुस्काते।।
अपना लेते तुम घनश्याम। तुम्हें बारम्बार प्रणाम।।

पल में बंधन खुल जाते हैं। जब हम तेरे हो जाते हैं।।
हर रूप में दिखते हो श्याम। तुम्हें बारम्बार प्रणाम।।

संकट जब हम पर आते हैं। काले बादल मँडराते हैं।।
तब तू ही लेता थाम। तुम्हें बारम्बार प्रणाम।।

जब प्रलय की बेला है आती। सृष्टि तुम में लय हो जाती।।
तू है अखिल लोक विश्राम। तुम्हें बारम्बार प्रणाम।।

होली खेलूँ साथ

चित्रा गुप्ता
सिंगापुर

ओ कान्हा होली खेलूँ साथ,
पीछे से मैं दौड़ती आई,
भर पिचकारी रंगों की लाई,
भिगोऊँ तेरा गात।
ओ कान्हा .....

तुम हो कान्हा निपट अकेले,
कहाँ गये सब भाई-भनेले?
माखन चोर ओ मेरे कान्हा,
आज तो दूँगी मात।
ओ कान्हा .....

पट पीताम्बर रँगू गुलाबी,
नहीं मेरे संग सखा–सहेली,
आज अकेले खेलूँगी मैं –
थाम के तेरा हाथ।
ओ कान्हा .....

पीत पुष्प की हो रही वर्षा,
नटखट कान्हा अब न तरसा,
कुंज गली में ढूँढ रही मैं –
भोर से लेकर प्रात।
ओ कान्हा ....

कई जन्मों से तेरी हूँ मैं,
तेरी तान में खोई हूँ मैं,
डोलूँ मन संग मैं साँवरिया
छोड़ूँ न तेरा साथ।
ओ कान्हा ...

छोड़ जाओगे कान्हा गोकुल,
मन मेरा है शोक से आकुल,
नयन जलज के खारे वारि से
होगी होली अंतिम आज।
ओ कान्हा ...

ब्रज में सावन

चित्रा गुप्ता
सिंगापुर

श्याम घटा घन घिर-घिर आई,
श्याम आये संग गोपियाँ आईं।
श्याम घटा.....
ब्रज में धूम मची सावन की,
फूल-पात ने ली अँगड़ाई।
श्याम घटा.....
झूले डले हैं उपवन-उपवन,
अम्बर खुश, अवनि हर्षाई।
श्याम घटा .....
भीगी अलकें मेह बूँदों से,
मुख पर मोती सी बिखराई।
श्याम घटा .....
गोपियाँ किलक-किलक कर गायें,
कजरी, बारहमासा-चौपाई।
श्याम घटा .....

मुरली सुनी

हरिहर झा
मेलबोर्न, आस्ट्रेलिया

मुरली सुनी कृष्ण की, जग प्रेम में है सराबोर।

जूझता जग पाप में,
अंधड़ चला, अन्याय ऐसा
कैद कर ले सारी दुनिया
कंस का है घमंड कैसा
दर्प छीना ले गया, जग उसे कहता माखन-चोर।

धूल चाटी देख कर
माता यशोदा बहुत विस्मित
'खोल मुख' तो पा लिया
भीतर हुआ ब्रह्मांड निर्मित
बड़ा विराट स्वरूप जिसका कहीं ओर न छोर।

जग-प्रणेता ताल-लय में
प्रकृति को बाँध लेता
अधर धर बंसी-बजैया,
चेतना से जोड़ देता
बँधती चली गोपियाँ, है प्रेम की अदृश्य डोर।

राज्य दु:शासन हुआ,
योद्धा जो दुर्योधन हुये
पार्थ गीता ज्ञान लेते
कर्तव्य को तत्पर हुये
नवकिरण से अन्याय का अंत हो, आयेगी भोर।

जमुना के तीरे

सुरेशचन्द्र शुक्ल 'शरद आलोक'
ओस्लो, नॉर्वे

यशोदा से कहें नन्दलाल, चलो जमुना के तीरे,
चलो जमुना के तीरे।
घणो अंधेरो छायो नंदलाल, लच्छन बुरो दीखो,
जमुना के तीरे।
यशोदा मैया से कहत नन्दलाल, चलो जमुना के तीरे।
असुवन की लड़ी बहै, मैया हिचक-हिचक रो रोवें।
मैया हिचक-हिचक रो रोवें।
सावन माँ आगि लगी, बेमौसम पतझर अधीरे।

गाँव गली सून परो, सून परो गलियारे,
नन्दलाल यो लॉकडाउन, सब संक्रमण के मारे।
इक्कीसवीं सदी को तीसरो दशक,
कोविड महामारी खड़ी द्वारे।
शरद आलोक कहैं कइसन कहर, प्रभु कहा न जाए पीर रे।

नन्दलाल चढ़ि वृक्षन से देखैं, रेत पीले-पीले वसन ओढ़े,
गोपियाँ खेलें छिपा-छिपी, जमुना के तीरे।
यशोदा से कहें नन्दलाल, चलो जमुना के तीरे,
चलो जमुना के तीरे।

कृष्ण कन्हैया

निरुपमा मेहरोत्रा
लखनऊ, भारत

माथे किरीट मोर पंख का,
हाथों में बाँसुरिया सोहे;
पीताम्बर की शोभा न्यारी,
पैजनियाँ के सुर मन मोहे।

नन्हा मत समझो कान्हा को,
कालिया नाग को नाथा था;
इंद्रदेव का दर्प चूर कर,
गोवर्धन गिरि को साधा था।

कौतुकमय शिशु लीला करते,
दधि माखन मुख में लपटाय;
विस्मित मैया चकित गोपियाँ,
निज मुख में ब्रह्माण्ड दिखाय।

झूमे नाचे फागुन गावें,
गोप गोपियाँ सुध बुध खोकर;
राधा के संग रास रचाए,
कृष्ण कन्हैया गिरधर नागर।

गोविन्द दामोदर दोहे
शार्दुला नोगजा
सिंगापुर

बाल कृष्ण वट पात पे, पकड़े हाथ ललाम
अंबुज मुख से चूसते, पाँव अँगूठा थाम

चीरहरण दु:शासनी, पाण्डव को धिक्कार
कृष्णा ने रो कर कहा, करो कृष्ण उद्धार

माखन ले गोकुल फिरी, प्रेमसिक्त हो नार
'दूध-दही' बोले नहीं, 'माधव' करे पुकार

ऊखल से कान्हा बँधे, सिसक करें मनुहार
जसुमति मैया खोल दे, मैं छोटो सुकुमार

मिल-जुल गोपा-गोप जन, लें दामोदर नाम
घर-घर गूँजे पुण्यमय, नाम कृष्ण अभिराम

साधारण मानव रहे, जपे कृष्ण जब नाम
करें श्याम उद्धार तो, मिल जाए प्रभु धाम

बाँधी बछड़े पूँछ से, चोटी गोप कुमार
दामोदर! खोलो इसे! मैया रुष्ट पुकार

भोर हुई बालक चले, बेंत लकुटिया हाथ
गाय चराने ओ सखा, चलो हमारे साथ

जिव्हा मधुरस चाहती, कर माधव गुणगान
मीठा इससे विश्व में, ना कोई मिष्ठान

गज को पकड़ा ग्राह ने, बेबस हुआ अधीर
क्या आओगे नाथ जब, छूटे अधम शरीर

कृष्ण दुखों के अंत हैं, वे ही सुख के सार
जप ले माधव नाम तू, जब छोड़े संसार

गोपाला वंशीधरा, रूपसिन्धु लोकेश
दामोदर मधुसूदना, दीनबन्धु योगेश!

कृष्ण प्रतीक्षा

मोती प्रसाद साहू
अल्मोड़ा, भारत

दिन बीता पखवाड़ा बीता
बीत रहे हैं वर्ष।
पतझड़ गया ऋतुराज आया
धरती हुई सहर्ष॥

रंग-अबीर सभी ने खेला
गाया मिलकर फाग।
मेरु प्रतीक्षा के नीचे थे
दबे हमारे भाग॥

ग्रीष्म गया तन को झुलसाते
पावस पड़ी फुहार।
सावन झूला झूल रहा था
पिय करते मनुहार॥

आप गये मथुरा की नगरी
हम तो हुईं निसंग।
कैसे कर के झूला झूलें
कैसे धरें उमंग॥

लौट रहे हैं पक्षी दिन प्रति
चारा चुग कर नीड़।
बांट रहे हैं साथ बैठकर
दिनचर्या की पीड़॥

आते-जाते, सभी लौटते
करके नगर प्रवास।
लौटे नहीं कृष्ण हैं अब भी
मधुवन हुआ उदास॥

रखती स्वयं प्रतीक्षा भी है
मधुमय लय संगीत।
अब तो होती चली जा रही
वह भी कालातीत॥

प्रतीक्षा के पहाड़ पर ही अब
उगकर आता भानु।
पंकज तो खिलते हैं लेकिन
हमको लगे कृशानु॥

पूर्णचन्द्र बन मिल तो लेते
हे मधुवन के मीत।
आस-श्वास-विश्वास हमारा
सुरसरि सम सुपुनीत॥

कान्हा से संवाद

शशि पाधा
रेस्टन, यू.एस.ए.

कैसी उलझन पाली अब तक
मन से वाद–विवाद
सोचा अब तो कान्हा तुमसे
सीधा हो संवाद।

प्रतिदिन जो घट रहा धरा पर
नारद देते खबर नहीं?
चीरहरण या दुष्कर्मों का
कहीं किसी को डर कहीं?
भूल गये क्या कथा द्रौपदी
या है कुछ-कुछ याद?

बारम्बार पढ़ा गीता में
तुम हो अन्तर्यामी
कहाँ छिपे थे तुम जब
होती लज्जा की नीलामी?
'लूँगा मैं अवतार' वचन का
सुना नहीं अनुनाद!

तुमने तो इक बार दिखाई
मुँह में सारी सृष्टि
बन बैठे थे पालक–पोषक
अब क्यों फेरी दृष्टि?
क्या जिह्वा पर अब तक तेरे
माखन का ही स्वाद?

अब क्या कहना कान्हा तुमसे
आओ तो इक बार
पापों की गगरी अब फोड़ो
कुछ तो हो उपकार

बंसी की तानों में कब से
सुना न अंतर्नाद।

मन बावरा क्यों है?

उषा अवस्थी
लखनऊ, भारत

मन बावरा, मन बावरा,
मन बावरा क्यों है?
चाहे अखिल ब्रह्माण्ड नायक
साँवरा जो है
मन…

संसार के त्रय ताप से
होकर व्यथित, व्याकुल
चाहे सतत पीयूष शीतल
साँवरा जो है
मन…

लाख चौरासी भटकता
अति श्रमित, अति क्लान्त
चाहे परम विश्राम, शान्ति
साँवरा जो है
मन…

बचपन, जवानी, फिर बुढ़ापा
तन जरा जर्जर
चाहे सदा चिर रूप, यौवन
साँवरा जो है
मन…

पुकार

सरोज अग्रवाल
डेटन, यू.एस.ए.

कान्हा एक बार फिर आओ
भारत भूमि का कण कण
कर रहा दीन पुकार
कन्हैया आ जाओ इक बार।

देख तेरे इस प्यारे भारत की,
दीन दशा पर रोता है तन मन,
कहाँ छुपे बैठे हे कान्हा,
आकर दरश दिखाओ।

द्वापर युग में तुम आए थे,
जब अधर्म ने पैर पसारे
तुमने आकर हे मनमोहन,
तब शंखनाद सुनाया।

आज तेरी इस पावन भूमि पर
हो रहा पुन: अधर्म का तांडव नर्तन,
दुराचार और भ्रष्टाचार ने मोहन,
जन-मन का विश्वास डिगाया।

दुष्टों ने गंगा-जमुना जल को,
दूषित करने का मन ठान लिया है
अपने पावन चरण स्पर्श से मोहन,
जन मानस में कोमल भाव भराओ।

वैमनस्य, विरोधों में पलता मानव,
नफ़रत की श्वासें भरता है,
नित नूतन कांड से ठगते,
हम मानव को सही राह दिखाओ।

दुर्भावनाओं की यह शृंखला
विशृंखलित होनेका नाम न लेती
अपने सुदर्शन चक्र से मोहन
नव जागृति का पाठ पढ़ाओ।

आज नारी नहीं सुरक्षित,
दिन भी तो नहीं है रक्षित,
अस्त-व्यस्तता से भटकी,
संस्कृति में नव विश्वास भराओ।

देशाध्यक्ष का मान नहीं हैं
देश प्रेम का भी ज्ञान नहीं है
मैं-मैं के इस क्रूर क्रंदन में,
मधुर वंशी नाद सुनाओ।

अपने चरणों की रज दे दो माधव
जन जन में विश्वास है भर दो,
प्रेम मार्ग पर आगे बढ़ने का
मंगलमय मार्ग सुझाओ।

दर्शन दो हे साँवरे

विजय गिरि गोस्वामी 'काव्यदीप'
बाँसवाड़ा, भारत

कृपा करो हे कृष्ण हरि! तुम्हें नवाऊँ माथ।
कृष्ण काव्य कैसे लिखूँ, सर पर धरिए हाथ॥

मथुरा राजा कंस था, अत्याचारी अंध।
डाल रखे वसु-देवकी, कारा में कर बंध॥

जन्म देवकी अंक से, पितु वसुदेव कुमार।
बड़े भाग हरि ने लिया, स्वयं यहाँ अवतार॥

खुली जेल उस वक्त ही, था माया का काम।
लिये कृष्ण वसुदेव तब, पहुँचे गोकुल धाम॥

यहाँ मिले पितु नंदजी, मात यशोदा नाम।
पहुँच गये थे पूर्व ही, भाई श्री बलराम॥

माता के प्यारे बनें, लल्ला पाया नाम।
बचपन में ही कर दिये, कई बड़े से काम॥

माखन खाना लूटकर, इनको बड़ा पसंद।
इनसे बतियाते हुए, आता अति आनंद॥

कृष्ण प्रेम में गोपियाँ, खोयीं अपने आप।
जागत-सोवत हर घड़ी, कृष्ण-कृष्ण ही जाप॥

पता चला जब कंस को, गोकुल में हैं श्याम।
भेज बुलावा श्याम को, बुला लिये निज धाम॥

खेल बहाने कंस तो, करने लगा प्रहार।
जब देखा श्री श्याम ने, किया तभी संहार॥

गोकुल में अब गोपियाँ, तड़पें दिन अरु रात।
एक बार श्री कृष्ण तुम, आकर कर लो बात॥

व्याकुल हैं श्री कृष्ण भी, गोकुल को कर याद।
उद्धव को वो भेजते, करने को संवाद॥

उद्धव अब समझा रहे, योग तत्त्व का सार।
ब्रह्म-योग को सीख लो, बाकी सब बेकार॥

मना करें सब गोपियाँ, कृष्ण हमारा प्यार।
उसे छोड़ कुछ औ नहीं, करने को तैयार॥

हार गये उद्धव स्वयं, देख कृष्ण से प्यार।
निराकार पर पड़ गया, भारी था साकार॥

ईश्वर की महिमा 'विजय', कहाँ समझता कौन।
अपढ़ गोपियन सामने, उद्धव भी थे मौन॥

जब-जब धरती पर यहाँ, बढ़ता पापाचार।
थापन करने धर्म का, लेते हरि अवतार॥

कौरव अधर्म रूप में, धरती पर थे भार।
तब प्रेरित पांडव किये, करवाया संहार॥

कई नाम श्री कृष्ण के, दामोदर गोपाल।
श्याम बिहारी साँवरा, कन्हैया नंदलाल॥

मोर मुकुट बंसी अधर, बैजंती गल माल।
श्याम गात पर पीत पट, टीका शोभे भाल॥

आँखों में हरि छवि बसी, जिव्हा पर है नाम।
अंतर गुण गाता सदा, जय जय राधेश्याम॥

दर्शन दो हे साँवरे, कब से रहा पुकार।
मन मंदिर में आ बसो, हे मेरे दातार॥

मिलन की आस

उषा मेहरा
ह्यूस्टन, यू.एस.ए.

चाहने से आप मिल जाते
ढूँढने से आप मिल पाते
फिर तो सभी को मिल जाते?

बंद आँखों में देखना चाहा
मंदिरों में भी ढूँढना चाहा
कुछ तो निशान मिल जाते?

आसमाँ की शून्यता में
बादलों की घनघनाघट में
झील में चाँद बनके दिख जाते?

कैसे यह मान लूँ,
कैसे यह जान लूँ
घट घट में तेरा बसेरा है?

है प्रश्न यह सबका,
विश्वास करके पक्का
मैंने साहस करके पूछा है।

अभी आस बाक़ी है,
जन्मों की प्यास बाक़ी है
जीवन को एक दिशा भी है।

मानूँ कि देखा मीरा ने
जानूँ कि पाया राधा ने
तुम अगर राम बन के आ जाते?

कृष्ण भला क्यों आएँगे

रुचि श्रीवास्तव
लखनऊ, भारत

अब कृष्ण भला क्यों आएँगे?
तुम कैसे उन्हें बुलाओगी?
श्री कृष्ण भला क्यों आएँगे?

उस युग में थी एक द्रौपदी,
दुर्योधन, दु:शासन एक,
कौरव राजसभा का बहरा,
अंधा, खड़ा प्रशासन एक।
समझ रही द्रौपदी कदाचित
ये जन उसे बचाएँगे!

इस युग में धृतराष्ट्र बहुत हैं,
अगणित उनकी संतानें!
अपमानित द्रौपदियाँ होतीं,
यहाँ, वहाँ, कितनी, जाने!
प्रभु आकर नर-पशुओं को
क्या मानवता सिखलाएँगे?

स्वयं सबल बन, निज रक्षा का
काल, समझ लो आया है ।
आदि-शक्ति के तेजोबल को
विजित कौन कर पाया है?
प्रभु का है आशीष तुम्हें
वे समा तुम्हीं में जाएँगे!
अपने अंदर झांको, तुमको
कृष्ण वहीं मिल जाएँगे।

तुम अब क्यों उन्हें बुलाओगी,
श्री कृष्ण भला क्यों आएँगे?

हे हरि

मधु खन्ना
ब्रिज़बन, ऑस्ट्रेलिया

हरि अनंत हरि कथा अनंता
गुण गाऊँ कैसै भगवंता
मैं मूरख, अक्षर ना जानूँ
दीजौ ज्ञान, प्रेम बस मानूँ।
तू मेरे मन का, मनका है
समता का गुण तुझ से पाऊँ
जीवन अपना सरल बनाऊँ
निश्चल से स्वधर्म निभाऊँ
तेरी गाथा गाता जाऊँ
त्रिगुण योग मैं समझ ना पाऊँ
फल की आसक्ति को छोड़
निष्काम कर्म मैं करती जाऊँ
ज्ञान योग की अलख जगाऊँ
आत्मा अनात्म का विवेक हो
काव्य प्रेम से रचती जाऊँ
प्रेम भरे तेरे गुण गाऊँ।

कोमल कर्म कृत्य कर जाऊँ
निस्वार्थ भाव से धर्म निभाऊँ
पग मेरा रहे धरा पर समतल
परमात्मा की शरणागति पाऊँ
जन्म मरण से मैं छूट जाऊँ

ना धन मैं संचय करना चाहूँ
बस प्रभु तेरे ही गुण गाऊँ
कामना का त्याग कर
मैं शरण तुम्हारी आऊँ।
चिंता नहीं मैं चिंतन करती
हरि नाम को मन में भरती
स्वर्ण नहीं चाहूँ मैं देव
बस कंचन मुझे बनाना
मेरे हाथों से सत्कर्म सदा हों
सदबुद्धि मुझे दिलाना।

उठा तूलिका किन रंगो से
भर दूँ तुझ को कृष्णा
देव करो कुछ ऐसा
मन से भागे सारी तृष्णा।

मन का मनका जोड़ कर
प्रभु अक्षर ढूँढ़े मैंने
मेरे मन के हर अक्षर में
हरि मनका बन कर बैठे

मेरे मन में अलख जगा दो
ज्ञान का दीपक मन में जगा दो
अपने अश्रु से चरण धुलाऊँ
हृदय पुष्प पग में बिखराऊँ
राधा सी रंग में रँग जाऊँ
मीरा जैसी भक्ति पाऊँ
देव ध्वनि बस सुनती तेरी
मन के भीतर "हरि ओम्" मैं बुनती
तेरी काव्य रचना का लेखन मैं कैसै कर पाऊँ
अक्षर अक्षर जोड़ कर प्रभु तेरे ही गुण गाऊँ।।

कृष्ण तेरी प्रतीक्षा
काजरी गुहा
कोलकाता, भारत

यह बात है उन दिनों की
जब ध्वंस हो रही थी धरा।
हृदय था कलुषित छल कपट से
जब अराजकता का दौर था
चढ़ा।

यह बात है उन दिनों की
जब कृष्ण बने अवतार।
द्वेष अहं से ओतप्रोत
था मानव का यह संसार।

कृष्ण ने दिए दो विकल्प
"सेना लोगे या मुझे-"
पांडवों ने बढ़ाया हाथ
उन्हें तो बस कृष्ण ही सूझे।

यह बात है उन दिनों की
जब कौरव माँगे सेना।
युद्ध की माँग उन्होंने की
जब रक्त ही रक्त था देना।

भारी पड़ी वह बात मानव पर
जब कृष्ण ने छोड़ा साथ।
आज भी हैं हम कलियुग में
जब थामें ना कोई किसी का
हाथ।

अगर कृष्ण पधारें धरती पर
तब टले अँधेरी रात।
सच का ही बस बोलबाला हो
हो भाईचारे का साथ।

इतिहास अपने को दोहराता है
इसलिए कृष्ण तुम्हें है पुकारा।
मानव के प्रश्नों का करो हल
आ जाओ कृष्ण तुम दुबारा।।

तुम फिर आओ ना

हेम चन्द्र तिवारी
अल्मोड़ा, भारत

पदचाप पुन: गुंफित कर दे,
माँ का सूना आँगन भर दे।
पीतांबर, मोर मुकुट, वंशी,
फिर से जन-मन मोहित कर दे॥

हे कृष्ण! कालिंदी की धारा,
माँगे मनमीत कदंब भरा।
फिर जोह रही हैं बाट तेरी,
सखियाँ अठखेली करती सी॥

नवनीत आज फिर खोज रहा,
कर, जो उसके मनमीत धरा।
हैं गिरिधर के गिरिराज आज,
वर्षा वैभव, मकरंद, साज॥

माता लकुटी फिर सिरज रही,
गायें वंशी हित सिमट रहीं।
गोपाल खोजती हर गोपी,
माखन की मटकी भरी-भरी॥

तुम मथुरा से फिर आए ना,
फिर-फिर राधा अवलोक रही।
माता तेरी हर करनी को,
कर याद आज मन सोच रही॥

हे श्याम! तुम्हारे पग घुँघरू से,
मन-आँगन फिर छनक उठे।
मनमोहन तेरी मुरली सुन,
संपूर्ण चराचर चहक उठे॥

हे सृजनहार तेरी माया,
जन कौन यहाँ जान पाया।
कुब्जा बनती इस धरती को,
श्रीखंड लगा, दे प्रिय काया॥

कपटों की शोर-सभा में फिर,
है बिलख रही मानवता भी।
तू चीर बढ़ाकर करुणा का,
हर विपद, दिखा वह दृश्य सभी॥

विनती है मेरी हे मोहन!
तुम आओ और फिर जाओ ना।
मथुरा, गोकुल, वृंदावन हित,
सुर सुखद, राग भर जाओ ना॥

कन्हैया! भूल मत जाना!

राजेन्द्र स्वर्णकार
बीकानेर, भारत

हमारी लौ लगी तुमसे, कन्हैया! भूल मत जाना!
पुकारें जब तुम्हारा नाम हम, ...फ़ौरन चले आना!

बहाना मत कोई करना अरे नटखट! कभी हमसे,
कभी झूठे दिलासों से हमें बिलकुल न बहलाना!

किसी को भी बताया ही नहीं दुख आज तक हमने,
निभा देना, हमारे इस यक़ीं को तुम न झुठलाना!

हमें मालूम है, मसरूफ़ रहते हो हमेशा तुम,
बहाना करके तुम कोई, न हमसे हाथ छुड़वाना!

ज़मीनो-ज़र न दौलत माल धन कुछ चाहिए हमको
मगर छवि साँवले उस रूप की तो यार! दिखलाना!

सुदामा ज्यों हमें हक़ भी नहीं, धन माल लेने का,
घड़ी भर बस, हमें चरणों में अपने कान्ह! बिठलाना!

कोई जल्दी नहीं, ज़िद ही न फ़रमाइश कोई तुमसे,
कभी राजेन्द्र आना, और सर पर हाथ रख जाना!

मोरी सुध बिसराई

मनीष अरोड़ा 'अश्क'
उदयपुर, भारत

कान्हा मोहे दरस दिखा दे
मोरी सुध बिसराई...
भूल गयो शबरी को काहे
तू मेरो रघुराई...
मोरी सुध बिसराई...

ग्वाल बाल संग यमुना तट पे
बंसी मधुर बजाई...
पनघट पे फोरी मोरि गगरिया
तू कैसो हरजाई...
मोरी सुध बिसराई...

राह चलत पकरी मोरी कलइयाँ
तोहे लाज न आई...
लोग लुगाई देवे उल्हाना
माखन चोर कन्हाई...
मोरी सुध बिसराई...

जित देखूँ उत देखूँ कान्हा
माया कैसी रचाई...
नाग कालिया मर्दन कीन्हों
फन फन नृत्य कराई...
मोरी सुध बिसराई...

मुझे मीरा होना पसंद है!

शीतल जैन "अहमक लड़की"
सिंगापुर

कान्हा, तुम बस
कान्हा रहो
और मैं…
मैं कभी राधा,
कभी रुक्मणी,
तो कभी मीरा बन
तुमको ठीक वैसे ही
धारण करुँगी
जैसे तुम अधरों पर मुरली
और सर पर मोर पंख
धारण करते हो।

जिस पल तुम होते हो
मेरे ख़यालों में
मैं राधा बन जाती हूँ
रास रचाती हूँ तुम संग
तुम्हारी मुरली की तान पर
थिरकती हूँ मैं बेसुध।

जिस पल मैं होती हूँ
तुम्हारे ख़याल में
रुक्मणी बन जाती हूँ
स्वामिनी कर देते हो मुझे तुम
ना सिर्फ तुम्हारी
बल्कि पूरे ब्रह्माण्ड की।

कान्हा, लेकिन
जिस एक पल हम दोनों एक साथ
एक-दूजे के ख़याल में होते हैं।
तब...
तब मैं तुम से भी ऊपर होती हूँ
तब मैं रचती हूँ तुमसे,
बसती हूँ तुम में
लीन हो जाती हूँ तुम ही में।

तुम्हारे ख़याल मुझसे मिल कर
मुझे मीरा कर देते है
और मुझे मीरा होना पसंद है!

दोहा एकादशी

कैलाश गिरि गोस्वामी
बाँसवाड़ा, भारत

बंशीधर बन्शी बजा, तरस रहे हैं कान।
एक बार फिर से करो, गीता का वह गान।।

चक्र सुदर्शन कर लिए, उतरो प्रभु फिर आज।
ब्रज वृन्दावन द्वारिका, के हो तुम सरताज ।।

सोया हुआ पार्थ जगा, भर दो नूतन जोश।
कृष्णम् वन्दे जगद्गुरु, का हो फिर उद्घोष।।

केशव माधव मधुसुदन, हरि गिरधर गोपाल।
कृष्ण कन्हैयालाल जी, देखो जग का हाल।।

यमुना तट सूना लगे, जहाँ रचाया रास।
ग्वाल गोप के प्राण में, कौन भरे उल्लास।।

असुर देश को तोड़ते, करुणा करो बृजेश।
श्याम बुलाता आज है, तुम्हें तुम्हारा देश।।

कभी शंख मुरली कभी, कभी हाथ में चक्र।
कभी सरल सीधे कभी, कभी उग्र औ वक्र।।

जन्म हुआ था जेल में, गहन अँधेरी रात।
साँय-साँय चारों तरफ, और तेज बरसात।।

सघन अँधेरी रात में, प्रकटा प्रकाश पुञ्ज।
हर्षित वातावरण था, महके लहके कुञ्ज।।

तुम राधा के श्याम हो, मीरा के घनश्याम।
करुणालय प्रभु आपका, ब्रज वृन्दावन धाम।।

भले पधारो कृष्ण जी, जन्म दिवस पर आज।
राह तकें भक्तन सभी, पूरण कर दो काज।।

कृष्ण भक्ति

सन्तोष कुमार प्रजापति 'माधव'
महोबा, भारत

दुष्कर्मों से धरती पीड़ित,
असहनीय जब भार हुआ।
पथच्युत को तब राह बताने,
कान्हा का अवतार हुआ।।

बड़वानल सी नित अधर्म की,
सतत उग्रतर थी ज्वाला।
घने श्याम घनश्याम वारि ले,
बरसाने आया ग्वाला।।

गौ, भक्तों, सज्जन, नारी का,
निर्वाहन जब खार हुआ।
पथच्युत को तब राह बताने,
कान्हा का अवतार हुआ।।

मानवता हो गई विलोपित,
धर्म नाम की चीज नहीं।
मुँह खोला तो मरना निश्चित,
कहीं दया का बीज नहीं।।

त्राहिमाम ही त्राहिमाम जग,
कष्टों से बेजार हुआ।
पथच्युत को तब राह बताने,
कान्हा का अवतार हुआ।।

तपबल से सामर्थ्य प्राप्तकर,
उत्पाती मदचूर हुए।
प्राण हनन साधारण क्रीड़ा,
यम से ज्यादा क्रूर हुए।।

भरा पाप घट दरकाने को,
निराकार साकार हुआ।
पथच्युत को तब राह बताने,
कान्हा का अवतार हुआ।।

कर्ता-धर्ता खुद को समझें,
सृष्टि रचयिता और नहीं।
कहते हम दमखम देखेंगे,
आ लड़ले गर ईश कहीं।।

दुराचरण मिथ्याभिमान यों,
हरने को जब तार हुआ
पथच्युत को तब राह बताने,
कान्हा का अवतार हुआ।।

तू जब दुर्गा होगी

ओमप्रकाश गुप्ता
ह्यूस्टन, यू.एस.ए.

द्वापर युग की बात है, कल की जैसे बात है।
धृतराष्ट्र दरबार सजा, दुर्योधन ने द्यूत रचा।
शकुनि ने माया फैलाई, द्रुपद सुता तब बुलवाई।
दुशासन करने निर्वस्त्र लगा, मानवता का हृदय फटा।

भीष्म पिता ने मोड़ी आँखें, द्रोण गुरु बगले झाँकें।
मानवता का नाश हुआ, मानव पापों का दास हुआ।
कृष्णा ने केशव याद किये, प्रभु ने आकर चीर दिए।
द्रुपद सुता की लाज रखी, मानवता की रक्षा की।

द्वापर कब का बीत गया, दुर्योधन-दुशासन अब भी राजा।
नारी अब भी लज्जित होती, होता द्वापर फिर से ताजा।
कलियुग में अंतर इतना है, कृष्ण नहीं अब आते हैं।
दुष्टों से मिलने में अब तो, भगवान स्वयं कतराते हैं।

नारी, तू माता-पुत्री, दुष्टों के पापों को पड़ता सहना।
पुरुष वर्ग धृतराष्ट्र हुआ, रक्षा कौन करे तेरी बहना?
अपनी रक्षा तुम स्वयं करो, माँ दुर्गा का रूप धरो।
लो खड्ग हाथ में अपने तुम, दुष्टों का संहार करो।

दुष्ट दृष्टि जो भी डाले, दृष्टिहीन कर दो उसको।
अपशब्द कोई बोले यदि, गिराहीन कर दो उसको।
हाथों से पापी स्पर्श करे, भुजाहीन कर दो उसको।
नारी तू बनकर चंडी, पुरुषत्वहीन कर दो उसको।

तेरे भीतर है शक्ति अपार, संज्ञान ले और कर आह्वान
युग-युग से अत्याचार सहे, निज त्राण का तुझको वरदान।
नारी! सुन, वह दिन दूर नहीं, करबद्ध तेरी पूजा होगी।
खोया सम्मान मिले तुझको, 'ज्योति'! तू जब दुर्गा होगी।।

सूरत बाँकबिहारी की

मञ्जरी पाण्डेय
वाराणसी, भारत

मोहनी मूरति साँवरि सूरति, श्याम जिया को लुभाय रही
मोरपखा अरु कानन कुंडल, छवि अभिराम रमाय रही।
अधराधर पै बिराजति बाँसुरी, कान्हा ये मोको सुनाय रही
राधा के मोहन प्रभु मीरा के,"मञ्जरी" उर में समाय रही।

बैजन्ती गलमाल सुशोभित, पीताम्बरि हरषाय रही
तन सो लपटि कै चूम, वलयमणि भाग अपने इतराय रही।
करधनि कांछनि कटि सो बाँधी, धोती चम्पइ चमकाय रही
फूल शिरीष अरु पाटल बरसे, चरनन सिर हौं नवाय रही।

मृदु मंजुल मुस्कान तिहारी, दामिनि लुक छिप जाय रही
घट फूटै जल स्रोत से हे प्रभु, भाव सुधा सों नहाय रही।
गाउँ भजन कै अस्तुति तोरी, मोहन मैं भरमाय रही
नैनन भौन अरु भौंहन सो प्रभु, प्रीत जिया बहलाय रही।

जित देखूँ तित एक ही छवि हे! श्याम सलोने देखूँ तिहारी
रोग अँखियन के या मतिभोरी हौं, जान रहे हे कृष्णमुरारी।
कजरा भरे मद चंचल चितवन, चाँदनी भी सहलाय रही
मञ्जरी कै पुतरिन मा बसेरा, सुध बुध सब बिसराय रही।

हमारे यहाँ

मञ्जरी पाण्डेय
वाराणसी, भारत

कुंज करील औ कानन हैं नहि गोपिकावल्लभ आएँ कहाँ,
अधराधर जित राजति बाँसुरी सूखि गए नहि राधे यहाँ।
छाँव कदंब जमुनजल सोभै गोप न गोपिका कोई यहाँ,
कन्हैयालाल की जय जय गूँजत घर-घर मंगल गान यहाँ।।

हे री सखी पर कान्ह की बानगी वो तो छिपे उर मोरे यहाँ
कासे कहूँ किनकों दिखलाऊँ जो आँखिन रूप समाए यहाँ।
नेह से नेह लगे जिन हे सखि! वो ही करे रसपान यहाँ,
किरपा कै भण्डार भरे दधिमाखन दूध रसखान यहाँ।।

घर मंदिर में तोरण छाजन भई अलवात यशोदा यहाँ
छप्पन भोग सजे घर मंदिर सोहर भजन कै धूम यहाँ।
फूल खिले फुलवारी सजी घर घर जन्मे गोपाल यहाँ,
"मञ्जरी" तुलसी भोग लगै लड्डू गोपाल कै बास जहाँ।।

कृष्ण के कितने रूप

मधु चतुर्वेदी
लखनऊ, भारत

कृष्ण तुम इतने रूप कैसे जी पाते हो?
अनगिनत लीला रूप धारण किये
द्वेष रहित, कामना विहीन कैसे रह पाते हो?
माया-मोह खुद ही रचते हो
मोह पाश के इस बंधन में
कैसे मुक्त-निर्लिप्त रह पाते हो?
कृष्ण तुम इतने रूप कैसे जी पाते हो?
गोपियाँ कहें वो ठगी गईं
राधा कहे वो जीत गई
गोपियाँ कहें, कृष्ण उन्होंने पाया नहीं
राधा कहे, कृष्ण कभी खोया ही नहीं।
कृष्ण तुम इतने रूप कैसे जी पाते हो?
हर रूप तुमने अपना दिखलाया
ब्रह्म से लेकर जीव-आत्मा का रहस्य बताया
संयोग से वियोग दर्शन समझाने को उद्धव भी पठाया
क्यों गोपियों को अपना 'छलिया' ही भाया?
कृष्ण तुम इतने रूप कैसे जी पाते हो?
युग पर युग यों ही बीत गए
त्रेता, द्वापर, कलियुग बीते
कृष्ण तुम मथुरा रहे या द्वारिका
ब्रजवासी न तुमसे छूट सके
ये कैसा विश्वास है उनका कि
आज भी कदम्ब के कुञ्ज में रास रचे
बाहर घरों के बंद कपाट-खिड़की न खुले
इस विश्वास पे अटके-डटके बैठे हैं
'जिसने देखा, आँखें खो बैठा है
पत्थर बन कुञ्ज में रहता है'

कृष्ण तुम इतने रूप कैसे जी पाते हो?
वृन्दावन के कुञ्ज कहें अपनी ही कहानी
कृष्ण रचाएँ रास आज भी संग राधा रानी।
कृष्ण तुम दिखे न दिखे
तुम्हारे वहाँ होने का विश्वास न मिटे
इस पर ही ब्रज का मानस जीता है
कृष्ण तुम इतने रूप कैसे जी पाते हो?
सीमा से बाहर गलती पर माफ़ी
शिशुपाल को भी मिली नहीं
प्रेम में राधा हो या उद्धव-सुदामा हो
बिना मोल बिक जाते हो।
कृष्ण तुम इतने रूप कैसे जी पाते हो?
राजा न बने द्वारिका के
फिर भी द्वारकाधीश कहलाये
जन-उद्धारक हो इतने बड़े
कि ब्याह सोलह हजार रचाते हो
बेबस इतने आप में
राधा को ब्रज से निकाल नहीं पाते हो
न राधा से मिलने वापस जाते हो।
कृष्ण तुम इतने रूप कैसे जी पाते हो?
राधा को साथ ले के न चले
अपने नाम के आगे राधे लगवाते हो
'राधा के बिना अपने को अधूरा पाते हो'
आखिरी साँस में उद्धव को ब्रज भेज
ये सन्देश भेजने का मोह छोड़ नहीं पाते हो।
कान्हा-कन्हैया मनमोहक-नटखट मोहन से
निर्मोही-अनासक्त योगेश्वर कैसे बन पाते हो?
कृष्ण तुम इतने रूप कैसे जी पाते हो?

तेरा रूप बड़ा प्यारा

प्राची पाठक
बांसवाड़ा, भारत

कान्हा तेरा रूप बड़ा साँवरा, मैं तो हुआ बावरा, देख तुझे रे देख तुझे रे।
सर पे तेरे मोर पिछ बाँधा, मुख है माखन धारा, हरे कृष्ण रे हरे कान्हा रे।

जी करता है, तेरी शरण को घर अपना बना लूँ,
कान्हा कान्हा बोल के जीवन अपना सवारूँ,
दर्श तेरा पाने को, तुझ से दिल लगाने को
मैं तो तड़पूँ रे, देख तडपूँ रे।

तेरे संग में रास रचाऊँ, तेरे रंग रँग जाऊँ
भक्ति ऐसी मन में सजाऊँ, मैं मीरा हो जाऊँ
तेरी मुरली लगे बजने, मन को लगे हरने,
मैं तो तड़पूँ रे, देख तडपूँ रे।

तेरी महिमा मेरे कान्हा कोई नहीं समझता,
अब तो तुमसे जुड़ गया है, जन्म जन्म का नाता,
मुझ पर कृपा तेरी कर दें, तम को मेरे हर दे
मेरे कान्हा रे, हरे कान्हा रे॥

कान्हा

आभा सिंह
जयपुर, भारत

नीले हरे मोर पंख, नयनों के शांत शंख,
प्रेम रस अविरल, भक्त डूब रहे हैं।
बंसरी कर में धारे, आरोह तान सँवारे,
अवरोही धुन उठे, गृह गूँज रहे हैं।
अधरों में मधु जोती, वैजयंती माला मोती,
विनती में भावना की, लड़ गूँथ रहे हैं।
कन्हाई की छवि मोहे, राधिका जी संग सोहे,
अद्भुत आभा चक्र, आँखें मूँद रहे हैं।

दीवटों में ज्योति जैसा, सीपियों में मोती जैसा,
नैनों के उजाले प्यारे, कान्हा देखो आया है।
मीठी है उसकी बोली, मिसरी हो जैसे घोली,
सूरत तो मन मोहे, दिल में समाया है।
दुख में साथ निभाये, सुख में भी याद आये,
हर पल संग रहे, जैसे कोई साया है।
धन्य हैं भाग हमारे, पुण्य के ही फल सारे,
कन्हाई के नाम को ही, जीवन बनाया है।

नटवर नंद किशोर

सरिता तोतला
जयपुर, भारत

चंदन का पलना बना
बंधी रेशम की डोर
पलना झूल रहे कान्हा
मेरे नटवर नंद किशोर।

निरख निरख कान्हा को
हर्षित है माता यशोदा
मंद-मंद मुस्काए कान्हा
छवि निरखत हैं नंद बाबा,

छा गयी है खुशी देखो
गोकुल में चहुँ ओर
पलना झूल रहे कान्हा
मेरे नटवर नंद किशोर।

माथे पर तिलक सोहे
नैनों में है काजल
गोद में सुलावे मैया
डाल कर आँचल,

देतीं सखियाँ बधाई
गा रहीं मंगल गान
पलना झूल रहे कान्हा
मेरे नटवर नंद किशोर।

देख कर धन्य हो गयीं
सखियाँ नंद के लाला को
फूली ना समाय रही
दरस किया जब कान्हा को,

झूम झूम कर नाचे
गोपियाँ चहुँ ओर
पलना झूल रहे कान्हा
मेरे नटवर नंद किशोर।

चितचोर

शैल अग्रवाल
बरमिंघम, यू.के.

देवकी नन्दन कहूँ या मैं जसुमति को लाला
नन्दगाँव से बरसाने तक एक तुम्हीं तो नंदलाला
नन्दन वन गूँज रही पायलिया की रुनझुन
और दुष्टन हित धारो तुमने वो चक्र सुदर्शन
साँवली-सलोनी मूरत पे मोहित है हर प्राणी
गाय-बछिया गोपी-ग्वाले, चतुर राधा रानी।

सुरों में व्याप्त तुम्हीं अनहद नाद से
सूर मीरा रसखान के अंतस के निनाद घने
करते रास तुम्हीं जुगलकिशोर के रूप सजे
शैशव में कपटी बकासुर और पूतना को मारा
तरुणाई में जितनी गोपी उतने ही कान्हा
माखन चोर चित चोर तुम्हीं तो रणछोड़
बाँट लिया खुद को ही माखन मिश्री-सा
प्रेम पाश में बँध रिश्तों को दी नई परिभाषा
जितना देखा सुना और जाना तुम्हें छलिया
बुझे ना प्यास अतृप्त अंतस रहता प्यासा।

मुरलीधर, गिरधर, नाग नथैया, रास रचैया
चंद्र खिलौने पर मचलने वाले अगम अबूझ
कहीं मातु यशोदा हाथों खम्बों बँध जाते
कहीं गीता का ज्ञान दे मुँह में ब्रह्मांड दिखाते
हे योगेश्वर, नटखट कितने तुम लीलाधर
हर रूप तुम्हारा अनूप, आनन्द स्वरूप
मधुर सुभाषित सोलह कलाओं से पूर्ण।

एक तुम वो सुदामा के कृष्ण परवाह नहीं
गरीब-अमीरों की, मुट्ठी भर चावल पे रीझे
द्रोपदी के सखा भरी सभा में बचाई लाज
अबला के अँसुवन से सदा पसीजे
एक तुम वो, पार्थसारथी

निहत्थे ही पूरा कुरुक्षेत्र जीत आए
सच झूठ की परवाह नहीं की
मित्र के लिए यारों के यार ने।

हर रिश्ता ही तुम्हारा सदा संपूर्ण
जिसने भी तुम्हें चाहा पूरा ही पाया
फिर राधा का प्यार ही क्यों रहा आधा
हे गो-विन्द, गो-पालक, सर्वज्ञ, सृष्टि संचालक
कैसा था नेह का बंधन जो पूर्ण भी अपूर्ण भी
ललित करुण रम्य अगम्य पथ पाथेय दोनों
प्रेम विभोर अंतस में बैठा नित झूला झूले
आत्मा और शरीर-से रिंधे-बिंधे साथ तो
पर सुधि ही ना ली, दोबारा पलट के
क्या लौटना इतना कठिन था?
या कर्तव्य ही सर्वोपरि रहा कर्मयोगी
याद तो आते होंगे पर राधा संग कालिंदी तट
कदम्ब का पेड़ और बचपन के सखा सारे
छोड़ जिन्हें तुम द्वारिकाधीश बने
रुक्मणि संग ब्याहे, नया संसार रच डाला!

दूधिया चाँदनी से धवल
विरहन के सारे अश्रु मोती
ढुलके बिखरे गीतों और तस्बीरों में
चंदनहार से सुशोभित आज भी वक्ष तुम्हारे
अदभुत तुम अद्भुत इस नेहलीला के संदेश
त्याग ही सदा जिसका लक्ष्य और सुख
अलौकिक संजोग एक मोरपंखी!

गूँजते बाँसुरिया के मूक सुर
करुण अंतस को नित बींधते
आँखें गर मीचूँ तो चितचोर
राधारानी संग तुम मुस्काए
मधुबन में गूँज उठे बाँसुरिया
जुगल जोड़ी हिया में बिराजे
मंदिर-मंदिर जो पूजी जाए।

सूरत सुहानी है

हरिवल्लभ शर्मा 'हरि'
भोपाल, भारत

अखियाँ विशाल तेरी, मतवाली चाल तेरी,
बातें हैं कमाल श्याम, सूरत सुहानी है।
लेके संग ग्वाल बाल, गली गली में धमाल,
सीधी सादी ग्वालिनों की, करे छेड़खानी है।
दधि माँगता है दान, कान्हा बने हैं नादान,
करे परेशान सखी ललिता सयानी है।
बाँसुरी की छेड़े तान, भूल राधा आन बान,
महारास राचने की, अजब कहानी है।

छेड़ते हैं दाऊ भैया, डाँटती यशौदा मैया,
छोटी है चुटैया, तेरो छोटो सो गोपाल है।
माखन की करे चोरी, और मटकी भी फोरी,
करे बरजोरी मैया, तेरो नंदलाल है।
गेंद यमुना गिराये, कूद कालिंदी में जाए,
कालिया को नाथे वो, जो विषधर काल है।
पट ग्वालिन चुराये, चढ़ कदंब पे जाए
अति तड़पाये मैया, कैसो तेरो लाल है।

संतुलन

अलका प्रमोद
लखनऊ, भारत

कृष्ण-कन्हैया रूप तुम्हारा
हर क्षण रंग बदलता है,
चकित कभी, आह्लादित करता
मेरे मन को छलता है।
कभी कुंज गली मथुरा में
रास रचाते, राधे के संग।
योगेश्वर बन दर्शन देते,
दिखता तब, आध्यात्मिकता का
रंग।
हर नीति में प्रवीण तुम,
राजनीतिज्ञ न दूजा तुम सा है।
अध्यात्म का प्रतिरूप तू,
रूप विश्व-विधाता का है।
बाँसुरी की धुन पर तेरी,
जड़ चेतन विमोहित हुआ।
और शत्रु ने ललकारा तो,
योद्धा न तुम सा हुआ।
एक ओर नृत्य कला,
के तुम श्रेष्ठ ज्ञाता हो।
दूजे कलारीपट्टु के
तुम ही जन्मदाता हो।
एक रूप लावण्य भरा,
तेरा मृदु किशोर सा।
सुन त्राहिमाम, किया रक्षा,
गोवर्धन उँगली पर उठा।
कभी चपल, चंचल, सलोना,
मोहक रूप दिखाते हो।
कभी गुरु गंभीर बन
ब्रह्मांड दर्शन कराते हो।
प्रभु अचंभित रूप से तेरे
कितने रूप हैं, कितनी शक्ति।
मूर्ख प्राणी भ्रमित है प्रभुवर,
किस रूप की, करे वह भक्ति।
हर रूप निराला हरि तेरा,
किया संतुलन हर गुण का
संतुलन का मंत्र यही है,
जो जग को तुमने दिया।

श्याम रंग

सोमनाथ बी डनायक
कानपुर, भारत

खग वृंद करें छंद, पवन है मंद मंद
आज मेरी वाटिका तरंग में नहाई है
पुष्प संग झूम रही, लिए मन मकरंद
भ्रमर का नाद सुन कलि मुसकाई है
मन की उमंग देख, परवश अंग देख
आज मेरी कविता प्रथम लजाई है।

टेसुओं में पड़े रंग, नयी रश्मियों के संग
सप्तरंग फागुन ने ली अँगड़ाई है
कोयल है कूक रही, पत्र-पत्र उन्मत्त
बड़, आम, नीम शाख, शाख बौराई है
चढ़ा ज्यों ही श्याम रंग, राधिका के अंग-अंग
श्यामा बन बंसी के संग इठलाई है।

राधा देखे चहुँ ओर, कौन है ये चित-चोर
कान्हा ने प्रथम आज बंसी बजायी है
उर को टटोल रही, मधुरस घोल रही
प्रेम की ये कैसी आज अगन लगाई है
सूर-रसखान भले पृथक हैं पंथ
किन्तु दोनों की ही बंसी ने प्रेम-धुन गाई है।

प्रेम-हार, रस-रंग, कोमल स्पर्श संग
आज कोई रूपसी मन में समाई है
हृदय हुआ विहंग, अंग अंग चढी भंग
मचल-मचल उठे कैसी तरुणाई है
रंग, रूप यौवन हैं छिपे अंग-अंग जैसे
आज मेरी कविता श्रृंगार कर आयी है
आज मेरी कविता श्रृंगार कर आयी है।

जिया हेरान

विनय विक्रम सिंह 'मनकही'
नोयडा, भारत

मोहन लाव जिया तनि हेरि।
हेरि थकी कस छूटि गयो कहँ, कुञ्ज गली लखि टेरि।।
टेरि सुने नहि ढीठ लुका अस, लाव तनी इहँ घेरि।।
घेरि मिलै जु सयान कहूँ फुर, बाँधि धरौ यहि बेरि।।
बेरि समान कितौ बिलि गा वह, आनि दियो यहि फेरि।।
फेरि तबै मनिहौं यहि पूरन, हाथ लगै जिउ ढेरि।।
ढेरि अनूठ दई तुमहीं मुल, आय गयी सुधि चेरि।।

राधा और ध्यान-योग

आरती 'लोकेश'
दुबई, यू.ए.ई.

श्याम धन नहीं साधारण, ऊधो! ये अविनाशी नाते,
प्रेम पाहन गढ़ी वह उक्ति, तोड़े से नहीं मिटे मिटाते।

मैं प्रणय का गीत लिखती, वे विरह का राग गाते,
तब भी श्रुतियाँ स्वर जुड़े ये, एक बंदिश थे समाते।

मैं उदय के संग थिरकती, वे अस्तांचल पर भू सजाते,
मोरपर सी बिखरी किरणें, समेट नित भाल पर सजाते।

मैं सागर तरंग सी उठ डूबती, वे डूबते को पार उतराते,
तल तक गिरे को शीश धर, अनिंद्य कर उच्च उठाते।

मैं शालीन लाज रजमूर्त, वे चंचल नटखट इठलाते,
कंपित तन लाली हया की, नीलवर्ण तन ढक छुपाते।

मैं शुष्क रस सरल कुसुम, वे रसप्रिय मधुकर कहलाते,
बगिया चुन मन भाव पिरकर, इक सूत्र कंठ-हार बनाते।

मैं ग्राम गोपिका वृष बाला, उन्हें राजसी भोग लगाते,
अभागी के सुभग जगे जो, दुमहलों बसे कुँवर सुहाते।

मैं सौम्य शांत मगन रहाती, वे मुग्ध मनोहर तान सुनाते,
मखमली प्रेम आलापों में, उद्विग्न हिय कुछ बोल जाते।

मैं अभिलाषी दो बाँहों की, जिनमें मुरली सदा थमाते,
थामने प्रेम नयन रथ डोर, कब कर्त्तव्य-पथ को ठुकराते!

मैं विमुक्त कवि परिकल्पना, वे कारागार तम प्रजाते,
निकुंज वासिनी को अमरत्व, देने बेड़ियाँ तोड़ आते।

मैं अपूर्ण वे पूर्ण ब्रह्म सत्य, वे रचे हमें हम उन्हें बनाते
ज्यों नवनीत बसे गौरस में, गिरिधर ब्रज के रंग बसाते,

ऊधो! मैं ऐसी न नादान, तुम ध्यान योग मुझको बतलाते,
कान्हा का ध्यान कान्हा से योग, जीवन-सार हमीं गहाते।

राधा खड़ी सदी से

हरिहर झा
मेलबोर्न, आस्ट्रेलिया

श्याम सलोने
पलक बिछाऊँ, बसी मूरत न हटती।

राधा खड़ी सदी से
जाने पनघट पर, जल भरने
जेल जनम कब लोगे मोहन, जग का संकट हरने

भोली बहना कैद,
निर्दयी कंस की नहीं पटती।

राधे मोहन
एक रूप हैं, कवि-वचनामृत तिरछे
राधा-वेश में कृष्न आये,
कृष्न किधर हैं पूछे
कान्हा बन कर
राधा आई, 'राधे! राधे!' रटती।

छाछ के लिये नाचे कान्हा,
भगत रसखान बोले
रहीमदास
गूढ़ रहस्य को, दो शब्दों में खोले
गिरधर को
कह दो मुरलीधर, तो ना महिमा घटती।

राधाकृष्ण

माया बंसल
ऑरेंज, यू.एस.ए.

बृज की हर बीथी में निशदिन, राधे-राधे की गूँज है
कृष्ण विराजें मन्दिर-मन्दिर, राधा संग में शोभित हैं
वृन्दावन में साँयकाल को, ठौर-ठौर में रास रचैं
बालकृष्ण और राधा बनकर, बच्चे मनमोहित कर लैं
गोपी-ग्वाले सजें बहुत विध, राधा गोपी नृत्य करैं
मध्य खड़े कान्हा मुस्कायें, बाँसुरी की तान छिड़े।

मथुरा को प्रस्थान किया तब, राधा ब्रज में ही रहीं
साथ कृष्ण के नहीं गईं, रानी पटरानी नहीं बनीं
त्याग-तपस्या की मूरत बन, सदा कृष्णमय बनी रहीं
प्रेम अलौकिक ऐसा था कि, कृष्ण-हृदय में सजी रहीं
नहीं रखी थीं कोई कामना, आदर्श भक्ति का बनी रहीं
गोविंद ने भी मान रखा, सदा नामसंग जुड़ी रहीं।

शुध्द आत्म का परमात्म में, चिरमिलन है राधाकृष्ण,
इनको अलग कभी न समझो, बिन-राधा अधूरा जाप
भक्ति-स्वरूपी राधा जप लो, कृष्ण सुलभ हो जायेंगे
आत्मा को शुध्द बना लो, परमात्म मिल जायेंगे।
हृदय प्यार से पूर्ण हो, आनन्दमय मन मस्तक हो
कृष्ण सरीखा नृत्य करो, थिरकन हर अंग-अंग में हो।

कृष्ण रूप में परमातम ने, जीवन के सब रूप जीये
निर्लिप्त रहे सभी रूपों में, चाहे महासंग्राम किये
कृष्ण ने आदर्श रखा है, कभी पलायन नहीं करो
जीवन के सब रूप जीओ, गीताज्ञान आगे रखो
समझो मर्म इसी जनम में, कर्म भक्ति और ज्ञान का
गीता अरु उपनिषद समझो, जन्म सफल हो मानव का॥

कृष्ण के नाम में राधा

संगीता अग्रवाल
अहमदाबाद, भारत

कृष्ण के नाम में राधा समायी है,
शक्ति बन राधा कृष्ण पर छायी है,
राधा बिन कृष्ण अकेले, अपूर्ण हैं,
राधा तो कान्हा के प्रेम की शहनाई है।

राधाकृष्ण का प्रेम है सात्विक सत्य,
लीला, रास प्रेम का नया रूप नित्य,
दो ज्योतिरूप पर एक आत्मा तत्व,
रासलीला करने को दो काया बनायी है,
कृष्ण के नाम में राधा समायी है।

जगत करता है कृष्ण की आराधना,
जगतपति कृष्ण करे राधा की साधना,
मुग्ध होकर दोनों ही करे है उपासना,
मन से मन की अदभुत ये सगाई है,
कृष्ण के नाम में राधा समायी है।

कृष्ण प्रेम से भरा है राधा का तन मन,
राधा है कृष्ण के लिए अनुपम धन,
राधा की सुन्दरता पर मोहित है मोहन,
प्रेममूर्ति राधा कान्हा के दिल भायी है।
कृष्ण के नाम में राधा समायी है।

राधे रानी

रेखा राजवंशी
सिडनी, ऑस्ट्रेलिया

होरी होरी आई हिया हुलस-हुलस जाए,
राधे रानी रावरे के रंग, रंग राती हैं

सर-सर सर से चुनरिया सरक जाए
गोरे-गोरे गालों पे गुलाल सकुचाती हैं

साँवरे सलोने सुर बाँसुरी का तेरा सुन
तन-मन भूल सुध-बुध बिसराती हैं

कोई, कहु कहे कान्हा आए, कान्हा आए सखि,
लाज से सिमट झट घुँघटा गिराती हैं

भर पिचकारी कान्हा ने जो मारी भीगी सारी,
सारी भीगी राधा, कान्हामय हुई जाती हैं

राधा कृष्ण की प्रीत

सुशील शर्मा
नरसिंहपुर, भारत

राधा-
पल पल राह निहारती, आँखे तेरी ओर।
जब से बिछुड़े साँवरे, दुख का ओर न छोर।

कृष्ण -
पर्वत जैसी पीर है, हृदय बहुत अकुलाय।
राधा राधा जपत है, विरही मन मुरझाय।

राधा -
कान्हा तेरी याद में, नैनन नींद न आय।
काजल अँसुवन बहत है, हिया हिलोरें खाय।

कृष्ण -
मुकुट मिला वैभव मिला, और मिला सम्मान।
लेकिन तुम बिन व्यर्थ सब, स्वर्णकोटि का मान।

राधा -
कृष्ण कृष्ण को देखने, आँखें थीं बेचैन।
वाणी तेरा नाम ले, थके नहीं दिन रैन।

कृष्ण -
जबसे बिछुड़ा राधिके, नहीं मुझे विश्राम।
हर पल तेरी याद है, हर पल तेरा नाम।

राधा (व्यंग्य से)-
स्वर्ण महल की वाटिका, और साथ सतभाम।
फिर भी राधा याद है, अहोभाग्य मम नाम।

कृष्ण -
स्वर्ग अगर मुझको मिले, नहीं राधिका साथ।
त्यागूँ सब उसके लिए, उसके दर पर माथ।

राधा -
सुनो द्वारिकाधीश तुम, क्यों करते हो व्यंग।
हम सब को छोड़ा अधर, जैसे कटी पतंग।

बने द्वारिकाधीश तुम, हम ब्रजमंडल ग्वाल।
हम सबको बिसरा दिया, हो गए कितने साल।

कृष्ण -
सत्य कहा प्रिय राधिके, मैं अपराधी आज।
किन्तु तुम्हारे बिन सदा, पंछी बिन परवाज।

राधा बिन नीरव सदा, मोक्ष, अर्थ अरु काम।
नहीं बिसरता आज भी, वो वृन्दावन धाम।

राधा -
बहुत दूर तुम आ गए, कृष्ण कन्हैया आज।
तुमको अब भी टेरती, गायों की आवाज़।

ब्रजमंडल सूना पड़ा, जमुना हुई अधीर।
निधिवन मुझसे पूछता, वनिताओं की पीर।

बहुत ज्ञान तुमने दिया, गीता का हो सार।
क्यों छोड़ा हमको अधर, तुम तो थे आधार।

कृष्ण -
कर्तव्यों की राह पर, कृष्ण हुआ मजबूर।
वरना कृष्ण हुआ कभी, इस राधा से दूर।

जनम देवकी से हुआ, जसुमति गोद सुलाय।
ग्वाल बाल के नेह की, कीमत कौन चुकाय।

कृष्ण भटकता आज भी, पाया कभी न चैन।
कर्तव्यों की राह में, सतत कर्म दिन रैन।

युद्ध विवशता थी मेरी, नहीं राज की आस।
सत्य धर्म के मार्ग पर, चलते शांति प्रयास।

राधा (मुस्कुराते हुए)-
भक्तों के तुम भागवन, मेरे हो आधीश।
अब तो आँखों में बसो, आओ मेरे ईश।

सौतन बंशी आज भी, अधरों पर इतराय।
राधा जोगन सी बनी, निधिवन ढूँढन जाय।

कृष्ण -
नहीं बिसरत है आज भी, निधिवन की वो रास।
राधे तुम को त्याग कर, खुद भोगा वनवास।

बिन राधे कान्हा नहीं, बिन राधे सब सून।
बिन राधे क्षण क्षण लगे, सूखे हुए प्रसून।

बनवारी सबके हुए, राधा, कृष्ण के नाम।
बिन राधा के आज भी, कृष्ण रहें बेनाम।

भक्त सुशील -
कृष्ण प्रेम निर्भय सदा, राधा का आधार।
राधा, कृष्ण संग सदा, कृष्ण रूप साकार।

परछाईं बन कर रहीं, राधा, कृष्ण सरूप।
दोनों अमित अटूट हैं, एक छाया एक धूप।

राधा वनवारी बनी, कृष्ण किशोरी रूप।
कृष्ण सदा मन में रहें, राधा ध्यान सरूप।

परिभाषित करना कठिन, राधा जुगल किशोर।
किया समर्पित कृष्ण को, राधा ने हर छोर।

तन मन से ऊपर सदा, प्रिया, कृष्ण की प्रीत।
जोगन सा जीवन बिता, मीरा, कृष्ण विनीत।

कृष्ण सिखाते हैं हमें, मानवता संदेश।
जीवन में निर्झर बहो, हरो विकार क्लेश।

कर्म सदा करते रहो,फल की करो न आस।
सुरभित जीवन हो सदा, गर मन में विश्वास।

राधे-राधे

मधु चतुर्वेदी
लखनऊ, भारत

राधा बन गयी वाणी मथुरा-वृन्दावन-बरसाने की
राधा बन गई वाणी युग-युग की
अजर-अमर गीतों की वाणी।
अंगीकार हुई बस 'राधे-राधे'
हर बात के पीछे बस 'राधे-राधे'
वृन्दावन राधेमय कब? कैसे हो गई?
वाणी राधे-राधे बिना अधूरी कैसे हो गई?
पसंद आये तो सुन लो कथा
नहीं तो फिर 'राधे-राधे'।
बात जँचे तो 'राधे-राधे'
बात लगे तो 'राधे–राधे'
बात चुभे तो 'राधे–राधे'
बात कटे तो 'राधे-राधे'।
आई समझ में बात बस 'राधे–राधे'
इतनी सी न समझ सके 'राधे-राधे'।
भूख लगे तो 'राधे-राधे'
पेट छके तो 'राधे–राधे'।
वेद-पुराण कहें वे वेदान्ती थीं
रामावतार में उनकी अतृप्त अभिलाषिणी थीं
कृष्ण रूप में तो फिर धरती पर आना ही था
वेदांती गोपियों का कर्ज चुकाना था।
सच तो है भगवद् की वाणी
'ये यथा मां प्रपद्यन्ते तांस्तथैव भजाम्यहम्'
साथ-साथ न चले राधा-कृष्ण
राधा को अपने नाम के आगे लगाना ही था
बिना कहे मन की सब कह गए कान्हा 'राधे-राधे'॥

राधारानी और श्रीकृष्ण

आराधना झा श्रीवास्तव
सिंगापुर

राधा भी होती कृष्ण सी पूजित?
यदि वह भी कृष्ण सी होती?
अनगिनत स्नेहाकांक्षाओं को
यदि पलकों में अपने सँजोती?

क्या संभव था उनको मिलना
गोपों का प्रेम-समर्पण?
क्या जग देता राधा को भी
कृष्ण सा ही समर्थन?

राधे के अधरों की मुरली
जब छेड़ती प्रेम का राग,
सुधबुध बिसरा झूमते गोप
तन-मन में भर अनुराग।

आनंद प्रेम के नृत्य में
लय-ताल में बजते हस्तक,
राधारानी के पैरों पर
हो जाते सब नतमस्तक।

भेदयुक्त देह से परे
था संभव समभाव का रास?
लौकिक दृष्टिवानों के
क्या अंतस में होता उजास?

राधा को समर्पित ऐसा प्रेम
अलौकिक अनुपम कहलाता?
इस ऐनकधारी समाज की
सहज स्वीकृति पा जाता?

या त्रेतायुग का कोई धोबी
द्वापर में भी आ जाता...
हृदय की रानी राधा को
राग विहाग सुना जाता।

क्या प्रेम का पावन रुप
अग्निपरीक्षा दे पाता?
या संताप के भार से दबकर
धरती में पुन: समा जाता।

राधा में साहस था अदम्य
उन्हें सीमा बाँध न पायीं,
न बँधी वह लौकिक बंधन में
उन्हें प्रेम की दुनिया भायी।

वह पूरक नहीं किसी की
स्वयं में पूर्णता लाती हैं,
वह प्रेम का अनुपम भाव है
कृष्ण को विस्तार दिलाती हैं।

अपने उदात्त प्रेम के 'श्री' से
कृष्ण को 'श्रीकृष्ण' बनाती हैं,
कृष्ण न कहलाते राजा
पर राधा रानी कहलाती हैं।

कृष्ण आनंदिनी राधा

रीता पाण्डेय
सिंगापुर

कान्हा की बजती मुरलिया,
राधा की छनके पायलिया।
शक्ति स्वरूपा दिव्य राधा,
सहचरी मुरलीधर की।
गोपियों की प्रिय है राधा,
वृषभानु की लाड़ली।
बरसाने की शान राधा,
निकुंज स्वामिनी रासेश्वरी।
राधा व कृष्ण संगम,
अमृत भरी गागरिया।

कान्हा की बजती मुरलिया,
राधा की छनके पायलिया।

यदुनंदन की मुरली धुन,
सुन राधा बनी बावरी।
कृष्ण अधूरे राधा बिन,
राधा अधर की बाँसुरी।
कंचनवर्णी सुभग भामिनी,
राधा मृदुल भाषिणी।
पूर्णिमा रात्रि महारास में,
राधे संग नाचें साँवरिया।

कान्हा की बजती मुरलिया,
राधा की छनके पायलिया।

राधा प्रेम पाश में बँधे
श्याम बने हैं मनिहारी।
बरसाने की गलियों में,
घूम रहे हैं बनवारी।
राधा है बड़भागिनी,
प्रेमाधीन हुए हरि।
राधा ही तो प्रियतमा,
मोहन की है प्राणप्रिया।

कान्हा की बजती मुरलिया,
राधा की छनके पायलिया।

राधा-कृष्ण पत्र व्यवहार

डी.पी. सिनालि नदीपमा पतिरण
तोलंगमुव, श्री लंका

राधा का कृष्ण को खत
सुनसान है वृंदावन आज भी।
लोग कहते हैं पूरी गलती तेरी,
पर मुझे तो पता है तू गलत नहीं।
कभी इक दिन मैं दूँगी गवाही तेरी।

हर पल मेरे संग रहने का वादा,
कल भी था मेरे मन में, है आज भी ताजा।
सब कहते हैं तू मुझे छोड़कर चला गया,
पर मैं यह कहूँ, तू मेरे मन में है ज़िंदा।

मुरली की स्वर-लहरें हैं अभी दिल में।
सच में वही है रिआयत मन की मेरे।
पास तो नहीं है श्याम, तू दूर है मुझसे,
पर मैं यह ख़त भेजूँ, लिखे हैं सपने मेरे।

यकीन तो नहीं कि तेरी शादी हुई मथुरा में।
क्योंकि प्यार का एतबार रखती हूँ मैं तुझपे।
माँ यशोदा भी ढूँढ़ रही है दिलासा बिना तेरे,
पर मैंने उससे कहा तू कुछ दिनों में लौटके आए।

श्याम तेरे बिन पूरा गोकुल है अँधेरा।
सबके इलज़ाम पाकर मैंने आँसू छुपाया।
ज़रा आके बता तू हमारे प्रेम की परिभाषा।
लोग समझें गलत नहीं तू मेरे प्रेम की साया।

बिखरे प्रेम की ख़ुशबू मैंने इक संदूक में रखी।
उसे मथुरा तक लेकर आए लहरें यमुना नदी की।

तब खोलकर देखो, बहुत बातें हैं इसमें अनकही।
तू समझ लेगा मैं हूँ राधा तेरे प्रेम की बावरी।

कृष्ण का प्रत्युत्तर
राधा, मेरी प्रिया, पता है तू रो रही होगी,
पर यकीन है तुम जानती हो गलती नहीं मेरी।
देवकी माँ के कहने पर मैं वापस आया नहीं,
मगर दिल की हर जगह याद है तेरी।

मुरली लेकर सिर्फ़ बजाई तुम्हारे लिए।
सच कहूँ गुंजित हैं वह आवाज़ दिल में।
हाँ, मैं पास तो नहीं, पर मैं हूँ न तेरे मन में?
तू यशोदा माँ सँभालेगी, यकीन मुझे तुझ पे।

वादा हर पल याद में रखना मेरी राधा।
वक़्त सब कुछ सुलझा देगा, इंतज़ार करना।
लोग जब बातें बनाएँ, तू तब बहरी बनना।
हमारे प्रेम की परिभाषा उन्हें समझा देना।

अगर होता पता वेदना है हमारा मिलन।
मैं कभी न आता रहने के लिए गोकुल।
क्या करें मेरी राधा ऐसा है ही हमारा भाग्य।
तू रोना मत मैं हवा में बिठाके भेजूँ मेरा प्यार।

मैं अधीर हूँ
(होली की रात श्री कृष्ण का रुक्मिणी से संवाद)

शैलजा सक्सेना
ओकविल, कनाडा

आज फाग की रात प्रिय, मैं अधीर हूँ!
उससे दूर, माथ का जिसके अबीर हूँ!!

वह कर पल्लव कहाँ, लाल गुलाल लगाते
पिचकारी की धार बहाने हम मिल जाते,
हवा फागुनी मदन जगा, बहा ले जाती
गहन प्रेम के स्रोत हृदय में, खुल-खुल जाते!

बींधा प्रिय का हिय स्वयं, मैं वही तीर हूँ!
आज फाग की रात प्रिय मैं अधीर हूँ!!

मृदंग-थाप की छाप हृदय पर पड़ती है,
भरी नगरिया, यह मुझ को सूनी लगती है
आज स्वर्ण की पिचकारी, पर रंग नही है
रहा अधूरा कृष्ण, जो राधा संग नहीं है!

सागर तल में जो उमड़े अथाह, मैं वही पीर हूँ
आज फाग की रात प्रिय मैं अधीर हूँ!!

नहीं भुलाना चाह रहा वह मीठा सपना
मेरे मन से अनजान, वह मेरा इतना अपना
आँसू से जीवन आँचल पर कथा लिख रही,
जान रहा हूँ जीवन भर हमको है तपना!

उसकी आँखों जो टपका, मैं वही नीर हूँ
आज फाग की रात, प्रिय मैं अधीर हूँ!!

आज फाग की रात प्रिय, मैं अधीर हूँ!
उससे दूर, माथ का जिसके अबीर हूँ!!

राधा की वेदना

शिवप्रकाश अग्रवाल
वडोदरा, भारत

मोहन तेरी
मोकू याद सतावे
ओ बनवारी

चीर चुराए
जमुना तट पर
सीख सिखाए

खेली थी होली
भर के पिचकारी
रंग दी झोली

माखन चोरी
मैया रोक न पायी
लीला है तोरी

मटकी फोड़ी
पनघट पे तेने
अँखिया मोड़ी

रास रचायो
संग बरसाने में
खूब नचायो

झूले थे झूला
कदम्ब की डरिया
ओ नंदलाला

बंसी धुन पे
सब बस में कीन्हे
मोहन प्यारे

खूब सतायो
कान्हा खूब लुभायो
मन कू भायो

रह न पाऊँ
मोय याद सताबे
कहाँ मैं जाऊँ

कवि सूची

अनिता कपूर	18, 92	डी.पी. सिनालि नदीपमा पतिरण	178
अनुजीत इकबाल	114, 115	दिगम्बर नासवा	33
अभिनव शुक्ल	122	नमिता सिंह 'आराधना'	83
अर्चना प्रकाश	22, 57	निरुपमा मेहरोत्रा	38, 136
अलका प्रमोद	102,	निरुपमा राय	85
	123, 164	नूपुर अशोक	19
आभा सिंह	159		
आर. के. प्रजापति ‘साथी’	111	पुष्प लता शर्मा	24, 79
आरती ‘लोकेश’	45, 48,	पुष्पारानी गर्ग	29
	167	पूजा लाल	41
आराधना झा श्रीवास्तव	104, 176	पूनम चन्द्रा 'मनु'	119, 121
आशा मोर	81	पृथ्वी सिंह बैनीवाल	78
आशीष कुमार यादव	25	प्रतिभा पुरोहित	9, 101
उर्मिला चौधरी	55	प्रतिभा सक्सेना	116
उषा अवस्थी	95, 140	प्राची पाठक	158
उषा मेहरा	40, 143	प्रियंका पारो मोहन	112
ओमप्रकाश गुप्ता	2, 94,	प्रीति गोविन्दराज	36
	153	बशीर अहमद मयूख	32
		मंजु सिंह	50, 65
कंचन पाठक	70, 71	मंजुला चतुर्वेदी	125
करुणा पांडे	73, 75	मञ्जरी पाण्डेय	154, 155
कलणि विहंगा पनागॉड	31	मधु खन्ना	28, 145
काजरी गुहा	146	मधु चतुर्वेदी	156, 175
कैलाश गिरि गोस्वामी	93, 151	मनीष अरोड़ा ‘अश्क’	149
कौशल किशोर श्रीवास्तव	77, 118	ममता मिश्रा	110
गोपाल कृष्ण भट्ट 'आकुल'	53, 67	महेश चंद्र द्विवेदी	27
गौरीशंकर वैश्य विनम्र	86	माया बंसल	34, 169
		मोती प्रसाद साहू	138
चित्र भूषण श्रीवास्तव "विदग्ध"	8, 26	मोहनदास वैष्णव	39
चित्रा गुप्ता	132, 133	यशवीर सिंह	60
जगदीश व्योम	113	यूरी बोत्वींकिन	37

राकेश कुमार चौबे 12
राकेश खंडेलवाल 7, 80
राजेन्द्र स्वर्णकार 148
राजेश कुमार मिश्रा 89, 90
रामकृपाल 'कृपाल' 126, 127
रीता पाण्डेय 106, 177
रुचि श्रीवास्तव 16, 144
रेखा राजवंशी 63, 171
रेणु चन्द्रा माथुर 10, 69

लता अग्रवाल 107
विजय गिरि गोस्वामी 'काव्यदीप' 84, 142
विजयानन्द 14
विनय विक्रम सिंह 'मनकही' 166
विनीता मिश्रा 47, 61, 62
विवेक रंजन श्रीवास्तव 35
वीणा अग्रवाल 17, 129
वेद व्यथित 4

शशि जैन 103
शशि पाधा 124, 139
शार्दुला नोगजा 76, 137
शालिनी गर्ग 20
शिवप्रकाश अग्रवाल 181
शीतल जैन "अहमक लड़की" 150
शीला शर्मा 91
शैल अग्रवाल 68, 72, 161
शैलजा सक्सेना 180
श्याम बहादुर श्रीवास्तव ‘श्याम’ 88
संगीता अग्रवाल 23, 170
सतीश चतुर्वेदी ’शाकुन्तल’ 11
सन्तोष कुमार प्रजापति 'माधव' 30, 152
सन्तोष भाऊवाला 43, 109
सरस्वती मल्लिक 131
सरिता तोतला 160
सरोज अग्रवाल 141
सीमा हरि शर्मा 66
सुरेशचन्द्र शुक्ल 'शरद आलोक' 135
सुशील शर्मा 97, 172
सुषमा सौम्या 130
सूर्यकांत सुतार ‘सूर्या’ 128
सोमनाथ बी डनायक 165
स्वरांगी साने 58
हरिवल्लभ शर्मा 'हरि' 54, 163
हरिहर झा 6, 134, 168
हेम चन्द्र तिवारी 147

कृष्ण काव्य पीयूष

धरती पर ईश्वर के आठवें अवतार श्री कृष्ण, मानव मन और प्रकृति के सबसे समीप भी हैं और सबसे दुरूह भी। उनके विभिन्न रूप एक ओर सहज, सरल और ग्राह्य प्रतीत होते हैं तो वहीं दूसरी और उनके गूढ़ संदेश, ज्ञान, अध्यात्म और जीवन दर्शन के रहस्यों का अथाह सागर हैं। भगवान कृष्ण की विविध लीलाओं से प्रेरित होकर अनगिनत लेखकों और कवियों ने अपनी-अपनी मति के अनुसार विविध भाषाओं में उनकी कथा का वर्णन किया है। सूरदास और मीरा जैसे अनेक कृष्ण-भक्तों से प्रेरणा लेकर वर्तमान युग में भी कविगण अपनी-अपनी मति के अनुसार श्री कृष्ण से संबंधित रचनाएँ करते रहते हैं। यह काव्य संग्रह 'कृष्ण काव्य पीयूष' ऐसी ही 151 कविताओं का संकलन है, जो आप के करकमलों में प्रस्तुत है।

कृष्ण काव्य पीयूष विश्व के 16 देशों (ऑस्ट्रेलिया, कनाडा, भारत, मलेशिया, नीदरलैंड्स, नॉर्वे, ओमान, कतर, सिंगापुर, श्री लंका, तंज़ानिया, त्रिनिदाद एण्ड टोबागो, यूनाइटेड किंगडम, यू.ए.ई., युक्रैन और यू.एस.ए.) में बसे 101 कवियों द्वारा लिखी कविताओं का संकलन है। इन 151 कविताओं में से 59 भारत से बाहर विदेशों मे बसे कृष्ण-प्रेमियों द्वारा लिखी गईं हैं, जो संकलन का करीब 40% है। इससे यह बात तो सिद्ध होती है कि कृष्ण-कथा मात्र भारत की ही नहीं अपितु विश्वव्यापी है। यह विशेष हर्ष की बात है जहाँ आज विश्व में धर्म को लेकर अनर्थक वाद-विवाद हो रहा है, वहाँ अन्य धर्म के कवियों ने भी इस संग्रह में अपनी-अपनी कविताएँ भेजीं, हम उनके विशेष आभारी हैं। निस्संदेह, कृष्ण किसी एक धर्म विशेष के नहीं अपितु सबके प्रिय हैं।

इन कविताओं के चयन और संकलन की प्रक्रिया में जिस श्रद्धा, भक्ति तथा आनंद के भाव से हम गुजरे हैं, आशा है कि वही भाव पुस्तक पढ़ने के बाद पाठकों में भी स्पंदित होंगे। कृष्ण काव्य पीयूष को आपके हाथ में सौंपते हुए अपार हर्ष की अनुभूति के साथ हम आशा करते हैं कि सुधीगण अपने विचारों से हमें अवगत कराएँगे।

US $12.00

ISBN 978-1-7362088-3-0

9 781736 208830